स्तोत्रादिसंग्रहः

यह संग्रह आषाढ शु।।१, शके १८७४(इ.स.१९५२) को प्रातःस्मरणीय प.पू. श्रीगुलवणीमहाराजजी ने वासुदेवानंद सरस्वती ग्रंथमाला के द्वितीय पुष्प के रूप में प्रकाशित किया। इस में श्रीस्वामीमहाराज के रचित विवध देवताओं के, तीर्थक्षेत्रों के संस्कृत और प्राकृत स्तोत्रों के साथ श्रीदत्तात्रेयषोडशावतार, सत्यदत्तव्रत, अभंग, पदसमूह, नित्यभजनक्रम, आरतिसंग्रह, आरतिसंग्रह आदि स्वामीमहाराजजी का उपलब्ध संकीर्ण वाङ्मय का भी संकलन किया गया है। यह अनेक वर्षों से पुस्तकरूप में उपलब्ध नही है। इस के कोई अंश स्वतंत्र पुस्तकरूप में अवश्य संस्करित हुए हैं और कहीं कहीं उपलब्ध हैं। यहाँ पर इन सब का संग्रह करने का प्रयास किया जा रहा है।

समंत्रक(मंत्रगर्भ)स्तोत्र वह होता है जिस में प्रत्येक श्लोक का विशिष्ट अक्षर(प्रथम, तृतीय,पंचम) क्रम से जोड कर पढने से विविध देवताओं का मंत्र पाया जाता है। श्रीमहाराज के अनेक स्तोत्र समंत्रक हैं। यहाँ ऐसे स्तोत्रों को तारका (*) चिह्न से अंकित किया है। इन के प्रस्तुति में इन मंत्रों को स्पष्ट करते हुए भी स्तोत्र के अर्थ को समझने में कठिनाई न हो ऐसा प्रयास किया है। इस विषय दर्शकों की सूचनाओं का स्वागत है।

स्तोत्र भक्तिमार्ग का एक प्रभावी साधन है। परमात्मा को स्तोत्रप्रिय कहा गया है। स्तवनसेहि गजेंद्र, पुष्पदंत आदि भक्तों ने अपने इष्ट का प्रसाद पाया है। इसी कारण श्रीमहाराज ने विपुल स्तोत्ररचना के द्वारा यह भक्ति का पथ विशाल और सुगम बनाया है। श्रीमहाराज के स्तोत्र काव्यगुणों से परिपूर्ण होने के साथ ईशप्रसादकारक भी हैं। इन के अनुष्ठान से अनेकानेक भक्त-साधक जनों ने इष्टसिद्धि के साथ चित्तशुद्धि का भी लाभ सरल ही प्राप्त किया है, भविष्य में भी करेंगे। हमारा यह प्रयास यदि कोई साधक-भक्त के यत्किंचिदपि उपयुक्त सिद्ध हुआ तो वह श्रीदत्तप्रभु की कृपा होगी।

१.

श्रीविनायकस्तोत्रम् (समंत्रकम्)

वारणास्यो दरघ्नोऽर्थ्य एकदंतश्शिवात्मजः।।
सुशर्मकृत्तारकोऽर्च्यः कलिस्तत्पुरुषप्रियः ।।१।।
देवः पवित्रेक्षणोद्यो दंती चारुस्त्रिलोचनः ।।
वाग्मीशो मायातीतात्मा तापशोषाख्य आखुगः ।।२।।
नंदीवंद्यो यमीशानो यशस्वी यशआस्पदः ।।
दर्शनीयो विघ्नराजो विघ्नहा विघ्नकृद्विराट् ।।३।।
सभ्यो हृत्पद्मनिलयोऽद्मरसद्मविहापकः ।।
रक्तांगोऽर्को हेममाली हेरंबो हेमदंष्ट्रकः ।।४।।
स्वराट्प्रभा अजोऽनंतो वरेण्यो मतिमान्गुणी ।।
तीर्थकीर्तिर्वरकरः क्रत्वीशो हापितासुरः ।।५।।
कृपाकरो धूमकेतुस्तुंदिलो देववल्लभः ।।
तपस्वीशस्तापहरो डाकिनीवारितोभयः ।।६।।
विश्वप्रियो यक्षवंद्यो यष्टानयविवर्धनः ।।
नानारूपो धीर आद्यो धीमतांधीरकःसुधीः ।।७।।
यमीश्वरो महाहस्ती महात्मा मह उत्तमः ।।
कर्ताऽकर्ता हितकरो हितज्ञो हितशासनः ।।८।।
स्तोता स्तव्यस्तंत्रमूलस् तंत्रज्ञस्तंत्रविग्रहः ।।
त्रयीवंद्यो नोदनाद्यो नोदना नोदित द्विजः ।।९।।
मित्राभो मदनस्मेरो दंती मरुदुपासितः ।।
दंडो प्रमत्तः शास्तार्यस्तीर्थमिंद्रः स्तुतोऽघहा।।१०।।
सत्यसंधः प्रकाशात्मा प्रसन्नः प्रणतार्तिहा ।।
मंत्रविद्या चोदितात्मा चोदना चोदिताखिलः।।११।।
त्रयीधर्मो दशातीतो दक्षोऽभेद उमासुतः ।।
कं नः स देयात्प्रणुतो यात्स पायात्सदा भयात्।।१२।।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं समंत्रकं विनायकस्तोत्रं संपूर्णम्।।

श्रीविनायकस्तोत्रम् (समंत्रकम्)

वा	रणास्यो	द	रघ्नोऽर्थ्य	ए	कदं	त	श्शिवात्मजः।।
सु	शर्मकृ	त्ता	रकोऽर्च्यः	क	लिस्त	त्पु	रुषप्रियः।।१।।
दे	वः पवि	त्रे	क्षणोद्यो	दं	ती चा	रु	स्त्रिलोचनः ।।
वा	ग्मीशो मा	या	तीतात्मा	ता	पशो	षा	आखुगः ।।२।।
नं	दीवंद्यो	य	मीशानो	य	शस्वी	य	शआस्पदः ।।
द	र्शनीयो	वि	घ्नराजो	वि	घ्नहा	वि	घ्नकृद्विराट्।।३।।
स	भ्यो हृत्प	द्म	निलयोऽ	द्म	रस	द्म	विहापकः ।।
र	क्तांगोऽर्को	हे	ममाली	हे	रंबो	हे	मदंष्ट्रकः ।।४।।
स्व	राट्प्रभा	अ	जोऽनंतो	व	रेण्यो	म	तिमान्गुणी ।।
ती	र्थकीर्तिर्	व	रकरः	क्र	त्वीशो	हा	पितासुरः ।।५।।
कृ	पाकरो	धू	मकेतुस्	तुं	दिलो	दे	ववल्लभः ।।
त	पस्वीशस्	ता	पहरो	डा	किनी	वा	रितोभयः ।।६।।
वि	श्वप्रियो	य	क्षवंद्यो	य	ष्टान	य	विवर्धनः ।।
ना	नारूपो	धी	र आद्यो	धी	मतां	धी	रकःसुधीः ।।७।।
य	मीश्वरो	म	हाहस्ती	म	हात्मा	म	ह उत्तमः ।।
क	र्ताऽकर्ता	हि	तकरो	हि	तज्ञो	हि	तशासनः ।।८।।
स्तो	ता स्तव्यस्	तं	त्रमूलम्	तं	त्रज्ञस्	तं	त्रविग्रहः ।।
त्र	यीवंद्यो	नो	दनाद्यो	नो	दना	नो	दित द्विजः।।९।।
मि	त्राभो म	द	नस्मेरो	दं	ती म	रु	दुपासितः ।।
दं	डो प्रम	त्तः	शास्तार्यस्	ती	र्थमिं	द्रः	स्तुतोऽघहा।।१०।।
स	त्यसंधः	प्र	काशात्मा	प्र	सन्नः	प्र	णतार्तिहा ।।
मं	त्रविद्या	चो	दितात्मा	चो	दना	चो	दिताखिलः।।११।।
त्र	यीधर्मो	द	शातीतो	द	क्षोऽभे	द	उमासुतः ।।
कं	नः स दे	यात्	प्रणुतो	यात्	स पा	यात्	सदा भयात्।।१२।।

२
।। गीतिपूर्वं श्रीगणपतिस्तोत्रम् ।।

सुमुख प्रथम स्वनामगायकपालक सेवकमंगलकारक।
कामसुपूरक मंगलकारक, त्राहि विनायक भाविकतारक ।।१।।
सिंदूरलेपक मोदकभक्षक, दुर्जनशिक्षक निजजनवीक्षक।।
अंकुशधारक जगदुद्धारक, लोकविधारक संहारकारक ।।२।।
अशेषकारक शक्तिविधारक, मूषकवाहक सुरदरदाहक।।
कलौ सुतारक त्वं हि विनायक, पालक सेवकमखिलाकहारक।।३।।
करुणारससंपूर्णकटाक्षामलवीक्षणैः।
योऽनुगृह्णाति भक्तान्स प्रसन्नः सुमुखः स्मृतः ।।४।।
ये परित्यज्य विहितं निषिद्धं प्रचरन्ति ते।
वक्रास्तानतुण्डत्येष वक्रतुण्डः प्रकीर्तितः ।।५।।
प्रथमं मंगलायैव गणेशः स्मर्यते बुधैः।
सर्वदेवार्चितत्वात्स गणेशः प्रथमः स्मृतः ।।६।।
स्मरणान्निजभक्तानां सर्वविघ्नान्निवार्य यः।
कामान् पूरयति क्षिप्रं गणेशः कामपूरकः ।।७।।
निवार्यामंगलान्याशु स्मरणाद्गणनायकः।
करोति मंगलान्येष ततो मंगलकारकः ।।८।।
इंद्रादीनां तु देवानां विविधा नायकाः खलु।
न नायको गणेशस्य कोऽप्यतोऽसौ विनायकः ।।९।।

इति श्री.प.प. श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं गीतिपूर्वं गणपतिस्तोत्रं संपूर्णम्

३
समंत्रकं श्रीगणपतिस्तोत्रम्

नमो गणपतये तुभ्यं ज्येष्ठ ज्येष्ठाय ते नमः ।।
स्मरणाद्यस्य ते विघ्ना न तिष्ठन्ति कदाचन ।।१।।
देवानां चापि देवस्त्वं ज्येष्ठराज इति श्रुतः ।।
त्यक्त्वा त्वामिह कः कार्य-सिद्धिं जंतुर्गमिष्यति।।२।।
स त्वं गणपतिः प्रीतो भव ब्रह्मादिपूजित ।।

चरणस्मरणात्तेऽपि ब्रह्माद्या यशस्विनः ।।३।।
परा परब्रह्मदाता सुराणां त्वं सुरो यतः।।
सन्मतिं देहि मे ब्रह्म-पते ब्रह्मसमीडित ।।४।।
उक्तं हस्तिमुखश्रुत्या त्वं ब्रह्म परमित्यपि ।।
कृतं वाहनमाखुस्ते कारणन्त्वत्र वेद नो ।।५।।
इयं महेश ते लीला न पस्पर्श यतो मतिः ।।
त्वां न हेरंब कुत्रापि परतन्त्रत्वमीश ते ।।६।।
स त्वं कवीनां च कविर्देव आद्यो गणेश्वरः ।।
अरविंदाक्ष विद्येश प्रसंनः प्रार्थनां शृणु ।।७।।
त्वमेकदन्त विघ्नेश देव शृण्वर्भकोक्तिवत् ।।
सत्कवीनां मध्य एव नैकाण्वंश कविं कुरु ।।८।।
श्रीविनायक ते दृष्ट्या कोपि नूनं भवेत्कविः ।।
तं त्वामुमासुतं नौमि सन्मतिप्रद कामद ।।९।।
ममापराधः क्षन्तव्यो नतिभिः संप्रसीद मे।।
न नमस्यविधिं जाने त्वं प्रसीदाद्य केवलं ।।१०।।
न मे श्रद्धा न मे भक्तिर्न त्वदर्चनपद्धतिः।।
ज्ञाता वदान्य ते स्मीति ब्रुवे साधनवर्जितः ।।११।।
कर्तुं स्तवं च तेऽनीशः प्रसीद कृपयोद्धर ।।
प्रणामं कुर्वेऽतोऽनेन सदानंद प्रसीद मे ।।१२।।

इति श्री. प.प. श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं समंत्रकं श्रीगणपतिस्तोत्रं संपूर्णम्।।

नमो	ग	णपतये तुभ्यं ज्येष्ठ	ज्ये	ष्ठाय ते नमः ।।
स्मर	णा	द्यस्य ते विघ्ना न ति	ष्ठ	न्ति कदाचन।।१।।
देवा	नां	चापि देवस्त्वं ज्येष्ठ	रा	ज इति श्रुतः ।।
त्यक्त्वा	त्वा	मिह कः कार्य-सिद्धिं	जं	तुर्गमिष्यति ।।२।।
स त्वं	ग	णपतिः प्रीतो भव	ब्र	ह्मादिपूजित ।।
चर	ण	स्मरणात्तेऽपि ब्र	ह्मा	द्या यशस्विनः ।।३।।
परा	प	रब्रह्मदाता सुरा	णां	त्वं सुरो यतः।।
सन्म	तिं	देहि मे ब्रह्मपते	ब्र	ह्मसमीडित ।।४।।
उक्तं	ह	स्तिमुखश्रुत्या त्वं ब्र	ह्म	परमित्यपि ।।
कृतं	वा	हनमाखुस्ते कार	ण	न्त्वत्र वेद नो ।।५।।
इयं	म	हेश ते लीला न प	स्प	र्श यतो मतिः ।।
त्वां न	हे	रंब कुत्रापि पर	त	न्त्रत्वमीश ते ।।६।।
स त्वं	क	वीनां च कवि-र्देव	आ	द्यो गणेश्वरः ।।
अर	विं	दाक्ष विद्येश प्रसं	नः	प्रार्थनां शृणु ।।७।।
त्वमे	क	दन्त विघ्नेश देव	शृ	ण्वर्भकोक्तिवत् ।।
सत्क	वी	नां मध्य एव नैका	ण्वं	श कविं कुरु ।।८।।
श्रीवि	ना	यक ते दृष्ट्या कोपि	नू	नं भवेत्कविः ।।
तं त्वा	मु	मासुतं नौमि सन्म	ति	प्रद कामद ।।९।।
ममा	प	राधः क्षन्तव्यो नति	भिः	संप्रसीद मे।।
न न	म	स्यविधिं जाने त्वं प्र	सी	दाद्य केवलं ।।१०।।
न मे	श्र	द्धा न मे भक्तिर्न त्व	द	र्चनपद्धतिः।।
ज्ञाता	व	दान्य ते स्मीति ब्रुवे	सा	धनवर्जितः ।।११।।
कर्तुं	स्त	वं च तेऽनीशः प्रसी	द	कृपयोद्धर ।।
प्रणा	मं	कुर्वेऽतोऽनेन सदा	नं	द प्रसीद मे ।।१२।।

४.

श्रीगणपतिस्तोत्रम्.

द्विरदानन विघ्नकाननज्वलन त्वं प्रथमेशनंदन।
मदनपतिमाखुवाहन ज्वलनाभासितपिंगलोचन ।।१।।
अहिबंधन रक्तचंदन प्रियदूर्वाङ्कुरभारपूजन।।
शशिभूषण भक्तपालन ज्वलनाक्षाऽव निजान्निजावन।।२।।
विविधामरमर्त्यनायकः प्रथितस्त्वं भुवने विनायकः ।।
तव कोऽपि हि नैव नायकस्तत एव त्वमजो विनायक।।३।।
बलिनिग्रह ईश केशवस्त्रिपुराख्यासुरनिग्रहे शिवः।।
जगदुद्भवनेऽब्जसंभवः सकलान्जेतुमहो मनोभवः ।।४।।
महिषासुरनिग्रहे शिवा भवमुक्त्यै मुनयो धृताशिवाः।।
यमपूजयदिष्टसिद्धये वरदो मे भव चेष्टसिद्धये ।।५।।
गजकर्णक मूषकस्थिते वरदे त्वय्यभये हृदि स्थिते।।
जयलाभरमेष्टसंपदाः खलु सर्वत्र कुतो वदापदाः ।।६।।
संकल्पितं कार्यमविघ्नमीश द्राक्सिद्धिमायातु ममाखिलेश।।
पापत्रयं मे हर सन्मतीश तापत्रयं मे हर शांत्यधीश ।।७।।
गणाधीशो धीशो हरिहरविधीशोऽभयकरो
गुणाधीशो धीशो विजयत उमाहृत्सुखकरः।
बुधाधीशो नीशो निजभजकविघ्नौघहरको
मुदाधीशो पीशो यशस उभयर्धेश्च शरणम्।।८।।

।। इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं गणपतिस्तोत्रं संपूर्णम्।।

५.
।। श्रीसरस्वतीस्तोत्रम् ।।

हृद्वक्षस्थितविद्रुमाधिकमदा त्रीशस्य या स्फूर्तिदा
मालापुस्तकपद्मभृच्च वरदा या सर्व भाषास्पदा।।
या शंखस्फटिकर्क्षनाथविशदा या शारदा सर्वदा।
प्रीता तिष्ठतु मन्मुखे सुवरदा वाग्जाड्यदा सर्वदा ।।१।।
यस्यास्त्रीणी गुहागतानि पदान्येकं त्वनेकेडितं
स्तोतुं तां निगमेडितां बुधकुलं जातं त्वलं व्रीडितम्।
ब्रह्माद्या अपि देवता नहि विदुर्यस्याः परं क्रीडितं
प्रारब्धात्र नुतिर्मयेव रुरुणा शार्दूलविक्रीडितम् ।।२।।
अयि सर्वगुहास्थितेऽजिते, मयि तेपांगदृगस्तु पूजिते।।
त्वदृते नहि वागधीश्वरि, व्यवहारोऽपि परमेश्वरि ।।३।।
समयोचितवाक्प्रदे मुदे विदुषां संसदि वादिवाददे।।
मयि मातरशेषधारणा दयितेऽजस्य सदास्तु तारणा।।४।।
यद्धस्ते कमलं च तत्र कमला लीलाविहारी हरि-
स्तस्याः संनिकटेऽस्य नाभिकमले स्याल्लोकमूले विधिः।।
वेदा भेदभिदो मुखेषु च विधेर्ये स्वप्रमाणा नृणां
तेभ्यो यज्ञविधिस्ततोऽमरगणा जीवन्ति सा पातु वाक् ।।५।।
नमो नमस्तेऽस्तु महासरस्वति
प्रसीद मातर्जगतो महस्वति।।
परेशि वाग्वादिनि देवि भास्वति
प्रकाशके तेऽस्तु नमो यशस्वति ।।६।।
त्रिषष्टिवर्णाऽऽशुगयुक्परा या
भूत्वाथ पश्यंत्यभिधाथ मध्या।।
स्थानप्रयत्नादिवशान्मुखे च
या वैखरीति प्रणमामि तां गाम् ।।७।।
त्वं ब्रह्मयोनिरपरा सरस्वति परावरा।।
साक्षात्स्वभक्तहृत्संस्थे प्रसीद मतिचेतने ।।८।।
सरस्वतीस्तुतिमिमां वासुदेवसरस्वती।।
चक्रे यमनुजग्राह नरसिंहसरस्वती ।।९।।

इति श्रीं.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीसरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम्.

६.
सरस्वतीस्तोत्रम्

जुषस्व बालवाक्यवत्स्तवं ममांब भारती।।
असत्सदप्यदस्त्वयि भ्रमाद्विभाति केवले ।।१।।
क्षराक्षरात्परं हि यत्त्वमेव तत्पदं ध्रुवम्।।
जले यथोर्मिबुद्बुदास्तथा त्वयीशजीवदृक् ।।२।।
त्र्यधीश ॐकृतेऽखिलं त्वमेव चास्य मंगलम्।।
यदर्धमात्रमूर्जितं क्रियाविकारवर्जितम् ।।३।।
त्रिसप्तयागसाधिके सुभुक्तिमुक्तिदायके।।
स्वरार्णकारणे स्तवः स्वयं नु कैः कृतस्तव ।।४।।
प्रकाशकप्रकाशके श्रुतिश्रुतादिधारके।।
त्वमेव सर्वकारणं त्वमेव सर्वतारणम् ।।५।।
सुशक्तभक्तभावितं हि तेन सर्वथा ततम्।।
तदेव धाम ते वरं यदीक्ष्यते बुधैः परम् ।।६।।
स्थिराश्चराश्च गोचराः परत्र चात्र वाऽम्ब ये।।
त्वदेव तत्समागमः प्रमाणमत्र चागमः ।।७।।
नमोऽस्तु ते सरस्वति ध्यवित्रि वाजिनीवति।।
प्रसीद बुद्धिचेतने स्वभक्तहृन्निकेतने ।।८।।
स्तुतैवं विष्णुजिह्वा सा प्रसन्ना सूनृतेरका।।
प्राहाविष्कृत चात्मानं तुष्टास्मि वरयेप्सितम् ।।९।।
सकंबलस्य कुरु मे सहायं शंभुगायने।।
सुस्वरत्वादि यच्छेति ययाचेऽहिः सरस्वतीम् ।।१०।।
वागीशाहोभयोरस्तु दिव्यनादरहस्यमित्।।
स्तोत्रं चास्तु स्खलद्गीष्ट्वधीजाड्यादिहरं त्विदम्।।११।।

इति कंबलाश्वतरस्तुतिमिषेण कृता
सरस्वतीस्तुतिर्वासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता संपूर्णा.

पंचायतनमाहात्म्यानि

७.

गणेशस्य

निर्विघ्नार्थं हरीशाद्या देवा अपि भजन्ति यम्।
मर्त्यैः स वक्रतुण्डोऽर्च्य इति गाणेशसंमतम् ।।१।।
जगत्सृष्ट्यादि हेतुः सा वरा श्रुत्युक्तदेवता।।
गणानां त्वेति मंत्रेण स्तुता गृत्समदर्षिणा ।।२।।
इत्युक्तं तत्पुराणेऽतो गणेशो ब्रह्मणस्पतिः।।
महाकविर्ज्येष्ठराजः श्रूयते मंत्रकृच्च सः ।।३।।
मंत्रं वदत्युक्थमेष प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिः।।
यस्मिन्निन्द्रादयः सर्वे देवा ओकांसि चक्रिरे ।।४।।
स प्रभुः सर्वतः पाता यो रेवान्यो अमीवहा।।
अतोऽर्च्योऽसौ यश्चतुरो वसुवित्पुष्टिवर्धनः ।।५।।
वक्रतुंडोऽपि सुमुखः साधोगन्तापि चोर्ध्वगः।।
येऽमुं नार्चन्ति ते विघ्नैः पराभूता भवन्ति हि ।।६।।
ये दूर्वांकुरलाजाद्यैः पूजयन्ति शिवात्मजम्।।
ऐहिकामुष्मिकान्भोगान्भुक्त्वा मुक्तिं व्रजन्ति ते।।७।।

८.

सूर्यस्य

यस्योदयास्तसमये शिवाद्या अपि चाञ्जलिं।।
बध्नन्ति विश्वसाक्षी स प्रत्यक्षः श्रूयते रविः ।।१।।
यदधीना कालगतिर्यदधीनाः क्रियाः समाः।।
यन्मंत्रेण द्विजत्वाप्तिर्यन्मंत्रेण कृतार्थता ।।२।।
लौकिक्यपि व्यवहृतिर्यत्प्रसादात्प्रवर्तते।।
स्मर्यतेऽस्माद्विश्वसृष्टिः सवितुः श्रूयतेऽपि च ।।३।।
जगतस्तस्थुषश्चात्मा सूर्यस्तं बहुधा जगुः।।
मूर्तामूर्तं जगत्सर्वं प्राणापानात्मकं श्रुतम् ।।४।।
प्राणः सूर्योऽपरश्चन्द्रस्तयोः सर्वं प्रतिष्ठितं।।
श्रीसूर्यकिरणावेशाच्चन्द्रस्यापि च चन्द्रता ।।५।।

अतश्चन्द्रो न भिन्नोऽस्मात्स सूर्यः सकलात्मकः।।
यं विना जगदान्ध्यं हि स देवः कैर्न पूज्यते ।।६।।
तमोऽमुं ग्रसतीत्येष दृष्टवादो न तात्त्विकः।।
तस्माद्भक्तेष्टदो देवो वरोऽर्कश्चापराजितः ।।७।।

९.
सूर्यस्तोत्रम्.

स्फोटककुष्ठमुखार्तिहरो हृद्रोगहरोऽघहरोऽरिहरो हृत्।।
मामकमाशु विशोध्य विवस्वान् पात्वतनुस्त्रितनुः स हि भास्वान्।।१।।
ध्येय इनः सविता स च सन्मतिदो गतिदो वरभावः।।
भर्ग इदं वपुरस्य वरेण्यं तिष्ठतु मे हृदयेऽमितपुण्यम् ।।२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितसूर्यस्तोत्रं संपूर्णम्.

१०.
शंकरस्य

ईशावास्यमिदं सर्वं चक्षोः सूर्यो अजायत।।
इति श्रुतिरुवाचातो महादेवः परावरः ।।१।।
अष्टमूर्तैरसौ सूर्यो मूर्तित्वे परिकल्पितः।।
नेत्रं त्रिलोचनस्यैकमसौ सूर्यस्तदाश्रितः ।।२।।
यस्य भासा सर्वमिदं विभातीति श्रुतेरिमे।।
तमेव भान्तमीशानमनुभान्ति खगादयः ।।३।।
ईशानः सर्वविद्यानां भूतानां चेति च श्रुतेः।।
वेदादीनामप्यधीशः स ब्रह्मा कैर्न पूज्यते ।।४।।
यस्य संहारकाले तु न किञ्चिदवशिष्यते।।
सृष्टिकाले तु पुनः सर्वं स एकः सृजति प्रभुः ।।५।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।।
इतिश्रुतेर्महादेवः श्रेष्ठोऽर्च्यः सकलार्चितः ।।६।।
विश्वं भूतं भवद्भव्यं सर्वं रुद्रात्मकं श्रुतम्।।
मृत्युंजयस्तारकोऽतः स यज्ञस्य प्रसाधनः ।।७।।
विषमाक्षोऽपि समदृक्साशिवोऽपि शिवः स च।।

वृषसंस्थोऽप्यतिवृषो गुणात्माप्यगुणोऽमलः ।।८।।
यदाज्ञामुद्वहन्त्यत्र शिरसा सासुराः सुराः।।
अन्नं वातो वर्ष इतीषवो यस्य स विश्वपाः ।।९।।
भिषक्तमं त्वां भिषजां शृणोमीति श्रुतेरयं।।
स्वभक्तसंसारमहारोगहर्तापि शंकरः ।।१०।।

११.

शक्तेः

शिवोऽपि शक्तियुक्तश्चेत्प्रभुः कार्याय नान्यथा।।
स्वमायया विनेशस्य परस्यानुभवात्मनः ।।१।।
न घटेतार्थसंबंधस्ततो माया परावरा।।
यस्याः प्रभावं प्रवक्तुं ब्रह्माद्या अप्यलं बलम् ।।२।।
वैष्णवीयं महामाया सुरासुरमुनिस्तुता।।
शय्यां देवमयीं कृत्वा शेतेऽसाविति गीयते ।।३।।
सर्वे देवाश्च मुनयो विषमे यां स्तुवन्ति हि।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां हेतुरेका सनातनी ।।४।।
विदुषोऽपि हठाच्चेतो महामोहाय यच्छति।।
अभक्तानां बन्धहेतुर्भक्तानां मुक्तिदा च सा ।।५।।
सर्वेष्वपि हि भूतेषु चेतनेत्युच्यते ततः।।
स्वात्मारामो शिवोऽप्यत्र रत्यर्थमनुधावति ।।६।।
माया चतुष्कपर्दाऽसौ युवतिर्नित्यनूतना।।
सुपेशा च घृतास्यादौ वस्तेस्य वयुनान्यपि ।।७।।
भक्तिश्रद्धाधृति-हीश्रीधीमेधाद्यैश्च सत्सु या।।
तृष्णालक्ष्याऽऽर्तिभीनिद्रातन्द्रारूपैरसत्सु च ।।८।।
क्षणे क्षणे विमुह्यन्ति वशिनोऽप्यत्र योगिनः।।
सैषानिर्वचनीयाच्यर्या या ह्यनादिरजा श्रता ।।९।।

१२.
विष्णोः

विष्णोर्हास्यमसौ माया तदाधारा जडाधमा
प्रध्वंसोऽस्या अनादेश्च विष्णोः पदविलोचनात्।।१।।
देवानां परमो विष्णुरवमोऽग्निरिति श्रुतेः।।
अयं विष्णुरजोऽनादिरनन्तो विश्वकारणः ।।२।।
सूरयस्तत्पदं श्रेष्ठं सदा पश्यन्ति नेतरे।।
वीर्याणि तस्य कोऽप्यत्र न वेदोरुक्रमस्य च ।।३।।
प्रागुत्पाद्य विधिं नाभेर्वेदान्दत्वा ततो जगत्।।
उत्पादयत्यसावेव बुद्धिदीपो मुमुक्षुराट् ।।४।।
भीत्याप्यधिकृता यस्मा उद्वहन्ति बलिं सुराः।।
माययाऽश्नन्त्यन्यदत्तं सम्राज्ञ इव भूमिपाः ।।५।।
यस्य भ्रूभङ्गमात्रेण त्रिलोकी नश्यति क्षणात्।।
इच्छामात्रे पुनर्जाते सेश्वरोत्पद्यते च सा ।।६।।
आत्मभूतस्यास्य शत्रुः स क्रूरो यात्यधोगतिम्।।
दुरत्ययामपि घ्नन्ति मायां यद्रूपचिन्तकाः ।।७।।
अर्वाचीनाः सुराः केऽपि न विदुर्यं तदुद्भवाः।।
स सर्वज्ञोऽपि चात्मानं कार्त्स्न्यान्नो वेद वेद वा।।८।।
यस्यैकपादियं माया त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
स देवदेवदेवेशः कथं नार्च्यस्त्रिविक्रमः ।।९।।
श्रीवैष्णवैशगाणेशसौर्यशाक्त्यादिरूपधृक्।।
दत्तात्रेयोऽस्त्वजोऽनंतः सदा मे हृदि सद्गुरुः।।१०।।
कृत्वैकदेशभक्तिं ये मात्सर्येण द्विषन्ति च ।।
अन्यदेवं च तद्भक्तं ते यान्ति नरकं ध्रुवम् ।।११।।
विष्णुः शिवो गणेशोऽर्कः शक्तिश्चेति पृथङ् न हि।।
एकोऽजः पञ्चधा जातः कुतो भेदोऽस्ति दैवतैः।।१२।।
एतानीशाङ्गानि तृप्येदेकस्यापीह तर्पणात्।।
यथास्याक्ष्यादितृप्त्यांगी चोद्विजेदेकनिन्दया ।।१३।।
देवद्रोहस्ततस्त्याज्यस्तद्भक्तस्यापि सर्वदा।।
यथारुचीश्वरः सेव्यो नान्यथा भेदमाचरेत् ।।१४।।

इति पञ्चायतनमाहात्म्यम्.

१३.
अनादिकल्पेश्वरस्तोत्रम्.

कर्पूरगौरो भुजगेन्द्रहारो गंगाधरो लोकहितावतारः।।
सर्वेश्वरो देववरोऽप्यघोरो योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।१।।
कैलासवासी गिरिजाविलासी श्मशानवासी स्वमनोनिवासी।।
काशीनिवासी विजयप्रकाशी योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ।।२।।
त्रिशूलधारी भवदुःखहारी कंदर्पवैरी रजनीशधारी।।
कपर्दधारी भजकानुसारी योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।३।।
लोकाधिनाथः प्रमथाधिनाथः कैवल्यनाथः श्रुतिशास्त्रनाथः।।
विद्याधिनाथः पुरुषार्थनाथो योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।४।।
लिंगं परिच्छेत्तुमधोगतोस्य नारायणश्चोपरि लोकनाथः।।
ब्बभूवतुस्तावपि नो समर्थौ योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।५।।
यं रावणस्तांडवकौशलेन गीतेन चातोषयदस्य सोऽत्र।।
कृपाकटाक्षेण समृद्धिमाप योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।६।।
सकृच्च बाणोऽवनमय्य शीर्षं यस्याग्रतः सोऽप्यलभत्समृद्धिम्।।
देवेन्द्रसंपत्त्यधिकां गरिष्ठां योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।७।।
गुणान्विमातुं न समर्थ एष शेषश्च जीवोऽपि विकुंठितोऽस्य।।
श्रुतिश्च नूनं चकितं बभाषे योऽनादिकल्पेश्वर एव सोऽसौ ।।८।।
अनादिकल्पेश उमेश एतत्स्तवाष्टकं यः पठति त्रिकालं।।
स धौतपापोऽखिललोकवंद्यं शैवं पदं यास्यति भक्तिमांश्चेत्।।९।।

इति श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं अनादिकल्पेश्वरस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१४.
श्रीशंकरापराधक्षमापनस्तोत्रम्..

जय शंकर पार्वतीपते कृपया पाहि परेश सत्पते।
निजमन्युमिषुं तथेषुधिं परिहायैहि हरन्भवांबुधिम् ।।१।।
पशुपाय नमः पिनाकिने वृषवाहाय सुगुप्तनाकिने।
प्रमथाधिभुवे स्वयंभुवे परविद्याविभवेऽस्तु शंभवे ।।२।।
प्रवरोऽस्म्यहमीश पापिनां प्रवरस्त्वं करुणोऽसि तापिनाम्।
दयनीय इतःपरः क्व ते वद शंभो जगतीह सद्गते ।।३।।

सचराचरविश्वहेतवे प्रभवे ते श्रुतिधर्मसेतवे।
भिषजेऽस्तु नमोऽष्टमूर्तये निजभक्तेप्सितकामपूर्तये ।।४।।

इति श्री.प.प. श्रीवासुदेवानंदसरसेवतीविरचितं श्रीशंकरापराधक्षमापनस्तोत्रम्.

१५.

मृत्युंजयगर्भितस्तोत्रम्.

वाण्या ॐकाररूपिण्या अन्त उक्तोऽस्य नान्यथा।
सुरस्त्रिभुवनेशः स नस्सर्वान्तःस्थितोऽवतु ।।१।।
देवो यं सर्व देवाद्यः सूरिरुन्मत्तवत्स्थितः।
वाहो बलीवर्दकोऽस्य याचकस्येष्टदः स तु ।।२।।
नंदिस्कंधाधिरूढोऽपि त्रिप्रमित्यतिगः स्वभूः।
दशा यस्य न शंभुं तं संतं वन्देऽखिलात्मकम्।।३।।
सद्योजातोऽष्टमूर्तिः स भूतबंदिस्तुतोऽजितः।
रक्ष मन्मथहन्नाथ तोकधर्माणमद्य माम् ।।४।।
स्वतोऽहेतोजगद्धेतो दयानाथांबिकापते।
तीव्रा सुहृत्त्रिविधहृत्तापान्मृत्योश्च मामव ।।५।।
कृतागसमपि त्राह्यत्रेर्मृत्योस्त्वं भिषक्तमः।
तत्संधिं भिन्धि सर्वाकयोनेर्मुञ्चस्व मां शिवः ।।६।।
श्रीद पुष्टिद ते व्याप्तं दिक्षु क्षीरनिभं यशः।
रुङ्मार्ष्टिकृद्रक्ष मां त्वं गंगा यन्मूर्ध्नि चर्क्षराट्।।७।।
द्रष्ट वससि सर्वत्र बत मां ईक्षसे न किं।
स्तुतेर्धर्मेश शक्तिर्निरस्तमृत्यो न मेऽज ते ।।८।।
तिष्ठानंदद चित्ते मे समंतात्परिपालय ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं मृत्यंजयमंत्रगर्भितस्तोत्रम्

वाण्या	ॐ	काररूपिण्या अन्त	उ	क्तोऽस्य नान्यथा।
सुरस्	त्रि	भुवनेशः स नरस्स	र्वा	न्तः स्थितोऽवतु।।१।।
देवो	यं	सर्व देवाद्यः सूरि	रु	न्मत्तवत्स्थितः।
वाहो	ब	वर्दकोऽस्य याच	क	स्येष्टदः स तु।।२।।
नंदिस्	कं	धाधिरूढोऽपि त्रिप्र	मि	त्यतिगः स्वभूः।
दशा	य	स्य न शंभुं तं संतं	व	न्देऽखिलात्मकम्।।३।।
सद्यो	जा	तोऽष्टमूर्तिः स भूत	बं	दिस्तुतोऽजितः।
रक्ष	म	न्मथहन्नाथ तोक	ध	र्माणमद्य माम्।।४।।
स्वतोऽ	हे	तोजगद्धेतो दया	ना	थांबिकापते।
तीव्रा	सु	हृत्त्रिविधहृत्तापा	न्मृ	त्योश्च मामव।।५।।
कृता	ग	समपित्राद्यत्रेर्मृ	त्यो	स्त्वं भिषक्तमः।
तत्सि	न्धिं	भिन्धि सर्वाकयोने	र्मु	ञ्चस्व मां शिवः।।६।।
श्रीद	पु	ष्टिद ते व्याप्तं दिक्षु	क्षी	रनिभं यशः।
रुङ्मार्	ष्टि	कृद्रक्ष मां त्वं गंगा	य	न्मूर्ध्नि चर्क्षराट्।।७।।
द्रष्ट	व	ससि सर्वत्र बत	मां	ईक्षसे न किं।
स्तुते	र्ध	र्मेश शक्तिर्निरस्त	मृ	त्यो न मेऽज ते।।८।।
तिष्ठा	नं	दद चित्ते मे समं	तात्	परिपालय।।९।।

१६.
विश्वेश्वरादिस्तुतिः

नमः श्रीविश्वनाथाय देववंद्यपदाय ते।।
काशीशाश्वेवतारं मे देवदेव ह्युपादिश ।।१।।
मायाधीशं महात्मानं सर्वकारणकारणम्।
वन्दे तं माधवं देवं यः काशीं चाधितिष्ठति ।।२।।
वन्दे तं धर्मगोप्तारं सर्वगुह्यार्थवेदिनम्।
गणदेवं ढुंढिराजं तं महांतं स्वविघ्नहम् ।।३।।
भारं वोढुं स्वभक्तानां यो योगं प्राप्त उत्तमम्।
तं सढुंढिं दंडपाणिं वंदे गांगतटस्थितम् ।।४।।

भैरवं दंष्ट्रकरालं भक्ताभयकरं भजे।
दुष्टदंडं शूलशीर्षधरं वामाध्वचारिणम् ।।५।।
श्रीकाशीं पापशमनीं दमनीं दुष्टचेतसः।
स्वर्निःश्रेणिं चाविमुक्तपुरीं मर्त्यहितां भजे ।।६।।
नमामि चतुराराध्यां सदाऽणिम्नस्थितिं गुहाम्।
श्रीगंगे भैरवीं दूरिकुरु कल्याणि यातनाम् ।।७।।
भवानि रक्षान्नपूर्णे सद्वर्णितगुणेऽम्बिके।
देवर्षिवंद्यांबुमणिकर्णिकां मोक्षदां भजे ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता विश्वेश्वरादिस्तुतिः संपूर्णा।

नमः श्री	वि	श्वनाथाय देव	वं	द्यपदाय ते।।
काशीशा	श्वे	वतारं मे देव	दे	व ह्युपादिश।।१।।
मायाधी	शं	महात्मानं सर्व	का	रणकारणम्।
वन्दे तं	मा	धवं देवं यः का	शीं	चाधिष्ठति।।२।।
वन्दे तं	ध	र्मगोप्तारं सर्व	गु	ह्यार्थवेदिनम्।
गणदे	वं	ढुंढिराजं तं म	हां	तं स्वविघ्नहम्।।३।।
भारं वो	ढुं	स्वभक्तानां यो यो	गं	प्राप्त उत्तमम्।
तं सढुं	ढिं	दंडपाणिं वंदे	गां	गतटस्थितम्।।४।।
भैरवं	दं	ष्ट्रकरालं भक्ता	भ	यकरं भजे।
दुष्टदं	डं	शूलशीर्षधरं	वा	माध्वचारिणम्।।५।।
श्रीकाशीं	पा	पशमनीं दम	नीं	दुष्टचेतसः।
स्वर्निःश्रे	णिं	चाविमुक्तपुरीं	म	र्त्यहितां भजे।।६।।
नमामि	च	तुराराध्यां सदाऽ	णि	म्नस्थितिं गुहाम्।
श्रीगंगे	भै	रवीं दूरिकुरु	क	ल्याणि यातनाम्।।७।।
भवानि	र	क्षान्नपूर्णे सद्व	र्णि	तगुणेऽम्बिके।
देवर्षि	वं	द्यांबुमणिकर्णि	कां	मोक्षदां भजे।।८।।

१७.
काशीविश्वेश्वरस्तोत्रम्

या षोडशकला काशी तनुरूपा प्रकाशते।।
ज्ञानगंगान्विता यत्र शंभुरात्मा प्रतिष्ठितः।।१।।
विश्वनाथः सात्त्विकधीभवान्यालिंगितः सदा।।
यद्दर्शनान्न पुनरावृत्तिः कल्पशतैरपि।।२।।

इति श्री. प.प. श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं काशीविश्वेश्वरस्तोत्रम् संपूर्णम्.

१८
श्रीनागनाथस्तोत्रम्

ॐ कारवाच्योऽवतु नोऽन्धकारी स्मशानचारी भजकेष्टकारी।।
न क्षत्रपालंकृतभाल ईशः प्रभुर्गणेशः सकलामरेशः ।।१।।
मः केशवोऽप्यस्य हि वेद नांतं कुर्यात्स नोऽजो भववेदनांतम्।।
शि वः स शंभुर्भगवानपायात् परावरेशो गिरिशोऽद्य पायात्।।२।।
वा हो वृषो लेपनमस्य भूतिर्यत्पादलग्नापि महाविभूतिः।।
य स्यास्ति चर्मांबरमीश स त्वं सत्त्वं विशोध्यार्पय मे स्वतत्त्वम्।।३।।

षडक्षरान्वितं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ।।
स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ।।४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रानागनाथस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१९.
शंकरस्तोत्रम्.

नमस्तुभ्यं भगवते शंकराय महात्मने।
जगदुत्पत्तिविनाशानां हेतवे मोक्षहेतवे ।।१।।
सर्वदेवाधिदेवाय पार्वतीपतये नमः।

ऋषियोगिमुनीन्द्राणां त्वमेव परमा गतिः ।।२।।
ब्रह्मांडगोलके देव दयालुनां त्वमग्रणीः।
अत एवोल्बणं पीतं त्वया हालाहलं विषम् ।।३।।
गंगाधर महादेव चन्द्रालंकृतमस्तक।
परमेश्वर मां पाहि भयं वारय वारय ।।४।।
सर्वपापं प्रशमय सर्वतापं निवारय।
दुःखं हर हराशेषं मृत्युं विद्रावय द्रुतम् ।।५।।
स्तुतिं कर्तुं न मे शक्तिस्तव वाग्गत्यगोचर।
देहि सत्संगतिं भक्तिं निश्चलां त्वयि शंकर ।।६।।
सर्वारिष्टं परिहर सर्वशत्रून्विनाशय।
दारिद्र्यं हर सर्वेश सर्वान्कामान् प्रपूरय ।।७।।
मुखे नाम दृशो रूपं हृदये त्वत्पदाम्बुजम्।
ममास्तु ते नमः सांब प्रसन्नो भव सर्वदा ।।८।।
त्वदर्चनविधिं जाने न भक्तिस्त्वयि मे हृदि।
अथाप्यनुग्रहाणेश केवलं दययोद्धर ।।९।।

इति श्री. प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं शंकरस्तोत्रं संपूर्णम्।।

२०

श्रीशंकरस्तोत्रम्

ॐ कारवाच्य सकलार्चितपादपद्म
न ष्टस्वकष्ट तव नौमि सुभद्रसद्म ।।
म त्तारिहंतृचरणं शरणं सदाप्ता-
स्ते भूय ईश जननीजठरं न चाप्ताः ।।१।।
अ हं त्वदर्चाविधिं न जाने
स्तु त च गिरिजासूनु जाने।।
भ क्तिस्त्वयीशे न दृढा ममास्ति
ग रिष्ठसत्संग उतापि नास्ति ।।२।।
वन ्दे पदे ते भुवनाधिराज
वि द्याधिराजाप्यमृताधिराज।।

श्वे तद्युते भक्तपते नमस्ते
श्व भ्राड्झटित्युद्धर मां भवाख्यात् ।।३।।
रा जासुराणां त्वमभीष्टदाता
य द्यप्यहो सिद्धनिधिप्रदाता।।
म हाश्मशाने नृकरोटिमालां
हा र्देन धृत्वा प्रकरोषि लीलाम् ।।४।।
दे वाङ्गलेपनमुतापि चिताविभूतिर्
वा हो वृषः सहचरास्तव भूतवाराः
य स्यांकुशं त्वगशिवापि शिवापि तेऽस्ति
त्रि ष्वीशितः पितृवने सवनेऽपि वासः ।।५।।
यं ताखिलस्येदृश ईश तेऽपि
ब लारिमुख्या अमरा हि तेऽपि
काशीश जानन्ति परं न तत्त्वं
य स्येश मां चानुगृहाण स त्वम् ।।६।।
त्रि विक्रमोऽप्यब्जभ्जभवश्च लिंगं
पु रा परिच्छेत्तुमनीश्वरौ ते।।
रु द्रेदृशस्ते गुणवर्णनाय
षा ण्मातुरे भास्य गुरो प्रभुः कः ।।७।।
य स्त ईश परिकीर्तयेद्गुणान्
त्रि ष्वपीह सवनेषु भक्तिमान्।।
पु ण्यवानिह भवेत्तथा नरो
रां कवांबरधरोऽपि नापरः ।।८।।
त पो जपो यज्ञमुखा क्रिया या
का चित्प्रमादाद्विकला यदि स्यात्।।
य न्नामसंकीर्तनतः सुपूर्णा
त्रि दृग्भवेत्त्वां तमजं गृणामि ।।९।।
का लो मृकंडात्मजमर्कचंद्रमोऽ-
ग्नि नेत्रं नेतुं समुपागतस्तदा।।

का लान्तकागच्छशिवेत्यहो तदाऽऽ-
ला पश्रुतेस्त्वं तमु मुक्तवानसि ।।१०।।
य स्मै सकृन्नमश्चक्रे बाणरावण आसुरः।।
का मपूर्तिस्तयोरासीत्संपद्देवश्रियोऽधिका ।।११।।
ला भोऽपरो नश्वर एव कामोऽ-
ग्नि वद्घृतेनेश न कामभोगैः।।
रु द्रोप्रशाम्यत्यत एव देहि
द्रा क्शांतिदां त्वय्यचलां सुभक्तिम् ।।१२।।
य त्वं विना दुःखमपैति यद्वत्
नी रागमप्येति सुखं च तद्वत्।।
ल ब्धुं यते तन्न वृणोमि चार्थं
कं चित्त्वयीशार्पय भक्तिमेकाम् ।।१३।।
ठाये विदा तानपि भक्तियोगो
यथानुगृह्णाति तथा परो नो।।
सर्वेऽपि यस्मादिह पावनाः स्यु-
र्वेदाः प्रमाणं त्विह संशयो नो ।।१४।।
श्वपाकमुख्या अपि यस्य भक्त्या
राजन्त ईशान तवैव लोके।।
यज्ञेश चण्डालसुतापि याता
सतीं गतिं विश्रुतमेतदस्ति ।।१५।।
दारात्मजागारधनादि सर्वं
शिवेह संन्यस्य सदा भजन्ति।।
वामं परं त्वां मुहुरत्र ते किं
यमीश मृत्यूद्भवदुःखभाजः ।।१६।।
श्रीकंठ सूर्येन्दुपयोनभोऽग्नि-
मरुद्धरात्मान इमास्तनूस्ते।।
हालाहलादानिशमानतोऽस्मि
देवाधिदेवेश्वर मे प्रसीद ।।१७।।

वा ताशनोपवीतो
य उ पंचास्यस्त्रिलोचनो नग्नः।।
न न्दिगतो दशहस्तो
मः केस्य स पातु मुन्मग्नः ।।१८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीशंकरस्तोत्रं संपूर्णम्।

२१.
प्रार्थनास्तोत्रम्.

शंकर सुखकर गुरो परमदेव । देहि मयि ते दृश उरोरसकृदेव।।
किंकरवरामरतरो परमदेव । पात लवमद्य गतरोष जितदेव ।।१।।
पूर्णकरुणाञ्चितकटाक्षवरदृष्ट्या । तापशमनं कुरु ममार्य वरदृष्ट्या।।
नैव मम तिष्ठति नमःसदनुशिष्ट्या। ज्ञातमिदमर्थितमिहेदमपि दिष्ट्या ।।२।।
कर्मभिपरपारभववारिधिनिरस्तं । काममुखघोरमकरार्तमपशस्तम् ।।
जन्ममुखवीचिभिरतस्तत उदस्तं । त्रस्तमित उद्धर गृहाण मम हस्तम् ।।३।।
त्रस्तशरणार्थिकरुणोक्तमपि किं ते । न श्रुतमपीदृश उपेक्ष्य इह किं ते ।।
उद्धरणमस्य करुणाकर कियत्ते- ऽथापि न मनो द्रवति कोमलमहो ते।।४।।
प्रसीद मे सागस आर्तबन्धो । कारुण्यसिन्धोऽनुपमास्तबन्धो ।।
बन्धो मृषापि व्यथयत्ययं मां । स्वप्नोपमं छिन्ध्यव सर्वतो माम् ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं प्रार्थनास्तोत्रं संपूर्णम्।।

२२.
द्व्यर्थिरामेश्वरस्तोत्रम्.

भागीरथीपुण्यजलाभिषिक्तो यो ब्रह्महत्याद्यघतः पुनाति।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।१।।
यद्दर्शनं कायिकवाचिकादिपापापहं तापहरं वरं च।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।२।।
त्रिकालसंदर्शनतोऽपि तृप्तो ददाति सिद्धीरुभयीर्महात्मा।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।३।।
रुद्राभिषेकप्रिय ईश्वरो यः सर्वार्थदो भाविककामपूरः।।

रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।४।।
यो बिल्वपत्रैस्त्रिदलैर्भवारिः संपूजितो यच्छति भुक्तिमुक्ती।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।५।।
संपूजितो योऽप्यजितः प्रदोषे ददाति भुक्तिं सकलाधिशान्तिम्।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।६।।
यः शुद्धचित्तेन हि संस्मृतोऽजो भवत्यरं भक्तजितो जितारिः।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।७।।
न ज्ञायते वाङ्मनसातिदूरो देवादिभिर्यन्महिमानियत्तः।।
रामेश्वरोऽसौ भरताग्रजन्मसंस्थापितः पातु सदा विपद्भ्यः ।।८।।
रामेश्वराष्टकमिदं सुखदं विखेदं तापत्रयोपशमदं मदमत्सरादम्।।
भक्तेष्टदं जननमृत्युगदागदं यो भक्त्या पठेत्स परमं पदमेति शंभोः।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं
भरताख्यद्विजस्थापितरामेश्वरस्तोत्रं संपूर्णम्।

२३.

द्व्यर्थिषडाननस्तोत्रम्.

दक्षेण हस्तेन गदां दधान क्रौञ्चञ्च वामेन सुसावधानः।।
स शुक्रजो वोऽवतु कार्तिकेयः षाण्मातुरः साम्बसुतोऽर्यजेयः ।।१।।
षट्शिरो द्वादशकरो द्विगुणोऽत्रिज एव किं।।
सोऽम्बसुतो द्विहस्तोऽत्र सुब्रह्मण्यो मयेक्षितः ।।२।।
हत्वा बलात्संपदमाश्वदैवीं पुष्णाति गोपायति वैश्वदैवीम्।।
सुपूजितस्त्वं सुमनः स्वभक्तगते नमस्तेऽस्तु सदा विरक्तम् ।।३।।
विशेषतस्त्वां भुवि दाक्षिणात्या भजन्ति भक्त्या परयाज तेषाम्।।
अनुग्रहार्थं द्विभुजस्वरूपं प्रकाश्य चास्से दिशि दक्षिणस्याम् ।।४।।
स्त्रीसंगतिर्दुर्गतिरेव साक्षादित्थं समाख्यापयितुं वधूनाम्।।
सुस्पर्शगन्धोऽपि सुदूरतस्ते समुझ्झितो देव पदे नमस्ते ।।५।।
स्वामिन्नम्बास्नेहलतां वितताममपि तां क्षणात्।।
मायामयीं निरस्याऽजो विजहार नमामि तम् ।।६।।
एकान्तसेविनमपि स्वामिनं त्वोपतस्थिरे।।
एकान्त भक्ता यच्चित्ते नैव कामोद्गतिः स्थिरे ।।७।।
स्वामिंस्तारकजित्सर्वलोककारकशक्तिधृक्।।

अंबासुत नमस्तेऽस्तु प्रसीद परिपाहि नः ।।८।।
योगापेक्षा मे न ते दर्शनार्थं नापेक्षा मे भाविपूज्योद्भवार्थम्।।
भक्त्या भूयाद्दर्शनं ते कदापि स्यात्साफल्यं जन्मनो मे ततोऽपि।।९।।
स्मर्तृगामी कलौ योऽम्बातनयो द्विशयो मतः।।
चक्रे द्व्यर्थां तस्य नुतिं वासुदेवसरस्वती ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं कार्तिकस्वामीस्तोत्रम्।।

२४.

श्रीशंकराचार्यस्तुतिः

श्रीमद्भगवत्पूज्यपदेश्वर । वैदिकमार्गस्थापक शंकर ।।
शिवावतार श्रीमच्छंकर । किंकर हरहर त्राहि यतीश्वर ।।१।।
शिवसद्गुरुगृहावतीर्ण मोहान्तक जनशिक्षक तारक दान्त ।
खण्डितपण्डितसंहतिमण्डित । मण्डनपण्डितदुर्मतशान्त ।।
श्रीमद्भगवत्पूज्यपदेश्वर.. ।।२।।
विजितासंगतशास्त्रासंमतसौगतबौद्धादिकराद्धांत।।
प्रस्थानत्रयभाष्यकृदद्वयमतसंस्थापक दृढमतसिद्धान्त ।।३।।
वृषभूकमठान्यो दिक्षु मठान् । कृत्वा चतुरस्तत्र चतुरः ।।
सुरेश्वरार्यप्रमुखान् चतुरानयोजयद्यो शिष्यांश्चतुरः ।।४।।
श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकश्रीमच्छंकराचार्यमशोकं।।
वासुदेवयतिर्भक्त्या नमति । स्तुत्वा यथामति पावितलोकम् ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता श्रीशंकराचार्यस्तुतिः पूर्णा।।

२५.

श्रीखण्डराजस्तोत्रम्.

श्रीशंकरावतारोऽयं खण्डराजो महामतिः।
तस्मै महालसेशाय मणिमल्लारये नमः ।।१।।
ऋषीणां यस्तपःसिद्ध्या अवतीर्य महीतले।
दैत्याननाशयत्तस्मै मणिमल्लारये नमः ।।२।।
यो वेदमयमास्थाय महाश्वमपराजितम्।
जघ्ने दैत्यरिपून्तस्मै मणिमल्लारये नमः ।।३।।

पीतवस्त्रपरीधानः पीताभरणभूषितः।
त्रैलोक्यवंदितस्तस्मै मणिमल्लारये नमः ।।४।।
मार्गशीर्षे महामासे प्रत्यब्दं यन्महोत्सवः।
योऽभीष्टदो विभुस्तस्मै मणिमल्लारये नमः ।।५।।
देवः प्रतापमार्तण्डभैरवः शत्रुकृन्तनः।
सर्वापत्तिहरस्तस्मै मणिमल्लारये नमः ।।६।।
खण्डराज प्रसीद त्वं सर्वापत्तिमपाकुरु।
पाहि मां त्वं प्रभो तुभ्यं मणिमल्लारये नमः ।।७।।
कायेन मनसा वाचा येऽपराधा मया कृताः।
तान्क्षमस्व प्रभो तुभ्यं मणिमल्लारये नमः ।।८।।
खण्डराजस्तुतिमिमां त्रिसंध्यं यः पठेद्द्विजः।
सर्वान्कामान्स आप्त्वेह शिवलोके महीयते ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीखण्डराजस्तोत्रं संपूर्णम्।।

२६.
श्रीचिदम्बरदीक्षितस्तोत्रम्.

शि वः स्वयं भूमितलेऽवतीर्णः स्वयं हि धर्मः खलु येन चीर्णः।।
व शी द्विभार्योऽप्यभवद्विदीर्णरागो यदिष्टैस्तु भवोऽपि तीर्णः ।।१।।
चि दम्बराख्यो भुवि दीक्षितो यः सदाज्यतासादितसिंधुतोयः।।
दं भादिहीनान्भजकान्प्रपन्नानतारयद्वै विपदो विपन्नान् ।।२।।
ब भूव यो लौकिककर्मकर्ता भर्ता द्विजानां खलगर्वहर्ता।।
र रक्ष धर्मं स हरावतारो मलापहातीरविहार्युदारः ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीचिदंबरदीक्षितस्तोत्रम्।।

२७.
श्रीसदाशिवेन्द्रस्तोत्रम्.

स्वानन्दरसोन्मत्तः स्वाङ्गं विस्मृत्य यो नरो नर्ति।
स यतिः सदाशिवेन्द्रो विदेहमुक्तिस्थितौ वरीवर्ती ।।१।।
सदाशिवाभाषणमन्यवीक्षया सदाशिवाचारमचिन्त्यदीक्षया।
सदाशिवाभं प्रणमामि सद्गतिं सदाशिवायेन्द्रसरस्वतीयतिम् ।।२।।

भूत्या छन्नो जातवेदा इवाष्टभूत्या छन्नो योऽपि चोन्मत्तचेष्टः।।
काष्ठां काश्चित् प्राप्य रेमे स्वतन्त्रः काष्ठा काचिद्या विमुक्तेरमंत्रतः।।३।।
मुक्त्याश्लिष्टो भाति बाहूपधानः क्ष्मातल्पोऽसौ दिक्पटः सावधानः।।
धाम्नि स्वीये योगविच्चक्रवर्ती जूर्तिघ्नो दि*क्शालिनी* यस्य कीर्तिः ।।४।।

नग्नं दृष्ट्वा निजदयितया नोदितो म्लेच्छ एतं
शान्तं दान्तं प्रसभमसिनाऽहन् विव्यथे न।।
कृत्तांसोऽपि व्यथितमनसे सैनसे भग्नबाहुं
*मंदाक्रांता*न्वयनगतयेऽदर्शयत् पूर्व आहुः ।।५।।

म्लेच्छो विरक्तः शरणं जगाम न्यूनोऽप्यनुग्राह्य उतापि तामसः।।
इत्थं विचार्यावददे परेऽन्त्यज श्रद्धस्व नित्यं हृदयेप्सितं त्यज ।।६।।
तथेति कत्राणमपास्य सोऽनमत्तथाचरन् सोऽपि गतिं बतागमत्।।
यदा कुवंशस्थनरोऽप्यगाद्गतिं तदा सुवंशस्थ इयान्न किं गतिम् ।।७।।
ईदृक्प्रभावोऽत्र सदाशिवेन्द्रो जागर्त्यतोऽत्रापि शिवोऽप्युपेन्द्रः।।
विशुद्धसत्त्वं ननु भूतिकाम आत्मज्ञमर्चेत्तमु मुक्तिकामः ।।८।।

नामादिभिः परतरं भूमानं यो निरंतरम्।।
अभेदेनाप स ब्रह्म न ब्रह्मज्ञः श्रुतीरणात् ।।९।।
चक्रे वदेत्तं किमु वासुदेवः आत्मज्ञमित्यादृत साधुभावः।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीसदाशिवेन्द्रस्तोत्रम ।।

२८.

अमरेश्वरस्तोत्रम्.

कृष्णावेणीतटावास तृष्णाहृत्तुष्टमानस।
त्रासहारिमहावीर त्राहि माममरेश्वर ।।१।।
आन्ध्रदेशकृतावास चान्तरस्थमहारस।
दुःखान्महाशक्तिधर त्राहि माममरेश्वर ।।२।।
श्रीधान्यवाटिकाक्षेत्ररंजनानर्थभंजन ।
जननान्तत्रासहर त्राहि माममरेश्वर ।।३।।
नानोत्पातप्रशमन मनःशान्तिदचिन्तन।
अधिष्ठितामरपुर त्राहि माममरेश्वर ।।४।।

चामुण्डाशक्तिसहित पराजितनिजाहित।
हितकारिन् महाधीर त्राहि माममरेश्वर ॥५॥
प्रणवेशादिभिः पंचलिंगैस्त्वां सहितं न च।
पश्यतां भीररिहर त्राहि माममरेश्वर ॥६॥
अमरावत्याधिष्ठानममरारिनिषूदनम्।
वन्दे त्वामखिलाधार त्राहि माममरेश्वर ॥७॥
सदा ममास्तु योगस्ते त्वदर्थं मेऽपि सद्गते।
देहोऽयं तिष्ठतु हर त्राहि माममरेश्वर ॥८॥
प्रसीद पार्वतीजाने न जानेऽहं शुभाशुभम्।
स्मरामि त्वां स्मरहरे त्राहि माममरेश्वर ॥९॥
अपराधान्मानसिकान्कायिकानपि वाचिकान्।
क्षमस्व स्वजनाधार त्राहि माममरेश्वर ॥१०॥
दोषा अशेषा मम ये ते नश्यन्तु सदाऽभये।
त्वय्यस्तु हृदयं तार त्राहि माममरेश्वर ॥११॥

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीमदमरेश्वरस्तोत्रं संपूर्णम्॥

२९.

धान्यवाडिकाक्षेत्रमाहात्म्यम्.

देशे महाराष्ट्रसमाह्वये भुवि ख्याता यथा श्रीनरसिंहवाटिका।
कृष्णानदीपश्चिमकूल आन्ध्रके देशे तथा पूरपि धान्यवाडिका ॥१॥
दिवि यथाध्यमरास्त्यमरावती भुवि तथा ह्यपराप्यमरावती।
दिवि तु सास्त्यमरेश्वरमण्डिता भुवि तथाप्यमरेश्वरमण्डिता ॥२॥
चामुण्डिकेशार्पितसाधुमानं काशीसमानं भुवि भासमानम्।
क्षेत्रं त्विदं पातकशोकहन्तृ श्रीकृष्णया मण्डितमिष्टदातृ ॥३॥
कृष्णोत्तुंगतरंगसंगवशतो वातोऽतिपूतो यतो
धावन्छान्त इतस्ततः स्वगतितः प्राप्तं त्रिधा दुष्कृतम्।
दूरादेव निवारयत्यविरतं जातं यदंगादित-
स्तद्भक्त्यात्र सतां सदा निवसतां पापस्य वार्ता कुतः ॥४॥
भक्तेष्टदोऽत्र प्रणवेश्वरः स्थितः श्रीमानगस्त्येश्वर इष्टदः स्थितः।
सोमेश्वरो यत्र च कोसलेश्वरः श्रीवीरभद्रेश्वर आस्तिकादरः ॥५॥
लिंगैर्युतं पंचभिरेवमुच्चमुच्चंडकालान्तकमाशु यच्च।
सकृत्प्रणामात्सकलार्थदातृ तदामरं लिंगमनिष्टहन्तृ ॥६॥

यद्वेणुनादश्रवणादचेतनाः सचेतनाः स्युः सजवास्तथाजवाः।
क्षेत्रं त्विदं तेन सदास्त्यधिष्ठितं गोपालकृष्णेन ददात्यभीप्सितम् ।।७।।
भूतेश पाहि भवतारक तारकघ्न तातेशतः परमुदर्पकदर्पकघ्न।
कोऽस्माकमत्रभवतोषदोऽन्यो मान्यो विपत्तिवनपावकपावकाक्ष ।।८।।
चामुण्डेश सगोपालपालकोस्यमरेश्वर।
लोकशोकहर श्लोकाष्टकं शृणु महेश्वर ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीधान्यवाडिकाक्षेत्रमाहात्म्यम्।।

३०.

वरदानदीतत्तीरस्थमधुकेश्वरस्तुतिः

वरदानपरा मनोहरा वरदारिद्र्यहरा सदादरा।
वरदाख्यनदीविशुद्धये वरदा मेऽस्त्वपि मुक्तिसिद्धये ।।१।।
कृष्णासखी या तुंगभद्रया कृष्णां गता कृष्णातनुं सुभद्रया।
सैषा धुनीयं वरदाह्वयाऽभया भयानकाल्पातु रिपोरघाह्वयात् ।।२।।
यत्तीरे विहिताः सवाश्च मुनिभिः प्राज्ञैर्वसिष्ठादिभि-
र्यन्नीरेक्षणतोऽप्यशुद्धमतिभिर्लब्धा गतिः पापिभिः।
सेयं सद्गतिदाख्ययापि वरदा श्रेयस्तपोवृद्धिदा
मन्दानामपि पारदास्तु वरदा मोदास्पदा नः सदा ।।३।।
जयन्त्याख्या शुभा तस्या वरीवर्ति तटे पुरी।
जयन्तीह महेन्द्राद्या मधुकेशपुरःसरा ।।४।।
शक्तिं मधुं हन्तुमदादुमाधवः पुरात्र यस्मै खलु चाद्य माधवः।
संस्थापयामास वसन्पुरः स्वयं लिंगं मनोहृन्मधुकेश्वराह्वयम् ।।५।।
इन्द्रादयः स्वस्वहरित्सु संस्थिता यत्रावताराश्च मधुद्विषः स्थिताः।
शम्भोर्गणाश्चाखिललोकमंगला वामप्रदेशेऽपि च सर्वमंगला ।।६।।
प्रत्याहिका यत्र वरार्चनोत्सवा यानादयो यत्र च मासिकोत्सवाः।
चैत्रे रथाद्या अपि वार्षिकोत्सवा भवन्ति चोर्जे वरदीपकोत्सवाः।।७।।
एवंभूतो महादेवो नाम्ना यो मधुकेश्वरः।
त्रिकालमर्चितो भक्तानभीष्टार्थं प्रयच्छति ।।८।।
(गोमूत्रिकाबंधः)**भवो मारहरः सोमप्रियोऽवतु सुराघहा।**
शिवो वरकरः सामगेयो जन्तुदरापहा ।।९।।

(हारबंधः) **हर सुरवर समस्तमघं मम स्मरहर मामव प्रवरावर।**
वरकर गरलाद शर्वशमीश शंकरधरवर जडजद्विजभृज्जय ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं वरदानदीतत्तीरस्थमधुकेश्वरस्तुतिः ।।

३१.

शबरप्रगादवर्णनम्।।

विभूतिभर्त्रेऽन्वहमर्पयन् चिताविभूतिमाप्त्वैकदिने स नोचिताम्।
गात्रार्धभस्म प्रददौ धनंजयच्छात्रस्तदाऽभूद्वरदः पुरंजयः ।।१।।

शंकरभजनं संसृतिभञ्जनं किंकररञ्जनं मायातमोऽञ्जनम् ।।ध्रु।।
भाविकजीवनं पावनपावनं आर्तपरावनं शान्तिमहावनम् ।।१।।
मत्वा धनंजयभूपानुशासनं शबरोऽप्यकरोल्लिंगसमर्चनम् ।।२।।
नवचितिभूतिं शबरोऽनुदिनं भूतिवरायाददनुसवनम् ।।३।।
एकदिने स क्वाप्यलभन्न भस्म स ऐच्छच्छबरो निधनम् ।।४।।
आह तदा स्त्रीः कुरु सदनेन सहदयितार्धस्ववपुर्दहनम् ।।५।।
स तथा दग्ध्वा भसितेन तेन शंकरपूजनमकरोददीनः ।।६।।
आह्वयदंगनामर्चनावसान ईशस्तुष्टोऽदर्शयदंगनाम् ।।७।।
प्रादुर्भूत्वा स्वयमीशानस्ताभ्यां प्रददौ स निजस्थानम् ।।८।।
यस्य न मानं तव महिमानं तमजानुदिनं स्मरामि नूनम् ।।९।।
श्रद्धाभक्तिर्मे न न तेऽर्चनं जाने क्षमस्वापराधमीशान ।।१०।।
इति वासुदेवानंदसरस्वतीयतिकृतविनतिं शृण्वीशान ।।११।।

इति गीतिः

३२.

लक्ष्मीनारायणस्तोत्रम्।।

श्रीनिवास जगन्नाथ श्रीहरे भक्तवत्सल।
लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं त्राहि मां भवसागरात् ।।१।।
राधारमण गोविंद भक्तकामप्रपूरक।
नारायण नमस्तुभ्यं त्राहि मां भवसागरात् ।।२।।

दामोदर महोदार सर्वापत्तिनिवारण।
हृषीकेश नमस्तुभ्यं त्राहि मां भवसागरात् ।।३।।
गरुडध्वज वैकुंठनिवासिन्केशवाच्युत।
जनार्दन नमस्तुभ्यं त्राहि मां भवसागरात् ।।४।।
शंखचक्रगदापद्मधर श्रीवत्सलांछन।
मेघश्याम नमस्तुभ्यं त्राहि मां भवसागरात् ।।५।।
त्वं माता त्वं पिता बंधुः सद्गुरुस्त्वं दयानिधिः।
त्वत्तोऽन्यो न परो देवस्त्राहि मां भवसागरात् ।।६।।
न जाने दानधर्मादि योगं यागं तपो जपम्।
त्वं केवलं कुरु दयां त्राहि मां भवसागरात् ।।७।।
न मत्समो यद्यपि पापकर्ता न त्वत्समोऽथापि हि पापहर्ता।
विज्ञापितं त्वेतदशेषसाक्षिन् मामुद्धरार्तं पतितं तवाग्रे ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं
श्रीलक्ष्मीनारायणस्तोत्रम् संपूर्णम्।।

३३.

श्रीकेशवराजाष्टकम्।।

कशब्दवाच्यो कथितो विधाता स्यादीशशब्देन हरो विकर्ता।
तौ द्वौ स्वशक्त्या वशत्यतंद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।१।।
चतुर्भुजैः सायुधभूषणाढ्यैर्यो लोकपालैरिव युक्प्रभाढ्यैः।।
जयत्यजस्त्रं निजपा विनिद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।२।।
पीतांबरालंकृतचारुदेहः किरीटकेयूरधरो विमोहः।।
भृत्यावने योऽनिशमस्ततंद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।३।।
कल्पांतमेघद्युतिगर्वहर्त्री यस्य द्युतिः स्वांतरहर्षदात्री।।
बिभाति लावण्यनिधिः सुधीर्यः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।४।।
महाविभूतिर्जगतीह दासी-भूतामरस्त्रीरपि यस्य दासी।।
पदस्य नित्यं धृतहासमुद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।५।।
यो नामदेवस्य दृष्टां सुभक्तिं ज्ञात्वाऽपि बालस्य मुदे हि दुग्धं।।
शिलात्मनापीह पपौ सुभद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।६।।
यो देशिकस्यापि तरां सुभक्त्या तुष्टो महात्मा तदधीन आस।।
तद्वंशजेभ्योऽप्यधुना वितंद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।७।।

प्रसीद मे केशव दीनबंधो प्रसीद मे केशव चार्तबंधो।।
बंधोच्छिदार्योऽसि कृपासमुद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेंद्रः ।।८।।
एवं स्तुतोऽष्टभिर्हृद्यैः पद्यैः पातु न आर्तिहा।।
महात्मा वासुदेवेन यतिनाऽस्तु भवार्तिहा ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं केशवराजाष्टकं संपूर्णम्।।

३४.

दशावतारस्तोत्रम्।।

मत्स्योब्धिविहारः पूर्वो ह्यवतारः। जातः श्रुतिहारः पूज्यो मनुतारः ।।१।।
नष्टामरबाधः कूर्मोऽथ धराधः। गत्वा वहतीशः क्ष्मां योऽप्यमृतेशः ।।२।।
भूभृत्स हिरण्याक्षघ्नोऽत्र तृतीयः। भूदार उदारो यज्ञो भजनीयः ।।३।।
भृत्योक्त्यनुसारी पूर्वोऽसुरवैरी। नाम्नापि नृसिंहः साक्षाच्च नृसिंहः।।४।।
यो वामनवेषः सन् पञ्चम एषः । याञ्चोपधिबद्धस्तेनो बलिरद्धा ।।५।।
दूराट्क्षयकामः स्याद्भार्गवरामः। क्ष्मादो गुरुदासः षष्ठोऽब्धिनिवासः।।६।।
राट्सप्तम आसीद्रामो वनवासी। पित्र्युक्त्यनुसारी रक्षोलयकारी ।।७।।
वर्ण्यष्टम इष्टः कृष्णो हतदुष्टः। यः षोडशनारीसाहस्रविहारी ।।८।।
बुद्धो नवमोऽयं विस्तारितमायम्। यं कोऽपि न वेद सोऽप्यावृतिमर्दः।।९।।
म्लेच्छक्षयकर्ता कल्की वृषभर्ता। विप्रो भविताथ्र्यः शूरो दशमोऽर्च्यः।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं दशावतारस्तोत्रं संपूर्णम्।।

३५.

दशावतारस्तोत्रम्।।

धरणीनौकावितमनुरेकाधीश्वरः स त्वं ह्यसि।।
शंखासुरहा यो निजमोहाऽघाधिहा स त्वं ह्यसि ।।१।।
शान्तैकमठो भोऽभूत्कमठो योऽशठः स त्वं ह्यसि ।।२।।
यो भूदारोऽपि सभूदारोऽभूदुदारस्त्वं ह्यसि।।
स्तब्धरोमा भुवदुद्धारे स्तब्धरोमास्त्वं ह्यसि ।।३।।
नरसिंहतनूर्हतभक्तजनुः स्वेष्टदः स त्वं ह्यसि।।
भजकार्तिहरो दैत्यासुहरो भीहरः स त्वं ह्यसि ।।४।।
यो व्याजपटुर्बलिमार्षबटुश्चाग्रहीत्स त्वं ह्यसि।।

द्वारे बलेर्यस्तिष्ठत्यभयः कीर्तिकृत्स त्वं ह्यसि ।।५।।
दुर्नृपहन्ता ब्राह्मणगोप्ता स्वाविता स त्वं ह्यसि।।
पूरितकामो भार्गवरामो विभ्रमः स त्वं ह्यसि ।।६।।
सीतारामो भजकारामो वैरिहृत् स त्वं ह्यसि।।
एकशरस्त्रीवाग्वरमंत्री रावणारिस्त्वं ह्यसि ।।७।।
षोडशनारीसहस्रभोगी योगीराट् स त्वं ह्यसि।।
भूभारहरो हृतसंसारो योऽष्टमः स त्वं ह्यसि ।।८।।
अपापविद्धो युवसंशुद्धो बुद्ध एषस्त्वं ह्यसि।।
विठ्ठलनामा यः शुभधाम्ना तारकः स त्वं ह्यसि ।।९।।
कल्किर्भविता दुर्जनहन्ता योऽन्ततः स त्वं ह्यसि।।
गन्धर्वस्थो द्विभुजः स्वस्थो यो गुरुः स त्वं ह्यसि ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं दशावतारस्तोत्रं संपूर्णम्।।

३६.

श्रीनरसिंहस्तोत्रम्।।

जय जय भयहारिन् भक्तचित्ताब्जचारिन्।
जय जय नयचारिन्दृप्तमत्तारिमारिन्।।
जय जय जयशालिन्पाहि नः शूरसिंह।
जय जय दययार्द्र त्राहि नः श्रीनृसिंह ।।१।।
असुसमरधीरस्त्वं महात्मासि जिष्णो।
अमरविसरवीरस्त्वं परात्मासि विष्णो।।
सदयहृदय गोप्ता त्वन्न चान्यो विमोह।
जय जय दययार्द्र त्राहि नः श्रीनृसिंह ।।२।।
खरतरनखरास्त्रं स्वारिहत्यै विधत्से।
परतरवरहस्तं स्वावनायैव धत्से।।
भवभयभयकर्ता कोऽपरास्ताक्ष्यर्वाह।
जय जय दययार्द्र त्राहि नः श्रीनृसिंह ।।३।।
असुरकुलबलारिः स्वेष्टचेतस्तमोऽरिः।
सकलखलबलारिस्त्वं स्वभक्तारिवैरी।।
त्वदित स इनदृक् सत्पक्षपाती न चेह।
जय जय दययार्द्र त्राहि नः श्रीनृसिंह ।।४।।

सकलसुरबलारिः प्राणिमात्रापकारी।
तव भजकवरारिर्धर्मविध्वंसकारी।।
सुरवरवरदृप्तः सोऽप्यरिस्ते हतो ह।
जय जय दययार्द्र त्राहि नः श्रीनृसिंह ।।५।।
दहनादहहाब्धिपातनाद्गरदानाद्भृगुपातनादपि।
निजभक्त इहावितो यथा नरसिंहापि सदाव नस्तथा ।।६।।
निजभृत्यविभाषितं मितं खलु कर्तुं त्वमृतं दयाकर।।
प्रकटीकृतमिध्ममध्यतो निजरूपं नरसिंह धीश्वर ।।७।।
नाराधनं न हवनं न तपो जपो वा।
तीर्थं व्रतं न च कृतं श्रवणादि नो वा।।
सेवा कुटुंबभरणाय कृतादिदीना।
दीनार्तिहन् नरहरेऽघहरे ह नोऽव ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीनरसिंहस्तोत्रं संपूर्णम्।।

३७.
श्रीनृसिंहस्तोत्रम्।।

वरदात्रुदिताविरोधतः सहसा येन महासुरो हतः।।
निजभृत्यवचस्तरामृतं विहितं तं नृहरिं भजे हितम् ।।१।।
नृत्यंति कर्मभिर्ये ते नरो जीवा निहंति यः।।
तत्संबंधमविद्याख्यं नरसिंहः स नोऽवतु ।।२।।
यदुरोवक्त्रहृत्संस्था लक्ष्मीवाक्संविदः सदा।।
अविरोधितया पायादपायान्नृहरिः स नः ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीनृसिहस्तोत्रं संपूर्णम्।।

३८.
श्रीनृसिंहाष्टकम्।।

यं ध्यायसे स क्व तवास्ति देव इत्युक्त ऊचे पितरं सशस्त्रम्।।
प्रल्हाद आस्तेऽखिलगो हरिः स लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।१।।
तदा पदाताडयदादिदैत्यः स्तंभो ततोऽह्नाय घुरूरुशब्दम्।।
चकार यो लोकभयंकरं स लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।२।।

स्तंभं विनिर्भिद्य विनिर्गतो यो भयंकराकार उदस्तमेघः।।
जटानिपातैः स च तुंगकर्णो लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।३।।
पंचाननास्यो मनुजाकृतिर्यो भयंकरस्तीक्ष्णनखायुधोऽरिम्।।
धृत्वा निजोर्वोर्विददार सोऽसौ लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।४।।
वरप्रदोक्तेरविरोधतोऽरिं जघान भृत्योक्तमृतं हि कुर्वन्।।
स्रग्वत्तदंत्रं निदधौ स्वकंठे लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।५।।
विचित्रदेहोऽपि विचित्रकर्मा विचित्रशक्तिः स च केसरीह।।
पापं च तापं विनिवार्य दुःखं लक्ष्मीनृसिंहोऽवतु मां समन्तात् ।।६।।
प्रह्लादः कृतकृत्योऽभूद्यत्कृपालेशतोऽमराः।
निष्कंटकं स्वधामापुः श्रीनृसिंहः स पाति माम् ।।७।।
दंष्ट्राकरालवदनो रिपूणां भयकृद्भयम्।
इष्टदो हरति स्वस्य वासुदेवः स पातु माम् ।।८।।
इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीलक्ष्मीनृसिहाष्टकं समाप्तम्।।

३९.

परशुरामस्तोत्रम्।।

कराभ्यां परशुं चापं दधानं रेणुकात्मजम्।
जामदग्न्यं भजे रामं भार्गवं क्षत्रियान्तकम् ।।१।।
नमामि भार्गवं रामं रेणुकाचित्तनंदनम्।।
मोचिताम्बार्तिमुत्पातनाशनं क्षत्रनाशनम् ।।२।।
भयार्तस्वजनत्राणतत्परं धर्मतत्परम्।।
गतगर्वप्रियं शूरं जमदग्निसुतं मतम् ।।३।।
वशीकृतमहादेवं दृप्तभूपकुलान्तकम्।।
तेजस्विनं कार्तवीर्यनाशनं भवनाशनम् ।।४।।
परशुं दक्षिणे हस्ते वामे च दधतं धनुः।।
रम्यं भृगुकुलोत्तंसं घनश्यामं मनोहरम् ।।५।।
शुद्धं बुद्धं महाप्रज्ञामंडितं रणपण्डितम्।।
रामं श्रीदत्तकरुणाभाजनं विप्ररंजनम् ।।६।।
मार्गणाशोषिताब्ध्यंशं पावनं चिरजीवनम्।।
य एतानि जपेद्रामनामानि स कृती भवेत् ।।७।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीपरशुरामस्तोत्रं संपूर्णम्।।

४०.
श्रीरामचंद्रस्तोत्रम्।।

श्री रामचंद्रः सहितास्ततंद्रः ॐ कारवच्योऽवतु मां सुभद्रः।।
रा जाधिराजोऽखिललोकभर्ता न तावनात्तव्रत आधिहर्ता ।।१।।
म हामहिम्ने परमार्थधाम्ने मो हान्तकायाद्य नमोऽस्तु भूम्ने।।
ज गद्धितायात्तसुविग्रहाय भ क्तेष्टदायाहितनिग्रहाय ।।२।।
य ज्ञेश्वरायाखिलधर्मगोप्त्रे ग तिप्रदायासुरदुष्टहंत्रे ।।
रा म प्रसीदाखिलतापहारिन् व रेण्य कारुण्यनिधेऽपहारिन् ।।३।।
म मापराधानखिलान्क्षमस्व ते जोमय श्रीश विभो दयस्व।।
ज न्मादिहेतोः कृतभूरिमंतोर् द त्ताभय त्वं परमा गतिर्मे ।।४।।
य मादियोगं न च यागमाप त्ता पघ्न जाने विहितार्थभोगम्।।
ज गन्निवासेश्वर मामवाद्य त्रे धाद्यतापान् हर मे भवाद्य ।।५।।
य शःप्रपूर्णं श्रवणं कुरुष्व या यादृगतिं येन खलोऽपि सद्यः।।
रा गादिविद्धोऽपि तमर्पयाद्य य तीश सत्संगमजानवद्य ।।६।।
म हाघकर्ता हि तवेक्षणेन यायाद्विमुक्तिं परमक्षणेन ।।
सीतापते तेऽस्तु नमः प्रसीद प्रसीदरामाखिलद प्रसीद ।।७।।
कौसल्यालसदालवालजनितः सीतालतालिंगितः
सिक्तः पंक्तिरथेन सोदरमहाशाखाभिरभ्युन्नतः।।
रक्षस्तीक्ष्णनिदाघपाटनपटुच्छायाश्रितानंदकृ-
द्युष्मद्वांछितसत्फलानि फलतु श्रीरामकल्पद्रुमः ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रारामचंद्रस्तोत्रं संपूर्णम्।।

४१.
पद्यात्मकश्रीरामस्तोत्रम्।।

राममाश्रय राममाश्रय राममाश्रय भद्रदम्।
राममाश्रयतां कुतोऽपि भवेत्कुदैवमभद्रदम्।।ध्रु.।।
यस्य पादसरोजलग्नरजःकणादपि तत्क्षणम्।

गौतमर्षिवधूद्धृतिः किल यत्कटाक्षनिरीक्षणं।।
आरवींदु बिभीषणाय सुराज्यमर्पयदाशु तम्।
चित्त चिंतय विश्रुतं न च हन्ति कोऽपि यदाश्रितम् ।।१।।
माययापि यदाश्रितस्त्विह कोऽपि नो परिभूयते।
राममार्तिविराममाश्रय कं यतो ह्यनुभूयते।।
यस्य नामवशाच्छिला अपि सिन्धुना हि समुद्धृताः।
ते जडा अजडा भवन्ति न किं वदाऽत्र समुद्धृताः ।।२।।
सर्वदैवतकिंशरोऽखिलशंकरोऽपि हि शंकरो।
यस्य नाम विमुक्तिधाम जपत्यकामहितादरः।।
वासुदेवसरस्वती यमगायताखिलकामदम्।
राममाश्रय तं सतां मतमाशु शाश्वतधामदम् ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता श्रीरामस्तुतिः।।

४२.
श्रीमारुतीस्तोत्रम्.

ॐ नमो वायुपुत्राय भीमरूपाय धीमते।
नमस्ते रामदूताय कामरूपाय श्रीमते।।१।।
मोहशोकविनाशाय सीताशोकविनाशिने।
भग्नाशोकवनायास्तु दग्धलंकाय वाग्मिने।।२।।
गतिर्निर्जितवाताय लक्ष्मणप्राणदाय च।
वनौकसां वरिष्ठाय वशिने वनवासिने।।३।।
तत्त्वज्ञानसुधासिंधुनिमग्नाय महीयसे।
आंजनेयाय शूराय सुग्रीवसचिवाय ते।।४।।
जन्ममृत्यूभयघ्नाय सर्वक्लेशहराय च।
नेदिष्ठाय प्रेतभूतपिशाचभयहारिणे।।५।।
यातनानाशनायास्तु नमो मर्कटरूपिणे।
यक्षराक्षसशार्दूलसर्पवृश्चिकभीहृते।।६।।
महाबलाय वीराय चिरंजीविन उद्धृते।
हारिणे वज्रदेहाय चोल्लंघितमहाब्धये।।७।।

बलिनामग्रगण्याय नमो नः पाहि मारुते।
लाभदोऽसि त्वमेवाशु हनुमन् राक्षसान्तक।।८।।
यशो जयं च मे देहि शत्रून्नाशय नाशय।
स्वाश्रितानामभयदं य एवं स्तौति मारुतिम्।।
हानिः कुतो भवेत्तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीमारुतिस्तोत्रं संपूर्णम्

४३.
श्रीव्यंकटेशस्तोत्रम्।।

यो लोकरक्षार्थमिहावतीर्य वैकुंठलोकात्सुरवर्यवर्यः।।
शेषाचले तिष्ठति योऽनवद्ये तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।१।।
पद्मावतीमानसराजहंसः कृपाकटाक्षानुगृहीतहंसः।।
हंसात्मनादिष्टनिजस्वभावस्तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।२।।
महाविभूतिः स्वयमेव यस्य पदारविंदं भजते चिरस्य।।
तथापि योऽर्थं भुवि संचिनोति तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये।।३।।
य आश्विने मासि महोत्सवार्थं शेषाद्रिमारुह्य मुदातितुंगं।।
यत्पादमीक्षन्ति तरन्ति ते वै तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।४।।
प्रसीद लक्ष्मीरमण प्रसीद प्रसीद शेषाद्रिशय प्रसीद।।
दारिद्र्यदुःखादिभयं हरस्व तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।५।।
यदि प्रमादेन कृतोऽपराधः श्रीव्यंकटेशाच्छितलोकबाधः।।
स मामव त्वं प्रणमामि भूयस्तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।७।।
न मत्समो यद्यपि पातकीह न त्वत्समः कारुणिकोऽपि चेह।।
विज्ञापितं मे शृणु शेषशायिन् तं व्यंकटेशं शरणं प्रपद्ये।।८।।
व्यंकटेशाष्टकमिदं त्रिकालं यः पठेन्नरः।
स सर्वपापनिर्मुक्तो व्यंकटेशप्रियो भवेत् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीव्यंकटेशस्तोत्रम् संपूर्णम्।।

४४.
श्रीवेंकटेशस्तोत्रम्।।

व्येमित्यव्ययमाख्यातं मुनिभिः पापवाचकम्।
कटते नाशनार्थत्वात्पापहा वेंकटेश्वरः ।।१।।
यो भक्तरक्षणार्थाय विष्णुर्वैकुंठवास्ययं।
शेषाचले महालक्ष्म्या सह तिष्ठति वेंकटः ।।२।।
चतुर्बाहुरुदारांगो निजलांछनलांछितः।
वेंकटेश इति ख्यातो देवः पद्मावतीप्रियः ।।३।।
शेषाचलं महत्तुंगं सर्वसंपत्समन्वितम्।
वैकुंठतुल्यमकरोच्छ्रीनिवासः स नोऽवतु ।।४।।
यद्दर्शनार्थमखिला ऋषियोगिसुरादयः।
आयान्ति परया भक्त्या सपत्नीकाश्च सानुगाः ।।५।।
विशेषादाश्विने मासे महोत्सवदिदृक्षवः।
भक्तानुकंपी भगवान्वेंकटेशः स नोऽवतु ।।६।।
स त्वं मां पाहि देवेश लक्ष्मीश गरुडध्वज।
सर्वापत्तिविनाशाय प्रसन्नो भव सर्वदा ।।७।।
प्रसीद लक्ष्मीरमण प्रसीद प्रसीद शेषाद्रिशय प्रसीद।
दारिद्र्यदुःखौघभयं हरंतं तं वेंकटेशं शरणं प्रपद्ये ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीवेंकटेशस्तोत्रं संपूर्णम्।।

४५.
गद्यपद्यात्मकं रामकृष्णचरितम्।।

पृथिवीभरपरिहृत्यै सुरवरसंप्रार्थितोऽत्र भूमितले।।
नृरूपेण तमोनुद्वंशे सकलोऽप्यवातरद्विमले ।।१।।
पितृबन्धमोचकोऽभूद्यः स्वोत्पत्त्या प्रदर्श्य निजरूपम्।।
प्राक्स्मृत्यै स पितृभ्यां तदनुमतं स्वीचकार सद्रूपम् ।।२।।
नीता गुरुणान्यत्र च देवरिपून्हन्तुकाम एव पुरा।।
स्त्रीवधरूपां गणपतिपूजां चक्रे बभूव साऽपि वरा ।।३।।
शेषसहायो हतवानसुरान्यज्ञद्रुहो महावीरः।।
स्वमतं ततान यज्ञं द्विजदारानुद्दधार वरधीरः ।।४।।

(गद्यम्)*अथ स भगवान् क्षत्ररूपेणावतीर्णस्तमोऽनुत्कुलभूषणो विप्रवरेण नीतो निजपूर्वपत्नीपरिणयं चिकीर्षुर्न केनाप्युत्थापितं न नमितं च राजाभिमानचापं लीलयैवादाय सहसैव बभंज ॥५॥*

कुमारशापेन वैकुण्ठादपि पतितं नीचतां गतमात्मानं वृणानं राजानं समागतमालोच्य पूर्वं म्लायितवदनापि पद्मसदना हृष्टवदना सती स्वयमेव स्वपतिं वृतवती ॥६॥

वव्रे श्रियं स विजयश्रिया स्वभागं जहार मृगप इव॥
हृष्टभ्रातयुतः स प्रतस्थ ईशः प्रभुः कृतार्थ इव ॥७॥

(गद्यम्)*अथ ससैन्यकः सभ्रातृकः सपरिग्रहो भगवान् स्वराष्ट्रं प्रयास्यन्मेघगंभीरया वाचा गर्जन्तं पृष्ठत आगतं द्विषन्तं निर्जित्य विजयी सन्स्वनगरं प्राविशत् ॥८॥*

ईदृग्गुणा यस्य न वर्णितुं यान् शेषोऽपि शक्तः क कथा परेषाम्॥
स बद्धसेतुर्जितदेववैरिर्नाथो रघूणामथवा यदूनाम ॥९॥

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीरामकृष्णचरितं संपूर्णम्॥

४६.
श्रीमुरलीधरगोपालाष्टकम्॥

नमामि गोपिकाकान्तं द्विभुजं मुरलीधरम्।
शोणाधरं गिरिधरं भक्तदुःखहरं हरिम् ॥१॥
सतोयमेघद्युतिगर्वहारिस्फुरद्द्युतिः स्मर्तृभयापहारि॥
कृष्णाय भूम्ने कमलावराय नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय॥२॥
यो भूमिभारव्यपनुत्तयेऽत्र ब्रह्मादिदेवार्थित एव पुत्रः॥
बभूव भुव्यानकदुन्दुभेर्यो नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय ॥३॥
अपाययत्स्तन्यमिषाद्विषं या तस्यै ददौ मात्रुचितां गतिं यः॥
कारुण्यसिंधुर्निहितासुराय नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय॥४॥
गाश्चारयन्गोपकुमारयुक्तः सुरद्विषोऽहन्निजकार्यसक्तः॥
भक्तप्रियो यो दिविषिद्वराय नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय॥५॥
यद्वेणुशब्दश्रवणेन सद्यो ह्यचेतनं चेतनतां परं च॥
तथान्यभावं प्रगतं पराय नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय ॥६॥
व्याजेन भर्तृत्वमितं विवर्णं त्यक्त्वा सती दग्धतनुर्बभूव॥

वेणुर्यदोष्ठामृतभाक्पराय नमोऽस्तु तस्मै मुरलीधराय ।।७।।
गोपालाय नमस्तुभ्यमपराधान्क्षमस्व मे।।
कृपां कुरु दयासिन्धो सर्वान्कामान्प्रपूरय ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीमुरलीधरगोपालाष्टकम्।।

४७

श्रीरेणुकास्तोत्रम्

ऐंद्र्यादिवंदितपदे वरदेऽभीष्टकामदे ।।
कामदेवार्चितेऽनंते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।१।।
एकवीरे निजाधारे रुचिरे सज्जनादरे ।।
उदारे रेणुसंजाते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।२।।
करुणारससंपूर्णे नयने सुस्मितानने ।।
शोभने पाहि नोभीते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।३।।
वीरमातर्महादेवि त्वदन्या कापरा भुवि ।।
तारिणी दुर्गतोऽनंते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।४।।
राममातर्महामाये जमदग्निप्रियेऽभये ।।
विजये वेदविनुते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।५।।
यैरर्चिते तव पदे ते धन्याः परमे पदे ।।
निहितास्ते सुरनुते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।६।।
न त्वदन्या गतिर्देवि परमा खलु शांभवी ।।
भुक्तिमुक्तिप्रदे शांते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।७।।
मः केशवेश्वराश्चापि सृष्टिस्थित्यंतकारिणः ।।
प्रसादादेव तेऽनंते रेणुकेऽम्ब नमोऽस्तु ते ।।८।।
जगदंब नमोऽस्तु रेणुके परिपाहीश्वरि नः सुभावुके ।।
जयलाभयशःप्रदे मुदे स्तुतिरेषास्तु तवाखिलार्थदे ।।९।।
नावाहनं नार्चनपद्धतिं ते जाने न भक्तिं त्वयि मे भवांतके ।।
अथापि मां त्वं कुलदेवि भक्तकुलोद्भवं पाह्यपि चार्थसक्तम्।।१०।।
मातापुरनिवासिन्याः श्रीदेव्याः स्तोत्रमुत्तमम् ।।
यः पठेत्प्रयतो भक्त्या सर्वान्कामान्स आप्नुयात् ।।११।।

।। इति श्री प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीरेणुकास्तोत्रं संपूर्णम् ।।

४८
तुलजापुरवासिनीस्तोत्रम्

नमोऽस्तु ते महादेवि शिवे कल्याणि शाम्भवि ।
प्रसीद वेदविनुते जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।१।।
जगतामादिभूता त्वं जगत्त्वं जगदाश्रया ।
एकाप्यनेकरूपाऽसि जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।२।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां हेतुभूते मुनिस्तुते ।
प्रसीद देवविनुते जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।३।।
सर्वेश्वरि नमस्तुभ्यं सर्वसौभाग्यदायिनि ।
सर्वशक्तियुतेऽनन्ते जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।४।।
विविधारिष्टशमनि त्रिविधोत्पातनाशिनि ।
प्रसीद देवि ललिते जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।५।।
प्रसीद करुणासिन्धो त्वत्तः कारुणिका परा ।
यतो नास्ति महादेवि जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।६।।
शत्रून्जहि जयं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ।
भयं नाशय रोगांश्च जगदम्ब नमोऽस्तु ते ।।७।।
जगदम्ब नमोऽस्तु ते हिते जय शम्भोर्दयिते महामते ।
कुलदेवि नमोऽस्तु ते सदा हृदि मे तिष्ठ यतोऽसि सर्वदा ।।८।।
तुलजापुरवासिन्या देव्याः स्तोत्रमिदं परम् ।
यः पठेत्प्रयतो भक्त्या सर्वान्कामान्स आप्नुयात् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं
श्रीतुलजापुरवासिन्या देव्याः स्तोत्रं संपूर्णम्।।

४९.
श्रीदेवीस्तोत्रम्

शुम्भनिशुम्भलुलायमुखघ्नी
या मघवन्मुखलेखभयघ्नी।।
सन्मतिदे निजभीतिविनिघ्नी
सद्गतिदेशकला भवनिघ्नी ।।१।।

सा त्वमयीश्वरि शर्म विधेहि
स्वे मयि धीश्वरि वर्म च देहि।।
स्वीयकटाक्षनिरीक्षणरूपं
येन भवेदवितं निजरूपम् ।।२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं देवीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं

श्रीअन्नपूर्णास्तोत्रम्।।

श्री देवि दर्शनीयेंऽशा ऐंद्र्याद्या अंबिके तव।।
भव्ये दत्ताऽभये ताभि -हीं बीजे नतानव ।।१।।
गत्यै मात्रे नमस्तेऽस्तु श्रीं गायै पूर्ण संविदे।।
वस मे योगिनि स्वांते क्लीं मयेऽर्णेश्वरेश्वरी ।।२।।
दक्षे सहस्त्रवक्त्रस्ते न वेत्ति स कलान्गुणान्।।
वदेत्कोरिष्टदे सर्वान् मोक्षसंदात्रि ते गुणान् ।।३।।
धूताद्ये कृपया पाहि भगवत्पूज्य पादुके।।
तमः पूष्ण इवाविद्या गतापर्णे तवेक्षणात् ।।४।।
पतिता उद्धृतास्ते हि वरदे शं करप्रिये।।
दया जन्महरा चेत्ते तिष्ठेद्धि कथमावृतिः ।।५।।
कस्ते चित्तार्तिहे वेत्ता मान्येऽमरमनोऽतिगे।।
मम ज्ञानं कियत्प्राज्ञि हे शंभु प्राणवल्लभे ।।६।।
लसद्वेदनुते द्वास्थ श्ववद्गणय मामुमे।।
भ्रमप्रदार्थवादा येऽरिप्राया वञ्चितोऽस्मि तैः ।।७।।
मर्त्योऽर्भो य इहांबाया अंके संल्लभतेऽर्थितम्।।
रक्षिता कश्च मे ह्यार्ये न तेऽर्भोऽभेददर्शिनि ।।८।।
वासना मुक्तिकृद्देवि पूर्णविज्ञानदायिनी।।
सुखदे नित्यमांगल्येऽर्णेशे ध्यानमुपाविश ।।९।।
देवा अर्दित शांत्यर्थमलं ते वै त्वदीरिताः।।
वासनागंधो मे नास्तु मानादेरार्तिदोऽत्र यः ।।१०।।
नंदिनी बलिनी ब्राह्मी भिक्षाभाग्यविवर्धिनी।।
दयाब्धिरोजस्विनीड्या लक्ष्मीस्त्वं सिद्धिरूपिणी ।।११।।
सत्येऽस्यंबा कृपां भोऽभिषिञ्चात्र ध्यधिपालके।।
रक्ष्यो बालः स्वको मात्रा तत्त्वतोऽर्थं वदामि ते ।।१२।।

स्वल्पज्ञोऽपि शठोऽदांतो मंदो वाऽभिमतोऽपि वा।।
तीव्रमाशापरो वाऽयं न चोपेक्षां शिवेऽर्हति ।।१३।।
भिया न चोक्तवान् शब्दान्देवेङ्ये देहि कांक्षितम्।।
क्षुच्छांत्यै ज्ञानभिक्षान्नं हितज्ञे हितमर्पय ।।१४।।
कृपयाऽनस्तमितया देहि ते चरणे रतिम्।।
तपोदे सादरं याचे हितं मे पारदे कुरु ।।१५।।
स्तवे तेंऽग ह्यशक्तं मां स्वान्ते शर्वप्रिये स्मर।।
वर्ये वरः स एवाथ्यो हार्दज्ञेऽतिथिवल्लभे ।।१६।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं अन्नपूर्णास्तोत्रं संपूर्णम्।।

श्री	देवि	द	र्शनीयेंऽशा	ऐं	द्र्याद्या	अं	बिके तव।।
भ	व्ये द	त्ता	भये ताभि	-ह्रीं	बीजे	न	तानव।।१।।
ग	त्यै मा	त्रे	नमस्तेऽस्तु	श्रीं	गायै	पू	र्ण संविदे।।
व	स मे	यो	गिनि स्वांते	क्लीं	मयेऽ	र्णे	श्वरेश्वरी।।२।।
द	क्षे स	ह	स्त्रवक्त्रस्ते	न	वेत्ति	स	कलान्गुणान्।।
व	देत्को	रिः	ष्टदे सर्वान्	मो	क्षसं	दा	त्रि ते गुणान्।।३।।
धू	ताद्ये	कृ	पया पाहि	भ	गवत्	पू	ज्य पादुके।।
त	मः पू	ष्ण	इवाविद्या	ग	ताप	र्णे	तवेक्षणात्।।४।।
प	तिता	उ	द्धृतास्ते हि	व	रदे	शं	करप्रिये।।
द	या ज	न्म	हरा चेत्ते	ति	ष्ठेद्धि	क	थमावृतिः।।५।।
क	स्ते चि	त्ता	र्तिहे वेत्ता	मा	न्येऽम	र	मनोऽतिगे।।
म	म ज्ञा	नं	कियत्प्राज्ञि	हे	शंभु	प्रा	णवल्लभे।।६।।
ल	सद्वे	द	नुते द्वास्थ	श्व	वद्ग	ण	य मामुमे।।
भ्र	मप्र	दा	र्थवादा येऽ	रि	प्राया	व	ञ्चितोऽस्मि तैः।।७।
म	त्योऽर्भो	य	इहांबाया	अं	के सं	ल्ल	भतेऽर्थितम्।।
र	क्षिता	कः	च मे ह्यार्ये	न	तेऽर्भोऽ	भे	ददर्शिनि।।८।।
वा	सना	मु	क्तिकृद्देवि	पू	र्णवि	ज्ञा	नदायिनी।।
सु	खदे	नि	त्यमांगल्येऽ	र्णे	शेध्या	न	मुपाविश।।९।।

दे	वा अ	र्दि	त शांत्यर्थं	म	लं ते	वै	त्वदीरिताः।।
वा	सना	गं	धो मे नास्तु	मा	नादे	रा	र्तिदोऽत्र यः।।१०।।
नं	दिनी	ब	लिनी ब्राह्मी	भि	क्षा भा	ग्य	विवर्धिनी।।
द	याब्धि	रो	जस्विनीड्या	ल	क्ष्मीस्त्वं	सि	द्धिरूपिणी।।११।।
स	त्येऽस्यं	बा	कृपां भोऽभि	षि	ञ्चात्र	ध्य	धिपालके।।
र	क्ष्यो बा	लः	स्वको मात्रा	त	त्त्वतोऽ	र्थं	वदामि ते।।१२।।
स्व	ल्पज्ञोऽ	पि	शठोऽदांतो	मं	दो वाऽ	भि	मतोऽपि वा।।
ती	व्र मा	शा	परो वाऽयं	न	चोपे	क्षां	शिवेऽर्हति।।१३।।
भि	या न	चो	क्तवान्शब्दा	न्दे	वेड्ये	दे	हि कांक्षितम्।।
क्षु	च्छांत्यै	ज्ञा	नभिक्षान्नं	हि	तज्ञे	हि	तमर्पय।।१४।।
कृ	पयाऽ	न	स्तमितया	दे	हि ते	च	रणे रतिम्।।
त	पोदे	सा	दरं याचे	हि	तं मे	पा	रदे कुरु।।१५।।
स्त	वे तेंऽ	ग	ह्यशक्तं मां	स्वा	न्ते श	र्व	प्रिये स्मर।।
व	र्ये व	रः	स एवार्थ्यो	हा	र्दज्ञेऽ	ति	थिवल्लभे।।१६।।

अनसूयास्तोत्रम्।।

पतिव्रताशिरोरत्नभूता सुदंरविग्रहा।।
सुचरित्रा दिव्यतेजा सर्वलोकनमस्कृतः ।।१।।
विष्णुप्रपौत्री कपौत्री सती कर्दमपुत्रिका।।
देवहूतिसमुत्पन्ना सुमुखी कपिलस्वसा ।।२।।
अत्रिपत्नी महाभागा दयाक्षान्त्यादिभूषिता।।
अनसूया वेदगेया निजधर्मजिताखिला ।।३।।
श्रीदत्तात्रेयजननी चंद्रमाता मनस्विनी।।
दुर्वासोजनयित्रीशा जगत्संकटवारिणी ।।४।।
चतुर्विंशतिनामानि मंगलानि पराणि च।।
पावन्यान्यनुसूयाया दत्तमातुः पठेन्नरः ।।५।।
त्रिकालमेककालं वा श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।।
तस्य धर्मे रुचिर्दत्ते भक्तिमुक्ति क्रमाद्भवेत् ।।६।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं अनसूयास्तोत्रं संपूर्णम्।।

५२.
सरस्वतीस्तोत्रम्।।

वाञ्छाधिकेष्टफलदाननिबद्धदीक्षा।
वाक्चातुरीविधुतकेलिकुलाभिमाना।।
वागीशविष्णुभवपूजितपादपद्मा।
वाग्जाड्यदास्तु भवतां वचसां सवित्री ।।१।।
शृंगाद्रिवासनिरता वरतुंगभद्रा-।
तीरप्रचाररसिका कलिकल्मषघ्नी।।
कीलालजातभवमोदसुखाब्धिराका।
वाग्जाड्यदास्तु भवतां वचसां सवित्री ।।२।।
कल्याणशैलधनुषः सहजा कृपाब्धि-।
ईताम्बुजात्तकजपुस्ककीटमाला।।
पद्मोद्भवादिमवृषालिरुपात्तदेहा।
वाग्जाड्यदास्तु भवतां वचसां सवित्री ।।३।।
वैराग्यदाननिरता नतमस्करीशा।
भोगीन्द्रगर्वविनिवारणदक्षवेणी।।
आम्नायशीर्षततिगेयनिजापदाना।
वाग्जाड्यदास्तु भवतां वचसां सवित्री ।।४।।
स्वान्तानन्दनिमग्नस्वान्तां प्रकरोतु सन्ततं कृपया।
यदुनन्दन[१]सुख[२]वाणी[३] वाणी वीणालसत्कराम्भोजा ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं सरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१.वासुदेव २.आनंद. ३. सरस्वती

५३.
गंगास्तोत्रम्।।

गंगे दर्शय ते रूपं मुक्तिदं मुनिचिंतितम्।।
गायत्तारिणि ते दृष्ट्या च्यवेत्को निजरूपतः ।।१।।
गंगे त्रेधाऽघहंत्रीति ते कीर्ति र्दिक्षु विस्तृता।।
गेया योगिमुनिध्येया सदा त्वं गंग आधिहे ।।२।।
तिष्येंऽहस्तरणं मातर्वरिष्ठे बत नान्यतः।।
यो वैरिः कामसंज्ञो मे पाह्यतो रोषहेतुतः ।।३।।

ब्रूते कृत्स्न श्रुतं त्रात्री पेयोदाबात्मिकेति यत्।।
या तृष्णया मतिर्भ्रष्टाऽऽ भ्योद्भ्यो बालः पुनातु ताम् ।।४।।
द्योत उत्कृष्ट एवास्तु विष्णुजेऽपिहितान्तरे।।
जगन्मतिक्षालके भूष्णुस्सन्स्त्वां शान्तिदेर्थये ।।५।।
नास्मत्तारक एवान्यो लोके वाचो मृषा न मे।।
नांतोऽनन्तेऽत्र मेऽघस्य कं ब्रूयां ज्ञानदेऽत्र तु ।।६।।
शत्रून्दमय मे देविसकलानमृतप्रदे।।
तैर्हि दान्तो विमुक्तः स्यां गतैनाः साध्व्यसंशयः ।।७।।
रक्ष यद्यपि पापोऽहं च्छन्दोऽर्च्ये गवि जाह्नवि।।
पिता कः काऽपराम्बा मे तिष्ये तारः परश्च कः ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं गंगास्तोत्रं संपूर्णम्।।

गं	गे	द	र्शय ते रूपं	मु	क्तिदं	मु	निचिंतितम्।।
गा	य	त्ता	रिणि ते दृष्ट्या	च्य	वेत्को	नि	जरूपतः।।१।।
गं	गे	त्रे	धाऽघहंत्रीति	ते	कीर्ति	र्दि	क्षु विस्तृता।।
गे	या	यो	गिमुनिध्येया	स	दा त्वं	गं	ग आधिहे।।२।।
ति	ष्ठेंऽ	ह	स्तरणं मात	र्व	रिष्ठे	ब	त नान्यतः।।
यो	वै	रिः	कामसंज्ञो मे	पा	ह्यतो	रो	ष हेतुतः।।३।।
ब्रू	ते	कृ	त्स्नश्रुतं त्रात्री	पे	योदा	बा	त्मिकेति यत्।।
या	तृ	ष्ण	या मतिर्भ्रष्टाऽऽ	भ्यो	द्भ्यो बा	लः	पुनातु ताम्।।४।।
द्यो	त	उ	त्कृष्ट एवास्तु	वि	ष्णुजेऽ	पि	हितान्तरे।।
ज	ग	न्म	ति क्षालके भू	ष्णु	स्सन्स्त्वां	शा	न्तिदेर्थये।।५।।
ना	स्म	त्ता	रक एवान्यो	लो	के वा	चो	मृषा न मे।।
नां	तोऽ	न	न्तेऽत्र मेऽघस्य	कं	ब्रूयां	ज्ञा	नदेऽत्र तु।।६।।
श	त्रू	न्द	मय मे देवि	स	कला-	न	मृतप्रदे।।
तै	र्हि	दा	न्तो विमुक्तः स्यां	ग	तैनाः	सा	ध्व्यसंशयः।।७।।
र	क्ष	य	द्यपि पापोऽहं	च्छ	न्दोऽर्च्ये	ग	वि जाह्नवि।।
पि	क्षा	कः	काऽपराम्बा मे	ति	ष्ये ता	रः	परश्च कः।।८।।

५४.
यमुनास्तोत्रम्।।

यमुना शमनामरस्वसा व्रजतीवास्ति निजस्वसा।।
गुरुधाम दिदृक्षुणायनेत्र मयालोकि हि दक्षिणायन ` ।।१।।
कृष्णभर्तृपरिरम्भणेन या कृष्णभा किमभवत्तथापि वा।।
कृष्णतां गतमघेन मानवं कृष्णतां नयति रातु साऽभवम् ।।२।।
आदित्यपुत्री तुहिनाद्रिपुत्री कलिन्दपुत्रीति जगत्प्रतीता।।
स्वानुद्दधारापि यमेन नीतान् सा पातु भक्तान् यमुनाघभीतान्।।३।।
प्रालेयाद्रिर्निर्गता कृष्णकान्ता नानादेशान् या पुनानाप्यकान्ता।।
सस्नौ तोये विष्णुपद्या विशुद्धा तन्माहात्म्यं दर्शयन्ती किमद्धा।।४।।
यस्यातटे संनिकटे सदैवः श्रीकृष्ण आस्ते रतिकृत्सदैव।।
तत्कंठगश्रीतुलसीसुगन्धिसुवासितां साऽवतु सूर्यजाता ।।५।।
पराशरात्सत्यवत्यां जातो यत्र महायशाः।।
पाराशर्यो वासुदेवपाराशर्योऽजसान्वितः ।।६।।
मार्गे कृष्णचतुर्थ्यां तु मार्गे कृष्णप्रियां तु ताम्।।
ददर्श सार्कतनया विनयान्पातु संनया ।।७।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं यमुनास्तोत्रं संपूर्णम्।।

५५.
सरस्वतीनदीस्तोत्रम्।।

वाग्वादिनी पापहरासि भेदचोद्यादिकं मद्धर दिव्यमूर्ते।।
सुशर्मदे वन्द्यपदेऽस्तुवित्तादयाचतेऽहो मयि पुण्यपुण्यकीर्ते ।।१।।
देव्यै नमः कालजितेऽस्तु मात्रेऽयि सर्वभा अस्यखिलार्थदे त्वं।।
वासोऽत्र ते नः स्थितये शिवाया त्रीशस्य पूर्णस्य कलासि सा त्वं।।२।।
नंदप्रदे सत्यसुतेऽभवा य सूक्ष्मां धियं सम्प्रति मे विधेहि।।
दयस्व सारस्वजलाधिसेविनृलोकपेरम्मयि संनिधेहि ।।३।।
सत्यं सरस्वत्यसि मोक्षसद्म तारिण्यसि स्वस्य जनस्य भर्म।।
रम्यं हि ते तीरमिदं शिवाहे नांगीकरोतीह पतेत्स मोहे ।।४।।
स्वभूतदेवाधिहरेस्मि वा अचेता अपि प्रज्ञ उपासनात्ते।।
तीव्रव्रतैर्जेतुमशक्यमेव तं निश्चलं चेत इदं कृतं ते ।।५।।

विचित्रवाग्भिर्ज्ञगुरूनसाधू तीर्थाश्रयां तत्त्वत एव गातुम्।।
रजस्तनुर्वा क्षमतेध्यतीता सुकीर्तिरायच्छतु मे धियं सा ।।६।।
चित्रांगि वाजिन्यघनाशिनीयमसौ सुमूर्तिस्तव चाम्मयीह।।
तमोघहं नीरमिदं यदाधीतीतिघ्न मे केऽपि न ते त्यजन्ति ।।७।।
सद्योगिभावप्रतिमं सुधाम नांदीमुखं तुष्टिदमेव नाम।।
मंत्रो व्रतं तीर्थमितोऽधिकं हि यन्मे मतं नास्त्यत एव पाहि ।।८।।
त्रयीतपोयज्ञमुखा नितांतं ज्ञं पांति नाधिघ्न इमेऽज्ञमार्ये।।
कस्त्वल्पसंज्ञं हि दयेत यो नो दयार्हयार्योज्झित ईशवर्ये ।।९।।
समस्तदे वर्षिनुते प्रसीद धेह्यस्यके विश्वगते करं ते।।
रक्षस्व सुष्टुत्युदिते प्रमत्तः सत्यं न विश्वान्तर एव मत्तः ।।१०।।
स्वज्ञं हि मां धिक्कृतमत्र विप्ररत्नैर्वरं विप्रतरं विधेहि।।
तीक्ष्णद्युतेर्याऽधिरुगिष्टवाचोऽस्वस्थाय मे रात्विति ते रिरीहि ।।११।।
स्तोतुं न चैव प्रभुरस्मि वेद तीर्थाधिपे जन्महरे प्रसीद।।
त्रपैव यत्सुष्टुतयेस्त्यपायात् सा जाड्यहातिप्रियदा विपद्भ्यः ।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीसरस्वतीनदीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

५६.
श्रीगोदावरीस्तोत्रम्।।

वासुदेवमहेशात्मकृष्णावेणीधुनीस्वसा।
स्वसाराद्या जनोद्धर्त्री पुत्री सह्यस्य गौतमी ।।१।।
सुरर्षिवंद्या भुवनेऽनवद्या याद्यात्र नद्याश्रितपापहंत्री।
देवेन या कृत्रिमगोवधोत्थदोषापनुत्यै मुनये प्रदत्ता ।।२।।
वार्युत्तमं ये प्रपियन्ति मर्त्या यस्याः सकृत्तेऽपि भवन्त्यमर्त्याः।।
नंदंत ऊर्ध्वं च यदाप्लवेन नरा दृढेनैव सवप्लवेन ।।३।।
दर्शनमात्रेण मुदा गतिदा गोदावरी वरीवर्ती।।
समवर्तिविहायद्रोधासी मुक्तिः सती नरीनर्ति ।।४।।
रम्ये वसतामसतामपि यत्तीरे हि सा गतिर्भवति।।
स्वच्छान्तरोर्ध्वरेतोयोगिमुनीनां हि सा गतिर्भवति ।।५।।
तीव्रतापप्रशमनी सा पुनातु महाधुनी।।
मुनीढ्या धर्मजननी पावनी नोद्यताशिनी ।।६।।

सदा गोदार्तिहा गंगा जंतुतापापहारिणी।।
मोदास्पदा महाभंगा पातु पापापहारिणी ।।७।।
गोदा मोदास्पदा मे भवतु वरवता देवदेवर्षिवन्द्या।।
पारावाराग्र्यरामा जयति यतियमीट्सेविता विश्ववित्ता ।।८।।
पापाद्या पात्यपापा धृतिमतिगतिदा कोपतापाभ्यपघ्नी।।
वंदे तां देवदेहां मलकुलदलनीं पावनीं वंद्यवंद्याम् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं गोदाष्टकं संपूर्णम्।।

५७.

गोदावरीस्तोत्रम्।।

या स्नानमात्राय नराय गोदा गोदानपुण्याधिदृशिः कुगोदा।।
गोदासरैदा भुवि सौभगोदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।१।।
या गौपवस्तेर्मुनिना हृताऽत्र या गौतमेन प्रथिता ततोऽत्र।।
या गौतमीत्यर्थनराश्वगोदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।२।।
विनिर्गता त्र्यंबकमस्तकाद्या स्नातुं समायान्ति यतोऽपि काद्या।।
काऽऽद्याधुनी दृक्सततप्रमोदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।३।।
गङ्गोद्गतिं राति मृताय रेवा तपःफलं दानफलं तथैव।।
वरं कुरुक्षेत्रमपि त्रयं या गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।४।।
सिंहे स्थिते वागधिपे पुरोधः सिंहे समायान्त्यखिलानि यत्र।।
तीर्थानि नष्टाखिललोकखेदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।५।।
यदूर्ध्वरेतोमुनिवर्गलभ्यं तद्यत्तटस्थैरपि धाम लभ्यम्।।
अभ्यन्तरक्षालनपाटवोदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।६।।
यस्याः सुधास्पर्धि पयः पिबन्ति न ते पुनर्मातृपयः पिबन्ति।।
यस्याः पिबन्तोऽम्ब्वमृतं हसन्ति गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।७।।
सौभाग्यदा भारतवर्षधात्री सौभाग्यभूता जगतो विधात्री।।
धात्री प्रबोधस्य महामहोदा गोदावरी साऽवतु नः सुगोदा ।।८।।
समाप्लुता मया सा या सिषेवे पूर्वसागरम्।।
सप्तवक्त्रैस्तपः कृष्णसप्तम्यां सति वासरे ।।९।।
सप्तसुप्तेरसुप्ता सा गुप्ता सागरमध्यतः।।
गोदावरी वरीवर्ति न निद्राति कदाचन ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं गोदावरीस्तोत्रम संपूर्णम्।।

५८.
श्रीनर्मदालहरी.

नर्मदे हरसंभूते हरलिंगार्चनादृते। हरलिंगाञ्चिततटे जयाघं नर्मदे हर।।

नमः प्रातर्मातर्गिरिशदुहितर्नर्मद उत।
क्षपायां रेवे ते नम इतमते मेकलसुते।।
नमो नित्यं सत्यं हि त उदकमत्यंतकमकम्।
हरत्याधिं सा त्वमखिलविषहे मेऽर्पय सुखम् ।।१।।
महेशाङ्गोद्भूता सुरवरनराणामभिमता।
युता सिद्धैर्याता प्रसभमिव पाश्चात्यजलधिम्।।
वृता भीमेनैषा हृतभजकदोषा वरवृषा।
सुभूषा सद्वेषा रुचिरवपुषा भात्यतिरुषा ।।२।।
तटे यस्यास्तप्त्वा तप उपरिगैर्दुश्चरमरं।
वरं ह्यत्रेः पत्नी परममनसूया गतभया।।
स्वपुत्रत्वेनैव त्रिभुवनसमाराध्यमभवं।
समापास्मद्दैवं क इह सरितं तां तु न नमेत् ।।३।।
प्रयान्तीं सिन्धुं या प्रतिहतगतिर्विन्ध्यपदतो।
महावेगाऽभङ्गा सकलमलभङ्गा वरभगा।।
नगान्भित्वानेकानपि विविधलोकान्स्वबलतः।
पुनातीयं रेवा जगति वरभावाऽहृतभवा ।।४।।
प्रसिद्धाऽऽस्ते यस्याजनिरमरकण्ठेऽमरवृते।
मते नाभिः सिद्धेश्वरपुर उतासौ भृगुपुरे।।
परे सिन्धौ लीना जगति मलिनानां सुमतिदा।
समुद्धर्त्री भर्त्री निजभजकलोकस्य गतिदा ।।५।।
सरस्वत्याः सत्या जलमिह पुनाति त्रिदिनतः।
स्म कालिन्द्या नद्या अपि च सलिलं सप्तदिनतः।।
महाभङ्गा गङ्गाखिलदुरितभङ्गा सपदि सा।
महाभावा रेवा कथमपि हि दृष्ट्यैव सहसा ।।६।।
स्वभावादासिन्धोरियमचलजाभास्ति सुलभा।
त्रिषु स्थानेष्वेषा हृतमलिनदोषा न सुलभा।।

नगर्यामोङ्काराभिधपशुपतेरुत्तरगति-।
र्युता वौराभिख्येऽपि च भृगुमुनेः क्षेत्र उशति ॥७॥
पुनन्त्यन्या मान्या अपि जगति गङ्गादिसरितः।
प्रयागादिस्थाने महति न हि सर्वत्र दुरितात्॥
इयं रेवा देवाधिपतिशिवसेव्योभयतटा।
तटे यत्र क्वापि स्वकमिह पुनात्याजलनिधेः ॥८॥
त्रिशूलाङ्कान्यच्छान्यगणितविमानानि त उप-।
र्युपर्यस्याः कूलं सुविमलमुपादाय सततम्॥
स्थिताः शंभोर्दूता मृतमिह तु नेतुं शिवपुरं।
वरं तेषामुच्चैरहमहमिकाशब्द उदितः ॥९॥
बहिःशब्दात्तस्मात्प्रविगलितधैर्या यमभटाः।
मृतान्नेतुं प्राप्ता अपि सपदि ते वेपितहृदः॥
अधीरा धीरा द्राक् तत उत परावृत्य सजवाः।
स्ववासं संजग्मुः खलु तत इतः को नरकभाक् ॥१०॥
प्रभावोऽस्या मृत्युंजयदुहितुरेवं हि सरितो।
यतोऽतोऽसौ रेवा नृमरणभवान्तास्ति विदिता॥
न तां कः सेवेतानुपदमृतभीतिर्हतमतिः।
समानां तापानामपि च दुरितानां प्रशमनीम् ॥११॥
यदीयाम्बुस्पृष्टः स्पृशति गतियोगेन पवनो।
मनोहृद्यं यं तं तमपि स पुनातीति महिमा॥
प्रतीतो यस्याः सा जगति गतिदाऽसावभयदा।
सदा सक्तान्युक्तान्किमुत भजतामुद्धरति नो ॥१२॥
यदीयं पानीयं सदमृतमयं चित्सुखमयं।
सुपेयं चायुष्यं मतिदमुत वर्चस्यमभयम्॥
यशस्यं चक्षुष्यं विहितविजयं स्वर्ग्यमलयं।
सुभव्यं सद्गेयं सकलजगदारोग्यविजयम् ॥१३॥
सुरप्रार्थ्यं पथ्यं स्वयमिह च पूज्यं विजयते।
जगन्मान्यं धन्यं मलहृदिह लभ्यं तु नियतेः॥
नियोगात्सा रेवा नृभवदवदावार्तिशमनी।
मनीषीड्या पायादविरतमपायाद्वरधुनी ॥१४॥
नियम्यात्मानं ये विहितनियमाः सन्ततपरि-
क्रमं कुर्वन्त्यस्या अमलजलसेवैकनियमाः॥

सुपूतास्ते धन्या जगति बहुमान्याः परगतिं।
व्रजन्त्येवं रेवा जयति खलु शर्वाङ्गजनिता ।।१५।।
अये रेवे देवेडितगुणगणे मर्त्यतरणे।
क्षणेनापि स्नानात्परमगतिदाभीष्टवरदा।।
त्वमेवातो देवा अपि तव न चेच्छन्ति तव तटं।
परित्यक्तुं वक्तुं तव गुणगणान्कः प्रभुरिह ।।१६।।
यदीये सत्तोये हिमनगसुतागर्भगगणा-
धिपस्योत्कृत्यारं शिर इह सुरारिः स्वहितकृत्।।
महामायावी प्राक्षिपदपभयोऽतर्क्यमहिमे-
श्वरस्यात्माच्छीर्षाद्गतरुधिरसंस्पर्शवशतः ।।१७।।
ततोऽनन्ता आब्धेः स्मरहरसुतायास्तु सलिलेऽ-
मलेऽनन्ता जाता इह रुधिरभासः खलु शिलाः।।
अभूवन्गाणेशा अखिलमलसंक्षालनपरा।
वरापूज्या विघ्नक्षपणपटवस्तेऽपि वरदाः ।।१८।।
यदीये पानीये भृशममृतसंस्पर्धिजननि।
क्षपायां ते चोङ्कारेश्वरवरपुरात्पूर्वत उत।।
महोत्तुंगस्थानात्पतित उपलास्ते पशुपते-
र्भवन्त्याहो बाणाभिधपरमलिंगानि बहुशः ।।१९।।
महान्तस्ते बाणा अपि परमसूक्ष्माः कतिपयाः।
शुभा कर्पूराभाः शशधरकलाढ्याः कतिपयाः।।
परे केचिच्चित्रा अपि च निखिलास्तेऽत्र भजनात्।
गजारेः सायुज्यं ददत इति रेवाम्बुमहिमा ।।२०।।
एवंप्रभावे जय देवि रेवे, प्रसीद मे तेऽम्बु सदैव सेवे।।
श्रीनर्मदे देवि नमो नमस्ते श्रीशर्मदे सोमसुते नमस्ते ।।२१।।
अवतु विगतरोषास्मान्महासिंधुयोषा।
परिहृतनतदोषा या नमोमात्रतोषा।।
जयतु भजकपोषा सा स्रवन्ती विशेषा।
निरुपमतमभूषा मालिनी दिव्यवेषा ।।२२।।
सन्मानसस्वच्छसुदिव्यनीरा। नीरागयोग्याश्रितरम्यतीरा।।
धीरार्चिता नित्यमखण्डपूरा। सा रातु रेवेष्टमनंतसारा ।।२३।।
स्वभक्तवरदे सुरद्विषदभेद्यसद्वर्मदे।
सुदुर्गतिदकर्मदे हतगदेऽपि सद्धर्मदे।।

अये नदि न दीनतां व्रजसि कर्हिचिच्छर्मदे।
प्रसीद जनकामदे जय नमोऽस्तु ते नर्मदे ।।२४।।
यन्मूलेस्त्यमरेश्वरो विजयते श्रीसिद्धनाथस्तथा।
कावेरीपरिवेष्टितो गतिद ओंकारोऽपरे चामिताः।।
मध्येऽन्येऽपि च शूलपाणिसहिताः पाश्चात्यभागे स्थिताः।
सर्वे ते भजतामभीष्टफलदा वर्वर्ति सा नर्मदा ।।२५।।
(हारबन्धः)
हरपरमरये समस्तमघं मम
कुरु गुरुकरुणां समस्तमते मयि।।
खलबलदलने समस्तमनोमलम्।
हर दरमरमप्यमर्त्यमतेऽमले ।।२६।।
यस्य स्मृत्या च सद्यः कलिमलविलयो जायते भावुकानां।
यत्स्मृत्या स्मर्तृगामी भवभयहृदुपेत्यात्मदो भावुकानाम्।।
दत्तात्रेयस्य तस्य प्रशमितमनसः सद्वरीवर्ति मातुः।
स्थानं यस्यास्तटे सा विजयत उशती नर्मदा शर्मदा नः ।।२७।।
(अलंकारः)
कुष्टाद्यार्तोऽप्यरोगो भवति सदनसूयाश्रमे यत्तटे यन्।
मध्ये शुक्लादितीर्थान्यपि झटिति पुनन्त्युद्धरत्याशु या च।।
प्रेतश्राद्धेन नारायणबलित इतं दुर्गतिं मुक्तिदां तां।
रेवामस्तौदखेदां परमसुहितदां नर्मदां वासुदेवः ।।१।।

(गोमूत्रिकाबंध)
भवान्तकेऽभयं देहि तापं मे हर नर्मदे।।
भवात्मके नयं देहि पापं मे हर नर्मदे।।
जय जय शिवकन्ये नर्मदे शर्मदे त्वम्।
जय जय जनमान्ये धर्मदेऽधर्मदे त्वम्।।
जय जय सुवदान्ये धर्मदे कर्मदे त्वम्।
जय जय भुवि धन्ये भर्मदे वर्मदे त्वम्।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता श्रीनर्मदालहरी संपूर्णा।।

५९.
मन्त्रगर्भश्रीनर्मदास्तोत्रम्।।

वारिताऽनर्थसंघा या अनन्य नतमुक्तये।
सुष्टुशर्मनिदानायै नद्यै पुंमोहसंहृते ।।१।।
देवर्षि दानवेड्यायै सूक्ष्मवस्तुदृशे नमः।।
वाक्यार्थायै सोमपुत्र्यै यातनाऽनलशांतये ।।२।।
नंदायै नर्मदायै ते त्रिधाकर्मविशुद्धये।।
दयादमः स्थैर्यकर्त्र्यै संसिद्ध्यै देवतात्मने ।।३।।
सत्यसंप्राप्तिकारिण्यै भूत्यै संतुष्टिहेतवे।।
रम्यायै तत्त्वरूपिण्यै तपस्व्यभ्यं तरात्मने ।।४।।
स्वच्छ स्वर्नद्यधिस्वाम्बु दमित त्रासिभीतये।।
तीव्रशर्महृते पुंहृत्तापघ्न्ये हितकीर्तये ।।५।।
कृतापदाविमोक्षायै त्रेधाधर्मांगमूर्तये।।
तपोदा यै तपःसिद्ध्यै यज्ञांग्यै विषभीहृते ।।६।।
रेवायै नरतापघ्न्यै दिव्यायै षड्द्विषद्धृते।।
वासनामोक्षदक्षायै गंगायै सत्यकीर्तये ।।७।।
स्तुतायै नित्यदीप्तायै बलिसर्पददुद्धृते।।
तितिक्षु शिवसंधात्र्यै रत्यै चेतः समाधये ।।८।।
जय जय शिवकन्ये नर्मदे शर्मदे त्वम्।
जय जय जनमान्ये धर्मदेऽधर्मदे त्वम्।।
जय जय सुवदान्ये धर्मदे कर्मदे त्वम्।
जय जय भुवि धन्ये भर्मदे वर्मदे त्वम् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीनर्मदास्तोत्रं संपूर्णम्।।

वा	रिताऽ	न	र्थसंघा या	अ	नन्य	न	तमुक्तये।
सु	ष्टुश	र्म	निदानायै	न	द्यै पुं	मो	हसंहृते।।१।।
दे	वर्षि	दा	नवेड्यायै	सू	क्ष्मव	स्तु	दृशे नमः।।
वा	क्यार्था	यै	सोमपुत्र्यै	या	तनाऽ	न	लशांतये।।२।।
नं	दायै	न	र्मदायै ते	त्रि	धाक	र्म	विशुद्धये।।
द	या द	मः	स्थैर्यकर्त्र्यै	सं	सिद्ध्यै	दे	वतात्मने।।३।।
स	त्य सं	प्रा	प्तिकारिण्यै	भू	त्यै सं	तु	ष्टिहेतवे।।

र	म्यायै	त	त्वरूपिण्यै	त	पस्व्य	भ्यं	तरात्मने।।४।।
स्व	च्छ स्व	र्न	द्यधिस्वाम्बु	द	मित	त्रा	सिभीतये।।
ती	व्रश	र्म	हृते पुंह्व	त्ता	पघ्न्ये	हि	तकीर्तये।।५।।
कृ	ताप	दा	विमोक्षायै	त्रे	धाधर्	मां	गमूर्तये।।
त	पोदा	यै	तपःसिद्ध्यै	य	ज्ञांग्यै	वि	षभीहृते।।६।।
रे	वायै	न	रतापघ्न्यै	दि	व्यायै	ष	ड्द्विषद्धृते।।
वा	सना	मो	क्षदक्षायै	गं	गायै	स	त्यकीर्तये।।७।।
स्तु	तायै	नि	त्यदीप्तायै	ब	लिस	र्प	ददुद्धृते।।
ति	तिक्षु	शि	वसंधात्र्यै	र	त्यै चे	तः	समाधये।।८।।

जय जय शिवकन्ये नर्मदे शर्मदे त्वम्।
जय जय जनमान्ये धर्मदेऽधर्मदे त्वम्।।
जय जय सुवदान्ये धर्मदे कर्मदे त्वम्।
जय जय भुवि धन्ये भर्मदे वर्मदे त्वम्।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीनर्मदास्तोत्रं संपूर्णम्।।

६०.
श्रीक्षिप्रात्रिकम्।।

क्षिप्रामक्षिप्रदां क्षीप्राभीष्टदां क्षीप्रतारिणीं।।
क्षिप्रप्रसादनार्थं तां प्रपद्ये सुरवन्दिताम् ।।१।।
यत्तीरेऽवन्तिकाख्याऽऽस्ते महाकालाभिधेशितुः।।
राजधान्याधिका काश्या मृता यत्रामृतं गताः ।।२।।

चर्मण्वत्या युता याऽगात्पूर्वसागरमादरात्।।
प्रणता संमता देवैः क्षिप्रा देवी पुनातु माम् ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीक्षिप्रात्रिकं संपूर्णम्।।

६१.
वेत्रवतीस्तोत्रम्।।

वे त्रवत्या महानद्या गु णान्वक्तुं क ईशिरे।।
त्र पामवाप देवर्षि रु त्कये यत्स्तुतेरलम्।।१।।
व रदा वेत्रवत्येषा दे वर्षिनरसेविता।।
ती व्रतापाघशमनी व न्द्या नः पातु सर्वदा।।२।।
स्तु तिं कर्तुमनीशोऽहं द याब्धेऽत्र कलौ युगे।।
ति मिरघ्नी नमस्ते हृ त्ता पं हर सरिद्वरे।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीवेत्रवतीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

६२.
पयोष्णीत्रिकम्।।

पयोष्णिका पातु पयोधिमिष्टक्षीरा वरा सिन्धुषु याश्वभीष्टम्।।
फलं सकृत्स्नानत एव राति त्वा तां प्रपद्येवहि नानवद्ये।।१।।
यत्रर्णमोचनकमस्ति हि तीर्थवर्यं यत्सेवनेन सकलर्णनिवृत्तिरेव।।
यत्स्नानतो गतिमवापुरहो पिशाचाः
सर्वाघतोऽवतु सदाऽत्र पयोष्णिका सा ।।२।।
ताप्यन्विता हि सरिता प्रययौ समुद्रं
पाश्चात्यमिष्टफलदा सकलार्तिहन्त्री।।
त्रात्री समस्तदुरितादपि कामदात्री
सर्वाघतोऽवतु सदाऽत्र पयोष्णिका सा ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीपयोष्णित्रिकं संपूर्णम्।।

६३.
तापीस्तोत्रम्।।

छाया विवस्वद्दुहिता हितार्था पुरातनी त्वत्र धुनी कृतार्था।।
ययाऽऽस भूरन्यविभूषितापि तापीसरित्साऽवतु मां स्मृतापि ।।१।।

तपती पतिमाप्तुमुद्गता वरविंध्याद्रिपदान्महोन्नता।।
प्रययौ नवयौवनाञ्चिता जलधिं पश्चिमकं ह्यवञ्चिता ।।२।।
पुनानापि नानाजनानंहसोऽत्र पदं राति याति प्रशस्तं परत्र।।
यदीये प्रतीरेऽत्र पापी न तापी न कोपीयमस्मानवत्वत्र तापी ।।३।।
भुजंगप्रयातोपमा यद्गतिर्या मतिं नः पुनाना ददाना गतिं या।।
वरं पश्चिमाब्धिं सुखेनोपमेये हतत्वद्य तान् पाप्मनः सन्ति ये मे।।४।।
अवरजा वरजातिसुपूजिता द्युमणिजा मणिजातिविभूषिता।।
सुतपती तपती पतितान्नतावती सा यशसा पयसान्विता ।।५।।
या वारयत्याशु यदिन्द्रवज्रलेपोपमं पातकमाप्लवेन।।
प्लवेन यज्ञेन तथा गतिर्न यथा नदी राति सहाप्लवेन ।।६।।

जगति तपनशीला याहि तापी सुशीला,
चलति भुवि विशाला मुक्तिपानीयशाला।।
परिहृतजनकाला खेलदुच्चोर्मिमाला,
निखिलसुकृतपाला पातु नः सूर्यबाला ।।७।।
अये तापीहापि प्रशमितभये ते सुखमये,
सदा दत्तात्रेयो निवसति सतिप्रार्पितनये।।
न ये त्वां सेवन्ते त इह जनिभाजोऽत्र भजते,
गतिः सद्यो रासीत्यत ऋषिगणस्त्वां हि भजते ।।८।।
दत्तात्रेयादृतां तापीं पापिनिर्मुक्तिमष्टभिः।।
पद्यैस्तुष्टाव सुकृती वासुदेवसरस्वती ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं तापीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

६४.
श्रीवैन्यास्तोत्रम्.

वैन्यार्तिहाभया सिन्धुः पातु पापविनाशिनी।।
दैन्याधिहा दयासिन्धुर्जन्तुतापविनाशिनी।।१।।
वैन्याख्यभक्तेन समाहृतेयं नदी यद्यश ईशमेयम्।।
ध्येयं महद्भिः कविभिश्च गेयं पेयं पयोऽस्या प्रपुनाति सेयम्।।२।।
अये वैन्ये धन्ये सुकृतिजनमान्ये जय महा-
रयेऽजन्ये दैन्येर्तिहृदसि वदान्ये त्वमघहा।।

महाभंगे गङ्गेव नृदुरितभङ्गेह भवती
सती मर्त्योऽमर्त्योऽपि यदमृतपानेन भवति ।।३।।
वैन्याख्यगङ्गे जनतापभङ्गे प्रसीद मे देवि महातरंगे।।
पुनीहि मां सागस आर्तबंधो बन्धोच्छिदे ते सरिते नमोऽस्तु ।।४।।
वैन्ये दैन्यहृते नमोऽस्तु सरिते वेनाहृते सन्मते।।
सर्वं मानसिकं च वाचिकमघं द्राक्कायिकं मे हर।।
बाह्याभ्यान्तरशुद्धिकृत्त्वमसि यत्तन्मेऽम्ब दुर्वासना-
मुन्मूल्यार्पय पापतापशमनी श्रीदेवि सद्वासनाम् ।।५।।
वेणुवादनरताच्युताञ्चिता या पुरी पुरजितापि रञ्जिता।।
सन्ति यत्र विबुधा अनेकशः सन्ति विप्रसदनानि भूरिशः ।।६।।
तस्यां पद्मावतीपुर्यां वैन्यासंज्ञा महाधुनी।।
मधुनीरा विजयते जयतेजोयशप्रदा ।।७।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीवैन्यास्तोत्रं संपूर्णम्।।

६५.
श्रीतुंगाष्टकम्.

तुङ्गा तुङ्गतरङ्गवेगसुभगा गङ्गासमा निम्नगा
रोगान्ताऽवतु सह्यसंज्ञितनगाज्जातापि पूर्वाब्धिगा।।
रागाद्यान्तरदोषहृद्वरभगा वागादिमार्गातिगा
योगादीष्टसुसिद्धिदा हतभगा स्वङ्गा सुवेगापगा ।।१।।
स्वसा कृष्णावेणीसरित उत वेणीवसुमणी-
प्रभापूतक्षोणीचकितवरवाणीसुसरणिः।।
अशेषाघश्रेणीहृदखिलमनोध्वान्ततरणि-
र्दृढा स्वर्निश्रेणिर्जयति धरणीवस्त्ररमणी ।।२।।
दृढं बध्वा क्षिप्ता भवजलनिधौ भद्रविधुता
भ्रमच्चित्तास्त्रस्ता उपगत सुपोता अपि गताः।।
अधोधस्तान्भ्रान्तान्परमकृपया वीक्ष्य तरणिः
स्वयं तुङ्गा गङ्गाभवदशुभभङ्गापहरणी ।।३।।
वर्धा सधर्मा मिलितात्र पूर्वतो भद्रा कुमुद्वत्यपि वारुणीतः।।
तन्मध्यदेशेऽखिलपापहारिणी व्यालोकि तुङ्गाऽखिलतापहारिणी।।४।।

भद्रया राजते कीर्त्या या तुङ्गा सह भद्रया।।
संनिधिं सा करोत्वेतं श्रीदत्तं लघुसंनिधिम् ।।५।।
गङ्गास्नानं तुङ्गापानं भीमातीरे यस्य ध्यानम्।
लक्ष्मीपुर्या भिक्षादानं कृष्णातीरे चानुष्ठानम्।।
सिंहाख्याद्रौ निद्रास्थानं सेवा यस्य प्रीत्या ध्यानम्।
सद्भक्तायाक्षय्यं दानं श्रीदत्तास्यास्यास्तु ध्यानम् ।।६।।

(गोमूत्रिकाबंध)

तुंगापगा महाभंगा पातु पापविनाशिनी।।
रागातिगा महागंगा जंतुतापविनाशिनी ।।७।।

(हारबंधः)

हर परमरये समस्तमदामयान्
खलबलदलनेऽघमप्यमले मम।
हरसि रसरसे समस्तमनामलं
कुरु गुरुकरुणां समस्तमते मयि ।।८।।
वेगातुंगापगाघं हरतु रथरया देवदेवर्षिवंद्या
वारं वारं वरं यज्जलमलमलघुप्राशने शस्तशर्म।।
श्रीदत्तो दत्तदक्षः पिबति बत बहु स्याः पयः पद्मपत्रा-
क्षीं तामेतामितार्थां भज भज भजतां तारकां रम्यरम्याम् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं तुङ्गाष्टकं संपूर्णम्।।

६६.
चन्द्रभागास्तुतित्रिकम्.

पूर्वं नदी या प्रथितात्र भीमा भूमावलोकात्समभूदभीमा।
यस्यास्तटे रक्षति चन्द्रभा गा हरिर्धुनी साऽवतु चन्द्रभागा ।।१।।
या पाण्डुरङ्गस्य पुरीं वरिष्ठामावृत्य पूर्वाब्धिमगाद्गरिष्ठा।।
सा चन्द्रभागा त्रविधाघहन्त्री भवत्वजस्त्रं मम कामदात्री ।।२।।
यथा हि पक्षार्धगचन्द्रभागास्तद्वद्धृताङ्गा खलु चन्द्रभागा।।
रागादिदोषान्विनिवर्त्य दान्तिं ददातु मे चोपरतिं च शान्तिम् ।।३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं चन्द्रभागास्तुतित्रिकम्।।

६७.
ज्ञानतीर्थस्तोत्रषट्पदी.

विशुद्धविज्ञानमहावाक्यार्थालोचनस्रुतम्।।
अन्त्यात्माकारवृत्त्यात्मज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।१।।
रागद्वेषमुखामात्मगतदोषान्विधूय यत्।।
सत्त्वशुद्धिं विधत्तेन्तर्ज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।२।।
यत्केवलं सजातीयात्मप्रवाहोपबृंहितम्।।
उत्पाटयत्यविद्याद्रून्ज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।३।।
श्रद्धावति विसंदेहे तत्परे विजितेन्द्रिये।।
उदेति शान्तिदं यत्तज्ज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।४।।
यतस्वयं योगसंसिद्धे कालेनोदेति निर्मलम्।।
पवित्राणां पवित्रं तज्ज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।५।।
हृदयग्रंथिभित्सर्वसंशयच्छिच्च कर्महृत्।।
शोकमोहनुदाश्वेतज्ज्ञानतीर्थं पुनातु माम् ।।६।।
षट्पदीयं मदीयास्यपद्मे तिष्ठतु सर्वदा।।
गुर्वभिन्नेशभक्त्याभज्ञानतीर्थसमाह्वया ।।७।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं ज्ञानतीर्थषट्पदीस्तोत्रम्।।

६८.
सद्गुरुतीर्थस्तोत्रम्.

वाक्याऽऽविवेचनाद्युत्था द्वैतद्रून्मूलनोचिता।
प्रत्यक्परात्मैक्यसिन्धौ याऽखण्डैकरसप्रदा ।।१।।
संगता ज्ञानगंगाऽत्र संकल्पत्यागपूर्वकम्।।
दयया केवलं शिष्यं यः स्नापयति बुद्धिमान् ।।२।।
पापेच्छाविर्भवो भूयो नैव यत्करुणेक्षणात्।।
पुनरावृत्तिरहितदेवप्राप्तिकरश्च यः ।।३।।
तदेव सद्गुर्वभिधमहातीर्थं सतां मतम्।।
तीर्यतेऽस्मान्महापापस्तत्तीर्थं सद्गुरुः परम् ।।४।।
यस्मात्तीर्थात्परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति।।
स्मरणाद्दर्शनाद्यस्य सेवनाच्च कतार्थता ।।५।।

तीर्थानि दिग्देशकालपरिच्छिन्नानि यान्यतः।।
विलक्षणं ज्ञानतीर्थं कृपया तद्ददाति यत् ।।६।।
तीर्थानां परमं तीर्थं तारकाणां च तारकम्।।
सद्‌गुर्वाख्यं महतीर्थं भजामि परमार्थदम् ।।७।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं
सद्‌गुरुतीर्थस्तोत्रं संपूर्णम्।।

६९.
श्रीकृष्णालहरी.

चतुर्बाहुः श्रीमत्सजलजलदश्यामलतनुः
प्रकाशद्वक्त्रेन्दुः सदुडुगणमुक्तावलिरपि।।
तडिद्वासा भास्वत्सुतिलकलसन्मौलिरघहृत्
क्षमाध्रस्य ह्यत्रेरपि जयति सूनुः स्वहितकृत्।।१।।
अपि श्रीकृष्णे ते महिमपरपारं भजति को
न शेषोऽशेषास्यैरपि कथयितुं वा प्रभवति।।
अतो ह्रीतो वाचः शुचय इह वच्म्यल्पकमिदं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२।।
अलक्ष्यं ते रूपं वचनहृदयाध्वातिगमतो
नतोऽहं ते लक्ष्यं कथमपि च विज्ञाय वरदे।।
प्रवृत्तस्त्वां स्तोतुं स्वमतिगतितस्ते वरमुदे
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३।।
कृता साहित्यज्ञैरपि सुगुणसम्पत्सललिता-
मितार्थास्तानर्था न च तव मुदे सापि कविता।।
समर्थाथापि त्वं शिशुवचनवन्मे शृणु मुदा
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४।।
रसज्ञा मे दत्ता मुनिनमितदत्तात्रजपदे
मुदे तस्यापीयं प्रभवति न किं साधुलहरी।।
हरीशात्मा कृष्णा यत इयमभूद्दत्तदयिता
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।५।।

न च प्राज्यं राज्यं न च विबुधपूज्यं सुरपदं
पदं पूष्णो जिष्णोरपि मम न विष्णोरभिमतम्।।
मतं दत्तात्रेयप्रपदपरिपूतं तव तटं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।६।।
न भोगं नो योगं न च दुरितभङ्गं लषति मे
मनोऽरोगं गाङ्गं जलमपि न साङ्गं श्रुतिगणम्।।
न यागं न स्वर्गं तव सततयोगं लसति मे
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।७।।
मनो मे श्रीकृष्णे त्वदपसरति क्वापि न कलौ
मलौघघ्नीतीघ्नी भवति भवतीहेति सततम्।।
सुविश्वस्तं स्रस्तं जगति गतिदे साधनचया-
न्नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।८।।
महाभङ्गा गङ्गा यदि दुरितभङ्गाऽत्र कथिता
मताऽपीह त्वत्तः कथमधिकतामेति विमता।।
हरेः साङ्घ्र्युद्भूता त्वमिह ननु मूर्ता परितनु-
र्नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।९।।
हरेर्गङ्गाङ्घ्र्यब्जाभिनवबिसवल्ली भवतु वाऽ-
धितिष्ठत्वीट्शीर्षे स्रगिव च पताकेव सुतराम्।।
प्रकामं मुक्तेर्न त्वमिव भवति श्रीहरितनु-
र्नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१०।।
गते जीवे कन्यां जगति बहुमान्यां शिखरिणी-
ह सह्ये त्वां धन्या जननि भगिनीवामरसरित्।।
समागत्याप्यब्दं परमनियमात्तिष्ठति मुदा
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।११।।
महाजम्बुद्वीपे वृजिनहरतीर्थानि वरदे
समायान्ति त्वांतु त्रिविधमलदे तानि परदे।।
तदा त्वत्स्नानादेः फलमपि न वक्तुं प्रभुरजो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१२।।

पितॄनुद्दिश्यैको वितरति निवापाञ्जलिमये
मनुष्यस्त्वय्यग्रे सकलपितरोस्य द्रुतरये।।
गतिं यान्ति श्राद्धादपि च पुनरावृत्तिरहितां
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१३।।
महापाप्याकल्पं यदि विधिवशाद्दुर्गतिमितो
वृषोत्सर्गात्सोऽपि द्रुतमिह हि नारायणबलेः।।
त्रिपिण्डीश्राद्धाद्वा व्रजति सुगतिं दुर्लभतरां
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१४।।
सुतं लेभे वन्ध्या ऋणहतिमृणी दुःख्यपि सुखं
नरो यो यो यं यं स्मरति हृदि कामं स स च तम्।।
अवापेति ज्ञात्वा जननि पतितस्तेऽद्य पुरतो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१५।।
अहो माहात्म्यं ते शुकजनक आहात्र हि महा-
बलेशादासिन्धोरुभयतटसंस्थेषु बहुषु।।
महातीर्थेष्वग्र्यं नृहरिपुरि तीर्थाष्टकमिदं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१६।।
मुखं ते सह्याधः सदयहृदयं ते नरहरेः
पुरेऽप्यान्ध्रे नाभिः प्रपदयुगलं प्राच्यविषये।।
अये श्रीकृष्णे ते प्रथितमिह रूपं मुनिमते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१७।।
नरः श्रीकृष्णे ते सुलभममृतस्पर्धि मधुरं।
वरं नाम ब्रूयात्कथमपि स निःश्रेयसमियात्।।
सुदूरस्थो स्वस्थोऽप्यथ किमुत साक्षाद्भजति यो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१८।।
पुरेष्टं दत्तं वा विहितमपि पूर्तं च सुकृतं
स्वधीतं वा जप्तं श्रुतमपि यशोऽजस्य हि तदा।।
भवद्दृष्टिः कृष्णे भवति भवभीहृत्खलु नृणां
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।१९।।

प्रकृत्यैक्याद्भेदो न हरिहरयोः प्रत्ययवशात्
पृथग्वद्भातीति प्रथयितुमहो शंभुवपुषा।।
युता वेण्यापि त्वं भगवति पृथक्त्वं न भजसे
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२०।।
अये योगिध्येये निगमगणगेयेऽब्धिनिलयेऽ
नपाये दत्ताये कलुषविलये सह्यतनये।।
त्वदन्यन्नो वीक्षे सुलभशरणं लीढमरणं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२१।।
परिक्रान्ता देशा भगवति चतस्रोऽपि च दिशा
न शान्ता दुष्टाशाप्यजनि वपुषो मेऽन्तिमदशा।।
प्रशान्ताद्यैवाशा तव दृशिवशादास सुदशा
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२२।।
त्वदीये सत्तोये जलचरगणा ये गतभया
वयांसीशे वान्ये पशुमृगगणाः कीटकगणाः।।
अपि स्नाताः पीताः कथमपि ततस्ते दिवमिता
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२३।।
गतः क्रूरो जारो दिवमपि च चोरो वनचरो
वरोदे ते स्नानात्कथमपि नरो यः श्रुतिपरः।।
स किं स्नानात्ते न व्रजति गतिमम्ब श्रुतमते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२४।।
अपि स्नातं तीर्थं सकलमखिलं दैवतमिहा-
र्चितं सर्वं दत्तं हुतमपि च पूर्तं खलु कृतम्।।
तव स्नातं मातर्विधिवदिह येनाम्बु सुगते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२५।।
अवज्ञातं तीर्थं सकलमपि देवा अवमता
न दत्तं मे नेष्टं मतमपि च पूर्तं किमपि नो।।
श्रितं त्वत्सामर्थ्यादरभरवशाद्देवि सरिते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२६।।

क्षमः कस्याप्यग्रे क्षणमपि न च स्थातुमभवे
भवेयं तूर्ध्वास्योभवमिह हि हास्यास्पदमतः।।
तवेयं लज्जास्तामपि सपदि मामुद्धर हिते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२७।।
त्वया प्रत्याख्यातो यदि भवति भीतोऽयमभवे
भवेदज्ञस्यास्य त्रिजगदुदरे किं नु शरणम्।।
रणन्नुच्चैरुच्चैस्तदिह मरणं यामि महिते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२८।।
महापापं तापं गतमपि सकंपं गतकृपं
सशापं लोको मां हसतु तमु तापं न गणये।।
बिभेम्यंहोपाये तव बिरुदभङ्गाद्भगनुते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।२९।।
त्रितापघ्नीतिघ्नी भुवि पतितपावन्यघहरा
त्रितापघ्नी भीघ्नी विविधवरदात्री ऋणहरा।।
वरा सिन्धुष्वेतद्बिरुदनिचयो जीवतु चिरम्
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३०।।
यदाऽस्याविर्भूता त्वमिह तत आरभ्य पतिता
विशोध्याप्युन्नीता अधिकतम एभ्योऽस्म्यत इमम्।।
यदोद्धर्तुं शक्ता त्वमसि तत उत्तिष्ठ सरिते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३१।।
अयं सामान्योऽस्तीत्यपि मनसि मा स्थापय यतः
समस्ताघौघास्ते जननि मयि तिष्ठन्ति सुचिरम्।।
अतो बद्ध्वोत्तिष्ठेश्वरि परिकरं त्वं दृढतरम्
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।
ममोद्धारेणाद्य त्रिजगति सुकीर्तिर्भवतु तेऽ-
सितेऽतीते काले न खलु विमले त्वीदृगभवत्।।
प्रसङ्गोऽसङ्गोऽहं तत उपरि यास्येऽभयपदं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३३।।

अतः प्रादुर्भूत्वा परमनिजरूपेण सहसा
ममाघाद्रीन्भित्वा सकलमलहन्त्रीह सहसा।।
कृपाक्षीरं धृत्वाऽङ्कमुपरि च मे देहि सहसा
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३४।।
कुतस्त्वय्येतावद्दुरितमिति शङ्कास्तु न यतोऽ-
न्यथाऽऽत्मानं सन्तं तत इतरथा वेद्मि हि मया।।
निजात्मस्तेनेन प्रतिपदमघं किं न विहितं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३५।।
समं साक्षात्पश्यस्यखिलहृदयस्थे भगवति
त्वदग्रे वक्तव्यं न हि न हि तथापीह वदति।।
प्रभोरग्रे लोकस्तदनुसरणं मेऽस्तु शरणं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३६।।
स्वभूरूपेण त्वं सृजसि हरिधाम्नाऽवसि हरा-
त्मना हंसीन्द्राद्या विसृजसि विभूतीः स्वकलया।।
लयान्ते ते कुक्षिं विशति सकले मङ्गलगते
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३७।।
इहापि त्वं पापिप्रचयमलसंक्षालनपटू-
दकात्मा भूराभूरपि सुरगणाः शापमिषतः।।
स्वतन्त्रे सन्मन्त्रे सरित इह भूत्वा तव गता
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३८।।
तमोनुत्ते भासा जगति खलु भास्वान्न भवति
स्वयंज्योतिः स त्वां तपनमिव भं भासयत इत्।।
अयं भातां त्वानु द्युमणिसहितं भाति सकलं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।३९।।
गणी वेणी भूत्वाऽप्यसुरसुरवारादृतपदो
मदोद्धृत्यै यद्द्रग्भुवनजयिनोऽलं कुसुमगोः।।
स गोवाहोऽपि त्वां परमसखिवत्संगत उतो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४०।।

स्वयम्भूर्ब्रह्माऽयं भुवनरचनाभिज्ञधिषणः
कुकुद्मत्याख्याऽसौ सरिदिह हि भूत्वाऽपि सुतवत्।।
समायातस्त्वां सम्मुखमु करहाटाख्यविषये
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४१।।
द्विजाः काले काले शुचिषु च चतुर्भिः फलदृश-
श्चतुर्भिर्द्वाभ्यां पंचभिरपि बुधा जुह्वति सति।।
पुनर्द्वाभ्यां स्नानादपि नयसि नाकं त्वमखिलान्
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४२।।
प्रभावस्तेऽपीदृग्दहति दहनो वाति पवनो
मनोल्हादे भीतस्तपति तपनो धावति मृतिः।।
वृषा वर्षत्यन्ये त इह बलिमुझन्ति नियतं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४३।।
क्व शक्तिस्तेऽनन्ते विवधकुकृताद्रिप्रहरण-
क्षमा सामान्यं मे त्रिविधमपि पापं क्व नु कियत्।।
तवाग्रे वह्न्यग्रे विरसबहुशष्पाद्रिवदहो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४४।।
न कृच्छ्राद्याः शक्ता यदघहरणायापि बहुशो
न च प्रायश्चित्तं हवनजपनाद्यं क्षममभूत्।।
स कृष्णे त्वत्स्नानाद्व्रजति सुशचिः सन्दिवमहो
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४५।।
कुसङ्गान्यार्त्यर्थापहरणमुखं कायिकमघं
हरेज्याऽऽर्योन्निन्दाकदशनमुखं वाचिकमघम्।।
कुचिन्ताऽन्यानर्थस्मरणमुखरं मानसमघं
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४६।।
स्वदीयात्मस्पृष्टः स्पृशतु गतिदे स्पर्शन उत
स्वदीयं पानीयं पततु वदनाब्जे मम बत।।
उताहो त्वन्नीरे तुहिनशिशिरेऽङ्ग पततु मे
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४७।।

नुतां तीर्थैः सर्वैरपि जगति सर्वाभिरमले
सरद्भिर्देवेन्द्रैरपि मुनिभिरत्यादृततटाम्।।
न कस्त्वां सेवेत प्रवरसरिदत्राधिमथने
नमः श्रीकृष्णे ते जय शमिततृष्णे गुरुमते।।४८।।
धरेन्द्रतनयेऽभयेऽस्म्युपगतोऽनुकम्पोदये।
जयेश्वरि हरीशरूपिणि मणिद्युते त्वाऽर्थये।।
अये नदि न दीनतां व्रजतु हृन्मदीयं स्वयेऽ-
क्षये वपुषि तेऽसिते भवतु दृक्त्वदीयेऽम्मये।।४९।।
काचित्क्षालयति प्रभोः पदयुगं काचित्कमारोहति।
स्वेदात्कापि जटादितः प्रकटिता बद्धाऽपरोद्वाहिता।।
उच्चैः काचन मानिनीह पतिता जाता गता काप्यध-
स्त्यक्तं ते न च नाम रूपमपि सत्कृष्णे दशायामिह।।५०।।
(हारबंधः)
देवेड्ये वेदवेद्ये जय जय भवहृत्त्वं कृपाकृष्टकृष्णे
त्राहि त्राहि ग्रहीतॄंस्तव भवहवराख्यां सदा सत्यसंधे
भूयो भूयोऽभयोक्तिर्वितर तव तनुर्येह मोहप्रहर्त्री
सा मे कामेश मेध्या मनसि नयनयोरादस्तु दत्त।।५१।।
(गोमूत्रिकाबंध)
कृष्णां यो वृणुते भक्तः पदं यायान्निरंतरम्।।
तृष्णां यो वृणुतेऽभक्तः खेदं यायान्निरंतरम्।।५२।।
कृष्णास्थप्रेरितमतिर्वासुदेवसरस्वती।।
कृष्णामस्तौदतः प्रीयान्नरसिंहसरस्वती।।१।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचिता कृष्णालहरी ।।

७०

श्रीकृष्णापञ्चकस्तोत्रम्

कृष्णा नः पातु तृष्णाहरमधुररसा चिद्रसासारसाक्षी
साक्षीभूता नतानां निखिलमलहरा या हरानन्तमूर्तिः।।
जूर्तिघ्नी भीतिनिघ्नी सकलहितरता तारतम्यव्यतीताऽ-
तीतावाक्चित्तमार्गं जगति गतिदयत्ख्यातिरेषा विशेषा ।।१।।
कृष्णावेणी सतततरुणी वीक्षिता मध्यनीवृद्
योषा वेषा सुषुमवपुषा भासमाना समाना।।
मानातीतापि भजतां दृश्यतां याति माता
माता पादेरित उपरि परिक्रान्तिवार्ता मयीह ।।२।।
तव गुणगणं वारं वारं सुधारुचिरं चिरे
भगवति सति स्मारं स्मारं परं त्ववरं वरम्।।
न लषति मतिः सारं सारं विचार्य परावरं
लषति म इतो दूरं दूरं प्रदर्शय तं परम् ।।३।।
कृष्णे कृष्णतनो मनोहरकथे नाथेश्वरि प्रार्थये
दत्तं दत्तपदं प्रदर्शय परं नातो वरं त्वर्थये।।
अन्यं योऽटति ते तटे नट इवानेकाङ्गधारी हरिः
संसारारिररिन्दमः शमपरः साक्षाद्य आत्मा विभुः ।।४।।
प्रत्यक्प्रवाहितखहृत्सु महत्सु देव
उद्यन्स्वयं हरति हार्दतमः स एव।।
तीरे भ्रमत्यनुदिनं तव भावगम्य-
स्तं दर्शयाद्य कृपयाप्यनुपाधिगम्यम् ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीकृष्णापञ्चकं संपूर्णम्।।

७१

श्रीकृष्णावेणीपञ्चगङ्गास्तोत्रम्.

शिवा शिवा शिवप्रेष्ठा शिवायास्तु हताशिवा।।
सर्वदा शेरते यस्यां सद्गुणाः सर्वदा हि सा ।।१।।
नमामि सर्वतोभद्रां सुभद्राश्रयदां नदीं।।
भद्राय सास्तु मे भद्रा सर्वाभद्रहरा वरा ।।२।।

स्त्रोतस्वती भोगवती या सौभाग्यवती सती।।
आभोगतायै सा मेऽस्तु ख्याता भोवतीह वा ।।३।।
कलुषाणीह सर्वाणि या कुंभयति सत्वरम्।।
परशक्त्या स्त्रवन्ती सा भूयात्कुंभी शिवाय मे ।।४।।
स्त्रवन्ती सा हतापाया पापहारिसरस्वती।।
पुनातु सा ह्यवाग्वासा पापहन्त्री सरस्वती ।।५।।
कृष्णा विष्णुतनुः साक्षान्महापापाहारिणी।।
तारिणी दुर्गसंसारात्सा कृष्णा मुक्तयेऽस्तु नः ।।६।।
महेश्वरस्वरूपा या कृष्णया सङ्गता नदी।।
सा वेणी सकलाघघ्नी तापघ्नी मुक्तयेऽस्तु नः।।७।।
कृष्णावेणीपञ्चगङ्गास्तोत्रं सर्वीघहारि यः।।
त्रिसंध्यं प्रपठेद्धीमान्स पवित्रो भविष्यति ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं कृष्णापञ्चगङ्गास्तोत्रम्।।

७२

कृष्णापञ्चगङ्गासंगमस्तोत्रम्

कृष्णाप्रवाहेऽत्र तु पञ्चगङ्गायुजिः प्रतीताखिलपापभङ्गा।।
गङ्गार्कजायुत्यधिपुण्यदात्री श्रेयोविधात्री सकलाघहन्त्री ।।१।।
तीर्थं प्रयागेन समं मनोहरं क्षेत्रं कुरुक्षेत्रसमं यतो वरं।।
सद्यः कुरुक्षेत्रवराधिपुण्यदं तं संगमाख्यं प्रणमामि कामदम्।।२।।
उदुम्बरः कल्पतरुर्यत्रास्ते चामरेश्वरः।।
विश्वेश्वरसमो यत्र शक्तितीर्थं च यत्र हि ।।३।।
यत्र श्रीसद्गुरोर्वासः सर्वाभीष्टार्थपूरकः।।
सुतरां भ्राजतेऽनेन संगमोऽस्मै नमो नमः ।।४।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं कृष्णापञ्चगङ्गासंगमस्तोत्रम्।।

०७३

श्रीकृष्णाष्टकम्

स्वैनोवृन्दापहृदिह मुदा वारिताशेषखेदा
शीघ्रं मन्दानपि खलु सदा याऽनुगृह्णात्यभेदा।।

कृष्णावेणी सरिदभयदा सच्चिदानन्दकन्दा
पूर्णानन्दामृतसुपददा पातु सा नो यशोदा ।।१।।
स्वर्निश्रेणिर्या वराभीतिपाणिः। पापश्रेणीहारिणी या पुराणी।
कृष्णावेणी सिंधुरव्यात्कमूर्तिः। सा हृद्वाणीसृत्यतीताऽच्छकीर्तिः।।२।।
कृष्णासिंधो दुर्गतानाथबन्धो। मां पङ्काधोराशु कारुण्यसिन्धो।।
उद्धृत्याधो यान्तमंत्रास्तबन्धो। मायासिन्धोस्तारय त्रातसाधो ।।३।।
स्मारं स्मारं तेऽम्ब माहात्म्यमिष्टं। जल्पं जल्पं ते यशो नष्टकष्टम्।।
भ्रामं भ्रामं ते तटे वर्त आर्ये। मज्जं मज्जं तेऽमृते सिन्धुवर्ये ।।४।।
श्रीकृष्णे त्वं सर्वपापापहन्त्री। श्रेयोदात्री सर्वतापापहर्त्री।।
भर्त्री स्वेषां पाहि षड्वैरिभीते-। र्मां सद्गीते त्राहि संसारभीतेः।।५।।
कृष्णे साक्षात्कृष्णमूर्तिस्त्वमेव। कृष्णे साक्षात्त्वं परं तत्त्वमेव।।
भावग्राह्ये मे प्रसीदाधिहन्त्रि। त्राहि त्राहि प्राज्ञि मोक्षप्रदात्रि ।।६।।
हरिहरदूता यत्र प्रेतोन्नेतुं निजं निजं लोकम्।
कलहायन्तेऽन्योन्यं सा नो हरतूभयात्मिका शोकम् ।।७।।
विभिद्यते प्रत्ययतोऽपि रूपमेकप्रकृत्योर्न हरेर्हरस्य।।
भिदेति या दर्शयितुं गतैक्यं वेण्याऽजतन्वाऽजतनुर्हि कृष्णा ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीकृष्णाष्टकम्।।

७४

नृसिंहवाटिकास्थशुक्लाद्यष्टतीर्थस्तोत्रम्

ब्रह्महत्याहरं तीर्थं कृष्णा पश्चिमवाहिनी।।
यत्र तत्रैव शुक्लाख्यं स्नानाच्छुक्लीकरोति यत् ।।१।।
ततोऽग्रतः पापविनाशि काम्यतीर्थं वरोदुम्बरसन्निधौ च।।
सिद्धाख्यतीर्थं वरदं तथैवामरेश्वरस्यामरतीर्थमग्रे ।।२।।
स्यात्कोटितीर्थं त्वथ शक्तितीर्थं प्रयागतीर्थं च ततस्ततोऽग्रे।।
षट्कूल एतानि परप्रतीरे महाष्टतीर्थानि महाघहन्ति ।।३।।
न ब्रह्महत्यादिमहाघसंघो यद्दर्शनादेव निमेषमात्रम्।।
स्थास्यत्यशेषाघहराष्टतीर्थस्नानादिपुण्यं किमु वाच्यमत्र।।४।।
नमोऽस्तु तीर्थाष्टक ते म आशु श्रीपादपादेक्षणविघ्नकारि।।
निवार्य पापं त्रिविधं समस्तं विज्ञानपात्रं कुरु मामिहैव ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं शुक्लाद्यष्टतीर्थस्तोत्रम्।।

७५.
नरसिंहवाटिकावर्णनम्

मङ्गलायतन तेऽस्तु मङ्गला मङ्गलाय तनुरात्तमङ्गला।।
मङ्गलायतनसर्वमङ्गलामङ्गला यत इनाः सुमङ्गलाः ।।१।।
पांसुलं व्याप्तलोकं सद्विक्रमत्रातपांसुलम्।।
भद्रदं पदमेतत्ते मम भूयादभद्रदम् ।।२।।
अग्रजन्मासि भूतेश विश्वभून्मानवोऽप्यहम्।।
अग्रजन्मास्यतो भूयाद्ब्रह्मसंबंध आवयोः ।।३।।
नरसिंह इहाद्वैतनरसिंहः प्रभुर्यतिः।।
कृष्णापञ्चनदीयोगे तृष्णाहारी कलौ युगे ।।४।।
धन्या वदान्याश्रितसारतीरा मान्याऽस्तदैन्याऽमृतसारनीरा।।
कृष्णा वितृष्णान्हि विधाय भक्तान्पुष्णाति कृष्णाच्युतमूर्तिरेषा ।।५।।
मन्येऽत्र धन्येयमनन्तमूर्तिः स्वस्पर्शनालोकनकीर्तनाद्यैः।।
दीनानिमान्पावयितुं स्वभक्तान्कृष्णाऽत्र कृष्णाभिधनिम्नगाऽभत् ।।६।।
यदात्मनोः प्रत्ययभेदभिन्नमेकप्रकृत्योः प्रथितं स्वरूपम्।।
हरिर्हरो दर्शयितुं ह्यभिन्नं गतौ द्विनद्यैक्यमियं तु कृष्णै ।।७।।
अष्टाङ्गयोगसिद्धिः कष्टा मिष्टाशिनां कलौ स्पष्टा।।
तत्सिद्धिदानि तीर्थान्यष्टातोऽसौ दधौ स्वभक्तेष्टा ।।८।।
(गद्यम्)भगवती श्रीकृष्णेयमेव भगवच्चरणावनेजनशोभनजीवनोत्तम-कलेवरामरेश्वराधिष्ठितप्रतीरामरपुरसंयोगपरमरुचिराभितः प्रचुरसुंदर-मंदिरालंकृतामितामरभूरुहमण्डितासादितमनोहरनिर्जरापरामरनिम्नगेव बभौ ।।९।।
वा किल स्वीयजीवनचिन्तनकीर्तनदर्शनस्पर्शनसेवनादिना पवित्रीकृतबाह्याभ्यन्तरात्मन उच्चावचस्वभक्तानज्ञानतः स्वलोकं प्रापयितुमुद्युक्तान्याम्यान्दूतान्निवारयितुं तद्दिशं जिगमिषतीव ।।१०।।
सह्याद्रिकन्येयमसह्यवीर्या सुधाधिकस्वादुरसा पवित्रा।।
स्निग्धातिमुग्धा महिषी वृषैः कैर्जानेऽभवत्प्राग्लवणांबुधेर्नो ।।११।।
तस्यस्तटे श्रीभगवान्नृसिंहसरस्वती तत्र पवित्र देशे।।
तिष्ठत्यजस्त्रं खलु तन्निवासः स्वर्वासिवासाधिसुखं तनोति ।।१२।।
नद्याः सकाशाद्विपुलाचलामला रेजेऽत्र सोपानपरंपरा वरा।।
रौद्रप्रयत्नै रचिताश्वमेधसत्पंक्तिर्यथैन्द्रं पदमारुरुक्षुभिः ।।१३।।

यत्र ब्रह्मानन्दसंज्ञा मठास्ते दातुं ब्रह्मानन्दहीनामरेभ्यः।।
ब्रह्मानन्दं केवलं सत्कृपातो गच्छन्तीवोर्ध्वं सतां तद्धि युक्तम् ।।१४।।
(गद्यम्)**सर्वदा खिल जागरूकाखिलवरदामरनिकरकल्पतरु-वरजाह्नव्यन्नपूर्णाद्यलङ्कृतेऽस्मिन्सुगमापावृतकान्तपथे दैन्यपापतापा एवालब्धमार्गा अन्तः प्रवेष्टुं नो इतर इत्येतदेवात्र वैषम्यं व्यालोकि।।१५।।**
अत्र त्वखिला अपि भूसुराः अज्ञानध्वान्तध्वंसना इना इव, भवतापहराश्चन्द्रा इव, भौमा अपि सर्वमङ्गला इव, बुधा अपि निसर्गसौम्या इव, सुभषितभूषिताः सर्वगुरवो गुरव इव, वशकाव्याः कवयः कवय इवातिपीनस्तनजघन-ललनामण्डलाक्रमणमन्दा मन्दा इव स्थिता अत एवैकैकग्रहमण्डितं ग्रहमण्डलं स्फीताभ्यसूयं स्वस्थमप्यस्वस्थमिवालक्ष्यते ।।१६।।

सार्थको नाकलोकोऽयं नाकवार्तः परस्य तु।।
नाकसंज्ञैव यत्रास्ते स्पर्धासूयात्ययादिकम् ।।१७।।

यत्र स्मरस्मेरनराः सुरा इव प्रीताः स्थिताः सेवितकामितामृताः।।
संगीतयुक्ते सुधियः स्वया स्त्रियः साध्व्योऽपि सच्छीलजितामृताङ्गनाः।।
यत्रायमात्मा सुखसच्चिदात्मा सन्दृश्यतेऽज शतसूर्यतेजाः।।
सत्त्वप्रधाने हृदि सावधाने ब्रह्मेव भिक्षोः श्रुतिभिस्तितिक्षोः ।।१९।।

देवोऽमरः सहस्राक्षः परितो निर्जरैर्वृतः।।
त्रिलोकार्चितपादाब्जो मघवेवापरोऽस्त्ययम् ।।२०।।
धर्मराजो दण्डधरः समवर्ती यमेश्वरः।।
सर्वदा ज्ञातदेवात्मा जयत्यत्रापरो यमः ।।२१।।
पश्यन्सत्यानृते कर्मयन्त्रितानां नृणां स्फुटम्।।
नारायणोऽयं जयति प्रचेता इव पात्रधृक् ।।२२।।
मनुष्यधर्मा देवोऽपि श्रीदः पुण्यजनेश्वरः।।
राजराजो जयत्यत्र नरवाह इवापरः ।।२३।।
मालाकमण्डलुधरो विभुर्वेदपरायणः।।
सदानन्दो गतच्छन्दो ब्रह्मेवात्र तपस्थितः ।।२४।।
नारायण इवाशेषसेतुहेतुरयं हरिः।।
विश्वरूपो हतखलः सदा भक्तमतानुगः ।।२५।।
मृत्युंजयोऽमृतमयः शंकरस्त्रिपुरान्तकः।।
सर्वज्ञो जितकामोऽयं वशी शंभुरिवापरः ।।२६।।
सृष्ट्वात्मेदं प्रविश्यान्तर्मायया क्रीडतीह सः।।
पदाभ्यामेव पाति स्वान्प्रज्ञानब्रह्मवाचकः ।।२७।।

पादपत्वं स्वार्थसिद्ध्यै द्रुमाणामितरे विदुः।।
पादपत्वं स्वर्थसिद्ध्यै सत्पतेर्नेतरे विदुः ।।२८।।

(गद्यम्) स एव परमकारुणिको भगवान् जगद्गुरुः केवलयुक्त्या मुक्त्या इह हि परस्परं विवदतामसतां शास्त्रिणां मतानि निराकुर्वन् स्वभक्तानां विमलदृष्ट्यैव स्वपदपर्यालोचनान्मुक्तिरिति श्रुतितात्पर्यमुपदेष्टुमिव सच्चिदानन्दं पदमिह प्रकटीकार ।।२९।।

परमात्मन इवास्य श्रीगुरोः, प्रबोधमय इव शिबिकोत्सवसमये, विशुद्धज्ञानदीपैरिव प्रदीपैः प्रकाशिते सत्त्वप्रधानान्तर इव शिबिकान्तर उपविष्टं स्वप्रकाशापरोक्षात्मानमिव सर्वात्मानं षड्विधलिङ्गतात्पर्यावधारणरूपश्रवणमनननिदिध्यासनसमाधिक्रमगतचरमवृत्त्येव केवलामलदृष्ट्यापरोक्षीकुर्वन्त इव पश्यन्तो, यतय इव उच्चावचजन्तवो विस्मृतबाह्याभ्यन्तरव्यवहाराः सन्तो ब्राह्मी स्थितिमिव परमानन्दस्थितिं प्राप्नुवन्त्यहो महदाश्चर्यमिदम् ।।३०।।

किञ्चित्स्वप्नेऽपि यैर्नाप्तं योगसाधनकारणम्।।
समाधेस्ते पराकाष्ठां प्रापुर्ध्येयैकगोचराः ।।३१।।
पेशलैः कापिलालापैः किं शेषाशेषभाषितैः।।
किं चान्यैर्मन्य एवैका तारिका वाटिका हरेः ।।३२।।

(गद्यम्) भगवत्पददिदृक्षया परमवाटिगमान्नित्यानित्यवस्तुविवेकस्तत्र यदृच्छयाप्तमाधुकरान्नसेवनादिहामुत्रार्थफलभोगविरागस्त्रिषवणमघहरणकार्ष्णोणोनिषेवणाच्छमादिसंपत् सपन्नजनसेवितकान्तानन्तायतनालोकना-न्मुमुक्षुत्वं नारायणार्हणप्रेक्षणात्परोक्षज्ञानमज्ञानध्वान्तध्वंसनजनार्दन-पदालोकनमपरोक्षज्ञानमिति किमतः परं परं साधनम् ।।३३।।

अध्वैष यदिदं कार्यं कार्यं सत्पददर्शनम्।।
विमनोवासनस्तज्ज्ञो न प्रमाद्येदतोऽनिशम् ।।३४।।

कन्दर्पदर्पदलितालिताङ्गनाङ्गसम्बन्धबन्धनवशा अवशास्तु आपुः।।
नेदं पदं परमया रमयापि येन्धास्ते हन्त हन्त कुधिया विधियान्त्यधोधः।।

लुलल्लालं लीलाललितललनालोललपनं
क्व कीलालेट्बालो ललदमललीलोलितिलकः।।
क्व लोलालिप्रालिर्ललितकलिभालः क्व मललं
बिलं लोलन्मूत्रं क्व कनकघटौ मांसलकुचौ ।।३७।।

(गद्यम्)अहह मूर्खप्रतारणेयं पश्य पश्य सरंध्रघटकल्पं संघाणपिञ्जूषादिलिप्तं श्लेष्मलमलङ्काराद्यानीतशोभं मलीमसं लपनं निष्कलङ्ककलानिधिरिति,

मांसलौ मुक्तावल्यादिरञ्जितौ स्तनगोलौ स्वर्णकलशाविति, चर्मशकलं द्विधा भिन्नं गलन्मूत्रमपानोद्‌गारधूपितममूल्य चैलतिरोहितं कृमिकुलस्थलकल्पं गलन्मदकरिगण्डस्थलमिति, हिंस्रवञ्चनार्थं त्वगावृता रक्तमांसास्थिघटितात्यमङ्‌गला, मङ्‌गलमात्रपवित्रा ममताहन्तावृता स्वपरमूर्तिरियमासेचनककनक-मूर्तिरिति, भ्रान्त्यैवपश्यन्त एतान् भ्रष्टपथानसतो धिग्धिगहो हर हर हरिमायेयं किल ज्ञानिनामपि चेच्छतीति महर्षिवाक्याय शतशो नमो नमः

।।३८।।

त्यक्तानित्याशुचिदुःखमयोभयलोकभोगसाधनसङ्‌गा दुस्तरैषणापारगा परावृतखरतरासुरस्मरशरविसरवर्गा भगवद्दर्शनमात्रकामाश्रितवाटिकायोगा अश्रान्तमाप्तभगवत्पादाभोगा उदितपरमार्थभागा निःसङ्‌गा अमी नरसिंहवाटिकास्थिताः सर्वेऽपि नरसिंहयतिकृपाप्रसादेनैव कृतकृत्याः स्युः

।।३९।।

प्रेतेस्ति नास्तीति यथास्य संशयस्तथा यदन्तस्य च निर्गुणाद्‌गतेः।।
तद्‌भ्रूशरासाद्धि कटाक्षमार्गणैर्विद्धा न चाद्धा यतयो नमोऽस्तु वः।।४०।।
धन्या हि संन्यासिन एव यद्दृग्वर्माण एतैरसुरैर्न विद्धाः।।
विद्धा हरीशाजमुखाः किलैतैः पुनर्मृतप्रायनृणां कथा का ।।४१।।
तस्मान्न चास्मात्प्रपदाच्छरण्यान्न कायनं नास्य शरण्यमीश।।
नियोजयानेन पदा सदा मां तवान्तिकस्थेन सुदुर्लभेन ।।४२।।
कृष्णावेणीककुद्‌मत्यः प्रपंचोपशमान्तिके।।
अखण्डैकरसा ऐक्यात्परात्मानात्मवच्छिवाः ।।४३।।
यज्ञाङ्‌ग आगमस्तत्र सदा सेव्यो द्विजातिभिः।।
अन्तरप्राकृतैः पूर्णो बहिश्च प्राकृतैः फलैः ।।४४।।
सेव्योऽयमागमो नित्यमर्थहीनैर्द्विजातिभिः।।
सार्थैस्तु ब्राह्मणैः सेव्यं तद्विष्णोः परमं पदम् ।।४५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीमन्नृसिंहवाटिकाक्षेत्रवर्णनम्।।

७६
सप्तपुरीस्तोत्रम्

स्या अयोध्ये रामपादसुपुनीतेऽमृतत्वदा।।
भूयो मास्तु ममावृत्ति पुरीषु सरयूवते ।।१।।
आध्यानान्मथुरे ते मे सद्वासोऽस्तु निरन्तरम्।।
रामकृष्णाङ्घ्रिसंपूते वरदे यमुनावते ।।२।।
पृथुमार्गप्रदा माये भव भागीरथीवृते।।
वरासि त्वां हरिद्वारं सुतीर्थं प्रवदन्ति हि ।।३।।
ममाघं हर काशि त्वमुच्चैस्समणिकर्णिके।।
भूयान्न मे पुनर्जन्म भवपादांचिते भवे ।।४।।
सा काञ्चीनगरी मह्यत्रासहा शिवविष्णुपूः।।
आशीःप्रदाद्य मां कृत्वा लुप्तैनसमवत्त्वियम् ।।५।।
लोकांतरानपेक्षं मां मता कालेश्वरादृता।।
नाचीर्णतपसं पातु मां मोहात्क्षिप्रयादृता ।।६।।
स्याअनंताश्रये मेऽद्य मोक्षदा सिंधुतीरगे।।
त्वं वंद्यास्यखिलैः सर्वप्रदा द्वारवतीश्वरी ।।७।।
य तिराड्राजधान्याद्यं नय कृष्णातटस्थिते।।
लोकात्माख्यमाहुस्त्वां लोका नृसिंहवाटिकाम् ।।८।।
कर्मभिर्नृत्यन्ति नरस्तत्सिं मायाख्यबन्धनम्।।
हंति यस्तद्वाटिकेयं सर्वेषां हितदा सदा ।।९।।

स्या	अ	योध्ये रामपाद सु	पु	नीतेऽमृतत्वदा।।
भू	यो	मास्तु ममावृत्ति पु	री	षु सरयूवृते।।१।।
आ	ध्या	नान्मथुरे ते मे स	द्वा	सोऽस्तु निरन्तरम्।।
रा	म	कृष्णाङ्घ्रिसंपते व	र	दे यमुनावृते।।२।।
पृ	थु	मार्गप्रदा माये भ	व	भागीरथीवृते।।
व	रा	सि त्वां हरिद्वारं सु	ती	र्थं प्रवदन्ति हि।।३।।
म	मा	घं हर काशि त्व मुच्	चै	स्समणिकर्णिके।।
भू	या	न्न मे पुनर्जन्म भ	व	पादांचिते भवे।।४।।
सा	का	ञ्चीनगरी मह्य त्रा	स	हा शिवविष्णुपूः।।
आ	शीः	प्रदाद्य मां कृत्वा लु	प्तै	नसमवत्त्वियम्।।५।।
लो	कां	तरानपेक्षं मां म	ता	कालेश्वरादृता।।

ना	ची	र्णतपसं पातु मां	मो	हात्क्षिप्रयादृता।।६।।
स्या	अ	नंताश्रये मेऽद्य मो	क्ष	दा सिंधुतीरगे।।
त्वं	वं	द्यास्यखिलैः सर्वप्र	दा	द्वारवतीश्वरी।।७।।
य	ति	राड्राजधान्याद्यं न	य	कृष्णातटस्थिते।।
लो	का	त्माख्यमाहुस्त्वां लो	का	नृसिंहवाटिकां।।८।।

कर्मभिर्नृत्यन्ति नरस्तत्सिं मायाख्यबन्धनम्।।
हंति यस्तद्वाटिकेयं सर्वेषां हितदा सदा ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं
नृसिंहवाटिकान्वितसप्तपुरीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

७७

वेदगङ्गास्तुतिः

वेदगंगे नमस्ते मे वेदगंगे भवत्यघम्।
हर तत्त्वं विधिश्रीशहरतत्त्वं प्रकाशय।।

७८

हिरण्यकेशीस्तुति

हिरण्यकेशाः कमपाश्यमेद्य हिरण्यकेश्या यदृचोक्ततत्त्वम्।
आदित्यवर्णं तदवेक्षणार्हमादित्यवन्मां विदधातु शुद्धम्।।१।।

७९

मलापहास्तुतिः

मलापहा महासिंधुः सर्वजन्ममलापहा।
परतु त्रिविधं पापं तापं च त्रिविधं मम।।१।।

८०

घटप्रभास्तुतिः

घटप्रभाम्बु मे कुर्यात् सद्यो हेमघटप्रभाम्।।
उपलब्धिं यतो भूम्न उपलब्धिर्भविष्यति।।१।।

८१

विश्वामित्रिस्तुतिः

विश्वामित्र्याः करोत्यंभो विश्वामित्र्या ऋचोहिताम्।
प्रचोदनां सति दृढां हित्वा कर्मप्रचोदनाम्।।१।।

८२
तुंगभद्रास्तुतिः

भद्रया रजते वीच्या तुंगया सह भद्रया।
तुंगभद्रा धुनी सा मां तुंगभद्राश्रयं कियात्।।१।।

८३
बाहुनदीस्तुतिः

सदानीरा लघुतला सदा नीरागकृज्जला।
बाहुदाख्यावतु मुनिबाहुदास्मानियं धुनी।।१।।

८४
करतोयानदीस्तुतिः

प्रायशो वहति या करतो या शुष्यतीह न जलाकरतोया।
पावनी बहुसुखाकरतोया पातु साऽघनिचयात्करतोया।१।।
करतोये सदातोये बहुशोऽये पुराभये।
दोषा मे ये कृतास्तेषां सर्वेषां त्वं भवान्तकृत् ।।२।।
यया छिन्नो बाहुर्ऋषय इह दत्तो हि दयया।
नदी सेयं मायामयभयलया नित्यविजया।।
अपायान्मां पायात् सततनिरपायामृतपया।
सदातोया पेया जगति करतोयाघविलया ।।३।।

८५
भार्गवीभार्गवक्षेत्रस्तुतिः

भार्गवीबाहुदायोगे भार्गवं क्षेत्रमुत्तमम्।
वरीवर्ति क्षितौ यत्र तत्रेश्वरगदाधरौ ।।१।।
परिपिपालयिषुर्जगतः स्थितिं महति यत्र तु शेषधरे स्थितिम्।
हरिरजो व्यकरोत्तत आहृता सरिदसौ भृगुणाप्यघभीहृता।।२।।
स्वमातृहत्याकलुषाश्रयाशदन्दह्यमानो भृगुनन्दनोऽभूत्।
रामः प्रशान्तोलघयिष्यतात्र भुवो भरं तेन बलं लब्धम् ।।३।।
प्रविष्टमात्रस्य नरस्य तीर्थं दन्दह्यमानानि महान्त्यघानि।
प्रयान्ति नाशं जगतीह वन्द्यं श्रीभार्गवक्षेत्रमिहानवद्यम् ।।४।।

८७

कालहस्तीश्वरस्तुतिः

जम्बुद्वीपे भारताख्येऽत्र वर्षे हर्षेणास्थाद्यामख्भागे व्यमर्षे।
प्रत्यक्षश्रीकालहस्तीशसंज्ञः शंभुर्यत्रागोऽपि कैलाससंज्ञः ॥१॥
सुवर्णमुख्यासरतोविदूरे प्रासाद आस्ते सति याम्यतीरे।
नगोऽपि तद्दक्षिणतोऽस्त्यदूरे यस्मिन्निवासोऽस्ति सदा स्मरारेः॥२॥
यथा गौरीश ते धाम क्ष्माधरे शिव राजते।
राजते तद्वदत्रापि राजते देवराज ते ॥३॥
कैलासशैलादवतीर्य भक्तिप्रियो हरोश्तात्सगणः सशक्तिः।
यः कालहस्तीन्द्रहरिः स पायाच्छ्रीकालहस्तीश्वर आश्वपायात्॥४॥
यत्क्षेत्रदृष्ट्यापि नरस्य ताताः सद्यो विनश्यन्त्यखिलाः सपापाः।
दुर्दैवदैन्याद्यखिलं प्रकामं निवार्य यः पूरयति स्वकामम् ॥५॥

८६
वेंकटेश्वरस्तुतिः

वें ह्यव्ययं पापवाच्यमेतत्कटति वेंकटः।
कटतेर्नाशनार्थत्वात्पापहा वेंकटेश्वरः ।।१।।
परिपिपालयिषुर्जगतः स्थितिः य उ चकार ह शेषधरे स्थितिम्।
द्रुतविलम्बितगेन मया क्षितौ स खलु वेंकट ईश्वर ईक्षितः।।२।।

८८
शिवविष्णुकाञ्चीस्तुतिः

काञ्चीपुरीमहं मन्ये कांचिदेकां विभोः कलाम्।
विकला अपि यद्योगा सकलात्मत्वभाजनम् ।।१।।
काञ्ची यथा हि वस्त्रोर्ध्वं युवते राजते कटौ।
काञ्ची तथाब्धिवस्त्राया वस्त्रप्रान्ते विराजते ।।२।।
पञ्चमी मुक्तिपुर्येषा पञ्चमी योगभूरिव।
पञ्चता तस्य न पुनः पञ्चतात्रास्य जन्मिनः ।।३।।
शिवविष्णुपुरी काञ्ची कांश्चिच्चित्तां हरेन्न किम्।
न किञ्चिदपि यद्दृष्ट्या पापं तिष्ठति देहिनाम् ।।४।।
वाराणसी ह्युदक्काशी पापराशीविनाशिनी।
तथा दक्षिणकाशीयं मुक्तिद्वारमपावता ।।५।।
अतिवेगवतीयमवाच्यां वेगवती सरिदत्र हि काञ्च्याम्।
सतिवेगवती गुरुगीता वेगवतीं भिदमात्मनि कुर्यात् ।।६।।
एकाभ्रकेशाभिधभूमिलिङ्गं कामाभ्यभीष्टार्थदमात्मलिङ्गम्।
सपद्यविद्यावरणं निरस्य प्रदर्शय त्वात्मनि मे चिरस्य ।।७।।
वरदराजवरावितदुर्हृदं वरदराजमुपाश्रितसद्धृदम्।
वरदरारिकरं प्रणमाम्यजं वरदरान्तकरं तमधोक्षजम् ।।८।।
परिहृतविनतार्तिर्वारितस्वीयजूर्ति-
र्भुवनरुचिरमूर्तिर्भक्तकामप्रपूर्तिः।
जयति वरदराजो भक्तचित्तानुवर्ती
निजभजकपतिर्दिङ्मालिनी यस्य कीर्तिः ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीशिवविष्णुकाञ्चीस्तुतिः।।

८९
पक्षितीर्थस्तुतिः

यत्र शंखाभिधं तीर्थं यत्र वेदगिरिर्महान्।
भक्तवत्सल ईशश्च पक्षितीर्थं तदुत्तमम् ॥१॥
विधेः सुतौ शंभुशापाद्विधेः कङ्कत्वमेत्यसौ।
भक्तदत्तं गृह्णतोऽम्भो भक्तमन्वहमत्र हि ॥२॥
प्रांशुवेदगिरेः शीर्ष्णं निषेव्य ब्रह्मचर्यतः।
शिवमात्मानमिव यः पश्येत्स गतिमाप्नुयात् ॥३॥

९०
पिनाकिनीस्तुतिः

काञ्च्यामवाच्यामघहृद्धुनी यास्ति पिनाकिनी।
वाराही दक्षिणा चापि पुनात्वस्मान् पिनाकिनी ॥१॥

(९१)
अरुणाचलस्तुतिः

काश्यां मुक्तिर्मरणादरुणाख्यस्याचलस्य तु स्मरणात्।
अरुणाचलेशसंज्ञं तेजोलिङ्गं स्मरेत्तदामरणात् ॥२॥

पिनाकिनीस्तुतिः

द्विधेह संभूय धुनी पिनाकिनी द्विधेव रौद्री हि तनुः पिनाकिनी।
द्विधा तनोरुत्तरतोपि चैको यस्याः प्रवाहः प्रववाह लोकः ॥३॥
प्रावोत्तरा तत्र पिनाकिनी या स्वतीरगान् संवसथान्पुनानी।
अस्याः परो दक्षिणतः प्रवाहो नानानदीयुक् प्रववाह सेयम् ॥४॥
लोकस्तुता याम्यपिनाकिनीति स्वयं हि या सागरमाविवेश।
मनाक् साधनार्तिं विना पापहंत्री पुनानापि नानाजनाद्याधिहंत्री।
अनायासतो या पिनाक्याप्तिदात्री पुनात्वहंसो नः पिनाकिन्यवित्री॥
अरुणाचलतः काञ्च्या अपि दक्षिणदिक्स्थिता।
चिदम्बरस्य कावेर्या अप्युदग्या पुनातु माम् ॥६॥
याधिमासवशाच्चैत्र्यां कृतक्षौरस्य मेऽल्पका।
स्नापनाय क्षणाद्वृद्धा साद्धासेव्या पिनाकिनी ॥७॥

९२
चिदम्बरस्तुतिः

चिदम्बरस्य चिन्ता नो जाड्यं हृत्वा व्यदर्शयत्।
सर्वव्यापकतां तच्च चिन्तनीयं चिदम्बरम् ॥१॥
उदयास्तमया भावा सती चित्स्वप्रभाद्वया।
अम्बराभा सुखा तच्च चिन्तनीयं चिदम्बरम् ॥२॥
सुखं नित्यं निरुत्कर्षं भूमैव निरुपाधिकम्।
स्वरूपमेव यत्तच्च चिन्तनीयं चिदम्बरम् ॥३॥
पायादम्बरलिङ्गं नो यच्चिदम्बरनामकम्।
शेषशायिप्रभृतिपुंदोषहारिसुरावृतम् ॥४॥

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता चिदम्बरस्तुतिः

९३
कावेरीस्तुतिः

कावेरी निम्नगा वारिलहरीपापहारिणी।
तारिणी पापिनामेनां भजेऽहं पापहारिणीम् ॥१॥
स्वसा कृष्णानद्यास्त्रिजगदनवद्यामितगुणा।
स्वसाराद्यावद्यामखिलमलपद्यामतिघृणा॥
नृणां गोप्त्र्याच्छाद्य दरमसृतपद्यां हितकरीं।
व्यधात्सा कावेरी सरिदवतु नः पुण्यलहरू ॥२॥
उदीचीस्था गंगा पृथुतरतरङ्गातिकपटा।
भटान्याम्यानुच्चैर्दरकरगिरा या जयति हि॥
इयं कावेरी तु प्रसभमपि तानंतिकगता-
न्निवर्त्य स्वर्लोकं नयति निजलोकं श्रुतिमता ॥३॥
अतो जल्पं जल्पं सरिदमृतकल्पं तव यश-।
स्तटे भ्रामं भ्रामं तव खलु निकामं शुचि यशः॥
मुदा मज्जं मज्जं तव पयसि जन्माद्यकहरं।
सदा स्मारं स्मारं तव भवहमाहात्म्यमवरम् ॥४॥

अये कावेरि त्वत्तटसमटनादेवमनिशं।
नयेत्कालं मेलं तव किल जलं पुण्यधुनि शम्।
तटे श्वेतारण्यप्रभृतिवरकाशीसदृशषण्-।
महाक्षेत्राण्यन्यान्यपि तव जयंत्याधिविलये ।।५।।

कावेरि सिन्धो ननु दीनबन्धो
कारुण्यसिन्धो भवघोरसिन्धोः।
मां तारय त्वं पतितोऽग्रतस्ते
तत्राप्यपेक्षार्हति साध्विनस्ते ।।६।।

पतितोद्धरणाय साध्वि चे-
दवतारस्तव भूतले न चेत्।
पतितं हि समुद्धरिष्यसि
स्वजनुस्त्वं विफलं करिष्यसि ।।७।।

कृच्छ्रादिकव्रतमिहाचरणीयमग्रे
नेप्येथ सद्‌गतिमितीच्छसि चेत्त्वदग्रे।
वच्मि प्रसह्य खलु सह्यसुते पुनासि
त्वं सह्य इत्यृषिवचो विमतं करोषि ।।८।।

दीक्षा गृहीताजगरी गरीयसी
यद्रोधसि श्रीगुरुणारुणाभसा।
कायाधवायापि मुदर्पितास्तुवत्
कावेरिकां तां खलु वासुदेवः ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता कावेरीस्तुतिः

९४

वेदान्तपररामायणम्

दशेंद्रियरथो देही राजा दशरथः स्मृतः।
कौसल्या तत्प्रिया बुद्धी रामस्तत्रोद्‌गतः परः ।।१।।

वृत्वा सीतां स्वानुभूतिं सुखमास्तेऽथ दैवतः।
संसारविपिनं प्रापाहंकारो रावणाभिधः ।।२।।

राजसः स्वानुभूतिं तां सीतां यत्नाज्जहार ह।
रामः परात्मापि ततः स्वानुभूतिवियोगतः ।।३।।

प्राप्तो दीनदशां दुःखी शुशोच विरहातुरः।
परिभ्रमन्हनुमता विवेकेन च संगतः ।।४।।
तेन सीतास्वानुभूतिस्थितिवार्ता प्रदर्शिता।
ततो वानरसद्वृत्तिसैन्येन च हनूमता ।।५।।
सेतुं बध्वा स जलधौ साधनाश्मभिरुत्कटैः।
ततो भवाब्धिमुल्लंघ्य दीप्तज्ञानाग्निना भृशम् ।।६।।
सूक्ष्मदेहाख्यलङ्कां च दग्ध्वौपनिषदस्त्रतः।
कामक्रोधादि रक्षांसि हत्वा युद्धे सहस्त्रशः ।।७।।
सात्त्विकाहंकारबिभीषणसाहाय्यतस्ततः।
कुंभकर्णं तामसाहंकारं राजसमप्यथ ।।८।।
निहत्य रावणं स्वानुभूतिं सीतां प्रगृह्य च।
रामः स्वरूपसाम्राज्येऽभिषिक्तोऽरीरमत्तया ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं वेदान्तपररामायणम्।।

९५

वेदान्तपरभागवतम्

वसुदेवः शुद्धसत्त्वं तद्वृत्तिर्देवकी मता।
कृष्ण आत्माऽऽगतस्तत्र पितृबन्धविमोचकः ।।१।।
गोकुलं प्रापितोऽथापि दैवात्पित्रेन्द्रियाभिधम्।
सवृत्तिसात्त्विकात्माख्ययशोदानन्दतातभाक् ।।२।।
दुर्वासनापूतनाघ्नो रेमे गोप्याख्यवृत्तिभिः।
विलीय तत्सञ्चितगोरसाद्गोगोपपालकः ।।३।।
नानाकौतुककृद्दुर्हृद्वृत्तिवृन्दावने स्थितः।
गोप्याशापूरकोऽविद्यानिशायां चित्ररासकृत् ।।४।।
गोप्योर्द्वयोर्द्वयोर्मध्ये वशस्तदनुरूपवत्।
रेमे दैवात्तद्वियुक्तो दुर्हृत्प्राक्पितृसंगतः ।।५।।
भवाब्धिमध्ये देहाख्यां कृत्वा द्वारवतीं पुरीं।
सोऽनुप्रविष्टस्तां तत्र वृत्त्याख्या विविधाः स्त्रियाः।।६।।
सर्वाः पतिव्रताः कान्तं मेनिरे तं वशीकृतम्।
आत्मारामोऽप्यसंगोऽपि ततो दीन इवाबभौ ।।७।।

षोडशस्त्रीसहस्त्रेशः संसारं समवर्धयत्।
परोपदेशकृत्पञ्चप्राणपाण्डवपालकः ।।८।।
उरीकृत्य ब्रह्मशापं विनाश्य स्वजनान् क्षणात्।
पुरीं द्वारवतीं चापि कृष्ण एकस्ततः स्वयम् ।।९।।
हृतपाण्डवसारोऽगाद्वैकुण्ठं पूर्वधाम तत्।
भक्तः सुभक्त्या भगवत्संबन्धीदं सदा पठेत्।
भवार्तिहृद् भागवतं स नूनं भवभर्जकः ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं वेदान्तपरभागवतम्।।

९६
वेदान्तपरत्रिवेणी

इंद्रियाणां जडानां च विषयाणां च तादृशां।
वैरस्यं ज्ञानपूर्वं यद्विरक्तिः सा प्रकीर्तिता ।।१।।
जडौघान्नश्वराद्दृश्याद्बुद्धिवृत्तिं निवर्त्य च।
चैतन्यप्रवणा कार्या भक्तिः सा परिकीर्तिता ।।२।।
सर्वान्तरोऽस्मि घनचित्प्रकाशात्मेति या मतिः।
महावाक्यविचारोक्ता सात्मज्ञप्तिः प्रकीर्तिता ।।३।।
एता हि यमुनागंगासरस्वत्योऽत्र संगताः।
त्रिवेणी सैव तत्रैव स्नानाद्रागाद्यघक्षयः ।।४।।
गुणत्रिवेणीदानं धीस्त्रियः कुर्यात्पुमानिह।
पातकेच्छोद्भवो नात्र पुनरन्यत्र तूद्भवः ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता वेदान्तत्रिवेणी संपूर्णा।।

९७
मानसपूजा

अथ प्रबोधः

अजितामृत योगनिद्रिताच्युतशक्तेः स्वकृतातिमोहित
द्युमुखे श्रुतिबन्दिगीततो भगवज्जागृहि जागृहि त्र्यधीट् ।।१।।

अथ ध्यानम्

यतोऽस्य जननाद्यजः स्ववशमाय आद्यो विभुः।
स्वराट् सकलविद्गुरुः स सुखसच्चिदात्मा प्रभुः।।
असंसृतिरूप उज्झितमलोऽमुमैक्याप्तये
निवर्त्य नयनं निषेधविधिवाक्यतश्चिन्तये ।।२।।

अथावाहनम्

कार्यक्षमान्वीक्ष्य पृथग्युतान्वा योऽनुप्रविश्यापि विभुर्निजांशात्।
निन्ये प्रभुत्वं हि महन्मुखांस्तमुपाह्वये त्रीशमनन्यचित्तः ।।३।।

अथासनम्

अनेजज्जवीयो हृदोऽप्याप्नुवन्नो सुराः पूर्वमर्शत्पराञ्चोऽपि तिष्ठत्।
परान्धावतोऽत्येति यद्ध्यासनं ते त्र्यधीशार्पितं चित्तमस्तान्यवृत्ति।४।

अथ पाद्यम्

राहोः शीर्षवदौपचारिकभिदा विष्णो पदं त्रीश ते
प्रत्यक्तच्च निसर्गशुद्धमपि सन्मायांशतोऽशुद्धवत्।।
भातं मूढधिया तदर्थममलं ज्ञानामृतं यत्नतो
धीपात्रेऽत्र हिरण्मये विनिदितं पाद्यं गृहाणात्मभ ।।५।।

अथार्घ्यम्

देवाचार्यप्रसादप्रजनितसुरसंपत्तिसद्रत्नजात-
श्रेण्याढ्ये मञ्जुलेऽस्मिन्नतितरविमले भाजने वै विशाले।।
चेतःसंज्ञेऽविलोले धृतभजनजलाद्वेष्टृताद्यर्थजाले
स्वर्घ्यं संपादितं ते त्र्यधिप परम भोः स्वीकुरुष्वाप्तकाम ।।६।।

अथाचमनम्

विधिवच्छ्रवणादि यत्कृतं ते त्र्यधिपाभव मे प्रसीद शंभो।।
द्विविधावरणाम्बु तेऽर्पितं सत्कृपयाऽऽचमनं कुरुष्व तेन ।।७।।

अथ स्नानम्

प्रवचनादिसुदुर्लभताश्रुतेस्त्र्यधिपते त इह श्रुतिविश्रुते।।
परमभक्तिसुशीतलसज्जलं वपुषि सिक्तमथाऽऽप्लुतयेऽस्त्वलम्।।८।।

अथ वस्त्रम्

यत्किञ्चिज्जगति त्रीश तत्त्वया वास्यमीश ते।।
वस्त्रत्वेनार्पितं तेन परानन्दार्हतास्तु मे `।।९।।

अथ यज्ञसूत्रम्

यद्ब्रह्मसूत्रं त्रिवृतं पवित्रं कृत्वा समंत्रं त्रिपस स्वतंत्रम्।।
दत्तं सुमित्रं भज तेन चात्र सत्रं सुपात्रं कुरु मान्यतंत्रम् ।।१०।।

अथ चंदनम्

आल्हादनं चन्दनमुच्यते तत्सत्यर्तरूपं न ततः परं ते।।
प्रेष्ठं त्र्यधीशागुण तेन नूनमालेपनं ते प्रकरोमि भक्त्या ।।११।।

अथ पुष्पम्

भगवन्त्र्यधिप प्रददामि मुदे सुमनः सुमनः सकलार्थविदे।।
खलु तुभ्यममूल्यमघौघभिदे सुमनः सुमनस्कमनन्यहृदे ।।१२।।

अथ धूपः

योगानलेऽत्र बलदर्पपरिग्रहाहंकाराभिलाषममताप्रतिघांश्च दग्ध्वा।।
धूपोऽयमुत्तमतमोऽर्पित आर्य शान्तिद्वारा त्र्यधीश पदपर्यवसाय्यसौ ते।

अथ दीपः

सोऽहंभावप्रोज्वलज्ज्ञानदीपो मूलाज्ञानध्वान्तसंपातहृत्यै।।
स्थेयान्भास्वाँन्भाश्वतस्त्रीश तुभ्यं स्वात्मज्योतिर्दत्त एतं गृहाण।।१४।।

अथ नैवेद्यः

यस्य ब्रह्मक्षत्रे मित्रे ग्रासो मृत्युर्लेह्यं पेयम्।।
क्वान्वेष्टव्यं तस्मै कस्मै नैवेद्यार्थं दत्तं द्वैतम् ।।१५।।

अथ ताम्बूलः

त्रीश तेऽद्य परभक्तिवीटिका पञ्चमैकपुरुषार्थसाधिका।।
निर्विकल्पसमाधितः पुरा रञ्जिकास्तु भवभञ्जिका वरा ।।१६।।

अथ प्रदक्षिणा

त्वं त्रीशाहमहं त्वमित्यवगतेः स्थेम्ने निदिध्यासना-
त्मानस्ते परिदक्षिणा हि विहिता यद्यच्च मे क्रीडितम्।।
तद्ब्रह्मास्तु चिदन्वये क्षितुरथोत्वानुस्मरन्व्याहरे
तारं तारकमेकमात्मनि यथा शार्दूलविक्रीडितम् ।।१७।।

अथ नमस्कारः

असकृदभिहिता तेनेकजन्माप्तपुण्यैः
प्रणतिविततिरेषाद्वैतशेषाविशेषा।।

त्वयि विनिहितमेतन्मे ज्ञ सर्वं स्वकीयं
त्र्यधिप जयतु पूजा त्वद्यशो*मालिनी*यम् ।।१८।।

अथ क्षमापना

यन्मे न्यूनं संमतं स्थूलदृष्ट्या भूमन्तेनुक्रोशपीयूषवृष्ट्या।।
नित्यं प्रेयः स्वप्रभं शालिनीयं तस्याभूत्संपूर्णताशालिनीयम् ।।१९।।

रोधनं द्व्यात्मनं शोधनं चात्मनः
पूजनं त्र्यात्मनो भोजनं स्वात्मनः।।
यत्र सैषात्मपूजास्तु कण्ठे सतां
स्रग्विणी मापरा स्त्रीव कण्ठेऽसताम् ।।२०।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता आत्मपूजा संपूर्णा।।

९८

ब्रह्मसूत्रम्

चित्तूलजातं यदु चित्तवृत्तं त्रिवृत्कृतं येन च भूतजातम्।।
यत्पूर्वजातं यदु नैव जातं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।१।।
त्रिलोकसूत्रं खलु यत्सुमंत्रं त्रिवृत्तगात्रं नवदेवमात्रम्।।
यद्वै त्रिमात्रं यदनन्तमात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।२।।
प्रजापतेर्यत्खलु पूर्वजातं यज्ञोपवीतं सहजातमात्तम्।।
सत्त्वेन मुक्तं त्रिगुणेन शक्तं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।३।।
दक्षोद्धृतं चेद्यदु विश्वसूत्रं सदा पवित्रं प्रकरोति सूत्रम्।।
एनोलवित्रं भजतैकपात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।४।।
यद्ब्रह्मसूत्रं यदु वस्तुतंत्रं यतः स्वतंत्रं परतन्त्रयन्त्रम्।।
तमाहुरत्रेः परमं सुपुत्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।५।।
यमत्रिपुत्रं ब्रुवते पवित्रमसाध्वमित्रं किल साधुमित्रम्।।
अतीव चित्रं सुविचित्रगात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।६।।
अनन्यया सूत्रमिदं पवित्रं भक्त्या धृतं चेत्सुविशुद्धगात्रम्।।
भवेत्पवित्रात्स पवित्र एव तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।७।।
स ब्राह्मणो यो मनसा बिभर्ति यद्वा नरो यो वचसा बिभर्ति।।
यद्वाप्यदंभः श्रवसा बिभर्ति तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।८।।
द्विजोऽपि चेद्येन विवर्जितः स चण्डाल एवास्य च धारणेन।।
सद्ब्राह्मणत्वं खलु हीनजातेस्तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेह्यजातम् ।।९।।

नवसूत्रमहोरात्रं योऽत्रिपुत्रमयं द्विजः।
ब्रह्मसूत्रमिदं धत्ते स यातीह पवित्रताम् ॥१०॥

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं ब्रह्मसूत्रं संपूर्णम्।।

९९

षट्पञ्चाशिका

आत्मा सच्चित्सुखो दत्तो रक्तोष्णाकाशदीपवत्।।
मायाब्धिनौर्दृढाऽसंगा तद्भक्तिर्न तथा प्लवः।।१।।
भवाध्वतापश्रान्तस्य सीतारामः समाश्रयः।।
यथाध्वतापश्रान्तस्य शीतारामः समाश्रयः ।।२।।
भवाम्बुधिनिमग्नस्य तारिणी भगवत्कथा।।
यथाम्बुधिनिमग्नस्य तरणिर्विधिचोदिता ।।३।
भवतापाभितप्तस्य शरणं न गुरोः परम्।।
दवतापाभितप्तस्य शरणं न घनात्परम् ।।४।।
रोचते सुविरक्तस्य न सांसारिकपुंकथा।।
यथा पित्तज्वरार्तस्य सुरसान्नादिसत्कथा ।।५।।
शृणोति सर्वं संन्यस्य श्रुतिवार्ता स आदरात्।।
परव्यसनिनी नारी जारवार्तां यथाऽऽदरात्।।६।।
कथंचन त्यजेन्नैव विवेकी शान्तिगेहिनीम्।।
यथा कामसंतप्तोऽविवेकी कान्तगेहिनीम् ।।७।।
मुक्तिर्न सुलभाऽध्यासभातनानात्वदर्शिनः।।
आदर्शबिम्बितानेकद्वारदर्शिशिशोरिव ।।८।।
धीमाञ्छमादिसंपन्नः सद्गुरूक्त्या लभेत्पदम्।।
चोरैस्त्यक्तो वने यद्वत्तदभिज्ञगिरा नरः ।।९।।
भवान्भूमेत्यकर्तात्मत्वं व्रजेत्सद्गुरोर्गिरा।।
भिल्लपालितराट्पुत्र आप्तोक्त्या राजतामिव।।१०।।
कूटस्थसच्चिदानन्दतनोर्बन्धविमोचने।।
पुत्रस्य जातिवन्ध्याया इव जन्मोत्सवात्ययौ।।११।।
वाचारंभणमात्रं चित्तनौ विश्वं न चापरम्।।

वस्त्वन्तरं यथा ध्वान्ते रज्जौ सर्पविसर्पणम्।।१२।।
विषयग्रहणेच्छा तु स्वात्मविज्ञानतः पुरा।।
अज्ञस्य शुक्तिविज्ञानात्पुरेव रजतस्पृहैं ।।१३।।
भ्रममात्रमसद्विश्वं ज्ञातं चेत्तेन कः सुखी।।
को नाम शुक्तिरौप्येण जातो धनसमृद्धिमान्।।१४।।
जगदस्तित्ववादो न स्वात्मज्ञाने प्रकाशिते।।
ध्वान्ते स्थाणौ पिशाचादिभ्रान्तिर्दीप इवाहृते।।१५।।
आश्चर्यमेतद्विश्वं न पुराद्योर्ध्वं न भाति चेत्।।
भातु नामेन्द्रजालाभं चिदात्मनि तु मायया ।।१६।।
असच्चेज्ज्ञस्य नेतोऽपि व्यवहारः क्षणं कुतः।।
नायं दोषोऽपि जानन्सन्निन्द्रजालं हि वीक्षते।।१७।।
एकोऽपि सन्नयं भूमा मायया भात्यनेकवत्।।
पुंसो यथाक्षिदोषेण चन्द्र एको द्वितीयवत् ।।१८।।
आत्मोपाधिवशाद्भाति निश्चलोऽपि हि चञ्चलः।।
विकारी निर्विकारोऽपि जलोपाधिगतार्कवत्।।१९।।
नित्यं भ्रमादिवाभाति मायाभ्रमविजृम्भितम्।।
जगच्चक्रं यथाऽलातचक्रं भ्रान्तदृशेरिह ।।२०।।
विद्योतते नात्मविद्या यावत्तावच्चिदम्बरे।।
विविधं भाति विश्वं खे गन्धर्वनगरं यथा ।।२१।।
आरोपितजगद्बाध आत्मैकः परिशिष्यते।।
शत्रून्हत्वाखिलान्युद्धे महावीरो यथैककः ।।२२।।
विक्षेपः शिष्यते मायावरणेऽपि विघातिते।।
उपादाने विनष्टेऽपि कार्यं तिष्ठति हि क्षणम्।।२३।।
समे प्रारब्धभोगेऽपि ज्ञानी क्लिश्यति नाज्ञवत्।।
समेऽप्यध्वश्रमेऽध्वज्ञो दैन्यं नैति यथाज्ञवत् ।।२४।।
पतत्वद्य युगान्ते वा वपुर्मुक्तस्य चित्तनोः।।
कुंभे भग्ने स्थिते वा द्योर्हानिलाभौ कुतस्ततः।।२५।।

सङ्कल्पमात्रं विश्वं सद्भाति मन्दमतेर्यथा।।
सङ्कल्पमात्रभाता स्त्री सत्या विरहिणो भ्रमात्।।२६।।
स्वस्वरूपस्थितौ सत्यां दुःखं नैव सुखात्मनि।।
यथा वास्यादिके त्यक्ते कष्टं त्वष्टरि नैव तत्।।२७।।
नाध्यात्मिकादिछन्नोऽपिजात्वेकरसतां विभुः।।
त्यजत्यात्मा यथा लोके पटतां चित्रितः पटः ।।२८।।
कामं सृजतु कूटस्थे माया विश्वं चिदम्बरे।।
नास्य लाभो न वा हानिर्वर्षत्याब्दे यथा दिवः।।२९।।
करणव्यवहारैस्तु कूटस्थात्मा न लिप्यते।।
न लिप्यते यथा कूटो लोहानामपि ताडनैः ।।३०।।
तत्तन्मय इवाभातोऽप्यात्मा कोशेभ्य उत्तरः।।
तेभ्यो विवेचितः शुद्धः स्फटिको रङ्गतो यथा।।३१।।
मुक्तात्मा व्यवहारेऽपि स्थितस्तेन न लिप्यते।।
असंगत्वात्ततोऽन्यत्वात्पद्मपत्रमिवाम्भसा ।।३२।।
देहादितापतप्तोऽहमिति धीरविवेकिनः।।
पुत्रदारेषु तप्यत्सु तपमीति मतिर्यथा ।।३३।।
सच्चिदानन्दरूपोऽहमेवं निश्चयवानपि।।
मर्त्योऽस्मीति कदाचिद्दिग्भ्रमवन्मनुते क्षणम्।।३४।।
निराकृत्य त्यजेद्विश्वं सारमास्वाद्य नीरसम्।।
यथा त्यजति निःसारं फलं स्वादु रसं पिबन्।।३५।।
नात्यन्तासन्नमात्मानं मूढः पश्यति दुष्टदृक्।।
यथा दिवान्ध उदितमर्कं लोकप्रकाशकम् ।।३६।।
विभाव्याज्ञोऽन्यं प्रपञ्चं सुखं चापि बिभेति यः।।
दीपादिता दृश्यमानां स्वच्छायामिव बालकः।।३७।।
माया खादिविकारैर्न ब्रह्मान्यथयितुं क्षमा।।
विमलं खं यथाऽध्यस्तधर्मा मलिनतादयः ।।३८।।
व्यभिचारिसुषुप्त्यादिदशा बुद्धिगुणोदिताः।।
बुधे स्वीया न निर्मोका यथा सर्पगुणोदिता।।३९।।

व्यवहारोऽङ्गसापेक्षः प्नो जाग्रदितीक्षितुः।।
गृहिणो गेहसापेक्षबाह्यान्तर्व्यवहारवत् ।।४०।।
यस्य निद्रा समाधिर्वा सुखा सर्वोपसंहृतिः।।
व्यापारकुलितस्येव सुखा सर्वोपसंहृतिः ।।४१।।
कामं करोतु विधितो मुक्तः कर्तास्य तेन किम्।।
स्तोकाभ्रच्छादितोऽर्को यो राहुग्रस्तो भवेत्स किम्।।४२।।
मिथ्याजगत्समुल्लासात्प्रबुद्धस्य कथं भयम्।।
व्याघ्रादीन्पश्यतः स्वप्नात्प्रबुद्धस्य कथं भयम्।।४३।।
आदेयात्मनिरीक्षार्थमनात्मधियमुज्वलाम्।।
यथाऽऽस्यहीनमुकरो मुखसौन्दर्यवीक्षणे ।।४४।।
क्रमेण वर्धमानेऽन्तर्बोधे हार्दतमःक्षयः।।
कलाभिर्वर्धमानेऽब्जे यथा नैशतमःक्षयः ।।४५।।
प्राज्ञोऽपि बोधितोऽन्तर्दृग्जानात्यन्यन्न किञ्चन।।
ग्रासे ग्रासे बोधितोऽपि निद्राण इव बालकः।।४६।।
स्वानुभूतिरसास्वादे विषया विरसा विदः।।
यथाऽऽरनालं विरसं परमामृतपायिनः ।।४७।।
पूर्वाभ्याससमाधिं ज्ञो वाञ्छत्याप्ताखिलात्मनः।।
कालात्ययाय राजेव सुसमृद्धोऽपि देवनम् ।।४८।।
नाऽऽनन्दयति विध्यादि निस्त्रैगुण्याध्वचारिणम्।।
निर्व्यापारालसनरं देशिका देशिनं यथा ।।४९।।
चिन्तयानोऽपि तत्त्वं स्वं स्वच्छन्दो न नियम्यते।।
साम्राज्यगं स्वतन्त्रं च प्रजाभिरिव राट्सुतः।।५०।।
परमार्थदृशः क्वापि नेष्टानिष्टे शुभाशुभे।।
वृष्ट्याऽवृष्ट्याऽप्पूरस्थसस्यवृद्धिक्षयाविव ।।५१।।
श्रुत्याद्यावृत्तियोगाग्न्युज्वलितः पूर्वरूपभाक्।।
जीव आत्मैव चागन्तुमलदाहे सुवर्णवत् ।।५२।।
कीटभ्रमरदृष्ट्या न चित्रं स्वध्यानतः स्वता।।
नामरूपोपाध्यपाये सत्यैक्यं सरिदब्धिवत् ।।५३।।

चित्रप्रापञ्चिकैश्वर्यं तत्त्वज्ञं रञ्जयेत्कथम्।।
हावैः स्त्रीवेषधृक्स्वज्ञहृदुन्मथयतीह किम् ।।५४।।
ज्ञानी क्षीणान्यकर्मापि प्रारब्धं सहतेऽवशी।।
व्यालग्राही गृहीताहिर्यथा तत्कृतपीडनम् ।।५५।।
प्राप्तकामं स्थितप्रज्ञं स्वयं कामा विशन्ति तैः।।
शान्तो नोत्सर्पति यथा पूर्णाब्धिरचलाम्बुभिः।।५६।।
या षट्पञ्चाशिका वासुदेवानन्दीयमुद्गता।।
वानवासीपुरि तया प्रीयतामत्रिनन्दनः ।।५७।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता षट्पञ्चाशिका संपूर्णा।।

१००

श्रीदत्तात्रेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ॐकारतत्त्वरूपाय दिव्यज्ञानात्मने नमः।
नभोतीतमहाधाम्न ऐंद्र्यृध्या ओजसे नमः ।।१।।
नष्टमत्सरगम्यायागम्याचारात्मवर्त्मने।
मोचितामेध्यकृतये -हींबीज श्राणितश्रिये ।।२।।
मोहादिविभ्रमांताय बहुकायधराय च।
भत्तदुर्वैभवछेत्रे क्लींबीजवरजापिने ।।३।।
भवहेतुविनाशाय राजच्छोणाधराय च।
गतिप्रकंपितांडाय चारुव्या यतबाहवे ।।४।।
गतगर्वप्रियायास्तु यमादियतचेतसे।
वशिताजातवश्याय मुंडिने अनसूयवे ।।५।।
वदद्वरेण्यवाग्जालाविस्पृष्टविविधात्मने।
तपोधनप्रसन्नायेडापति स्तुतकीर्तये ।।६।।
तेजोमण्यंतरंगाया?रस?विहापने।
आंतरस्थानसंस्थायायैश्वर्य श्रौतगीतये ।।७।।
वातादिभययुग्भावहेतवे हेतुबेतवे।
जगदात्मात्मभूताय विद्विषत् षट्कघातिने ।।८।।
सुरवर्गोद्धृते भृत्या असुरावासभेदिने।
नेत्रे च नयनाक्ष्णे चिच्चेतना य महात्मने ।।९।।

देवाधिदेवदेवाय वसुधासुरपालिने।
याजिनामग्रगण्याय द्रांबीज जपतुष्टये ।।१०।।
वासनावनदावाय धूलियुग्देहमालिने।
यतिसंन्यासिगतये दत्तात्रेयेति संविदे ।।११।।
यजनास्यभुजेजाय तारकावासगामिने।
महाजवास्पृग्रूपायात्ताकारा य विरूपिणे ।।१२।।
नराय धीप्रदीपाय यशस्वियशसे नमः।
हारिणे चोज्वलांगायात्रेस्तनू जाय संभवे ।।१३।।
मोचितामरसंघाय धीमतां धीरकाय च।
बलिष्ठविप्रलभ्याय यागहो मप्रियाय च ।।१४।।
भजन्महिमविख्यात्रेऽमरारिमहिमच्छिदे।
लाभाय मुंडिपूज्याय यमिने हेममालिने ।।१५।।
गतोपाधिव्याधये च हिरण्याहितकांतये।
यतीन्द्रचर्यां दधते नरभावौषधाय च ।।१६।।
वरिष्ठयोगिपूज्याय तंतुसंतन्वते नमः।
स्वात्मगाथासुतीर्थाय मःश्रिये षट् कराय च ।।१७।।
तेजोमयोत्तमांगाय नोदनानोद्यकर्मणे।
हान्याप्तिमृतिविज्ञात्र ॐकारितसुभक्तये ।।१८।।
रुक्शुङ्मनःखेदहृते दर्शनाविषयात्मने।
रांकवाततवस्त्राय नरतत्त्वप्रकाशिने ।।१९।।
द्रावितप्रणताघायात्तः स्वजिष्णुः स्वराशये।
राजन्त्र्यास्यैकरूपाय मःस्थायमसुबंधवे ।।२०।।
यतये चोदनातीतप्रचारप्रभवे नमः।
मानरोषविहीनाय शिष्यसंसिद्धिकारिणे ।।२१।।
गंगे पादविहीनाय चोदनाचोदितात्मने।
यवीयसेऽलर्कदुःखवारिणेऽखंडितात्मने ।।२२।।
-ह्रींबीजायार्जुनज्येष्ठाय दर्शनादर्शितात्मने।
नतिसंतुष्टचित्ताय यतिने ब्रह्मचारिणे ।।२३।।
इत्येष सत्स्तवो वृत्तोयात् कं देयात्प्रजापिने।
मस्करीशो मनुस्यूतः परब्रह्मपदप्रदः ।।२४।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं
मंत्रगर्भश्रीदत्तात्रेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्।।

१०१
।।श्रीदत्तात्रेयप्रार्थनास्तोत्रम्।।

श्रीपाद श्रीवल्लभ त्वं सदैव । श्रीदत्तास्मान्पाहि देवाधिदेव ।।
भावग्राह्य क्लेशहारिन्सुकीर्ते । घोरात्कष्टादुद्धरास्मान्नमस्ते ।।१।।
त्वं नो माता त्वं पिताऽऽप्तोऽधिपस्त्वं । त्राता योगक्षेमकृत्सद्गुरुस्त्वम् ।।
त्वं सर्वस्वं नोऽप्रभो विश्वमूर्ते । घोरात्कष्टादुद्धरास्मान्नमस्ते ।।२।।
पापं तापं व्याधिमाधिं च दैन्यं । भीतिं क्लेशं त्वं हराऽऽशु त्वदन्यं ।।
त्रातारं नो वीक्ष्य ईशास्तजूर्ते । घोरात्कष्टादुद्धरास्मान्नमस्ते ।।३।।
नान्यस्त्राता नापि दाता न भर्ता । त्वत्तो देव त्वं शरण्योऽकहर्ता ।।
कुर्वात्रेयानुग्रहं पूर्णराते । घोरात्कष्टादुद्धरास्मान्नमस्ते ।।४।।
धर्मे प्रीतिं सन्मतिं देवभक्तिं । सत्संगाप्तिं देहि भुक्तिं च मुक्तिं ।
भावासक्तिं चाखिलानंदमूर्ते । घोरात्कष्टादुद्धरास्मान्नमस्ते ।।५।।
श्लोकपंचकमेतद्यो लोकमंगलवर्धनम् ।
प्रपठेन्नियतो भक्त्या स श्रीदत्तप्रियो भवेत् ।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयप्रार्थनास्तोत्रं संपूर्णम्।।

१०२
श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

दत्तात्रेयं महात्मानं वरदं भक्तवत्सलम्।
प्रपन्नार्तिहरं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।१।।
दीनबन्धुं कृपासिन्धुं सर्वकारणकारणम्।
सर्वरक्षाकरं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।२।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणम्।
नारायणं विभुं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।३।।
सर्वानर्थहरं देवं सर्वमंगलमंगलम्।
सर्वक्लेशहरं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।४।।
शोषणं पापपंकस्य दीपनं ज्ञानतेजसः।
भक्ताभीष्टप्रदं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।५।।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वपीडानिवारणम्।
तापप्रशमनं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।६।।

ब्रह्मण्यं धर्मतत्त्वज्ञं भक्तकीर्तिविवर्धनम्।
आपदुद्धरणं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।७।।
जन्मसंसारबंधघ्नं स्वरूपानन्ददायकम्।
निःश्रेयसप्रदं वन्दे स्मर्तृगामी स माऽवतु ।।८।।
जयलाभयशःकामदातुर्दत्तस्य यः स्तवम्।
भोगमोक्षप्रदस्येमं प्रपठेत्स कृती भवेत् ।।९।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१०३
श्रीदत्तस्तोत्रम्

अनसूयात्रिसंभूत दत्तात्रेय महामते।
सर्वदेवाधिदेव त्वं मम चित्तं स्थिरीकुरु ।।१।।
शरणागतदीनार्ततारकाऽखिलकारक।
सर्वचालक देव त्वं मम चित्तं स्थिरीकुरु ।।२।।
सर्वमंगलमांगल्य सर्वाधिव्याधिभेषज।
सर्वसंकटहारिन् त्वं मम चित्तं स्थिरीकुरु ।।३।।
स्मर्तृगामी स्वभक्तानां कामदो रिपुनाशनः।
भुक्तिमुक्तिप्रदः स त्वं मम चित्तं स्थिरीकुरु ।।४।।
सर्वपापक्षयकरस्तापदैन्यनिवारणः।
योऽभीष्टदः प्रभुः स त्वं मम चित्तं स्थिरीकुरु।।५।।
य एतत्प्रयतः श्लोकपञ्चकं प्रपठेत्सुधीः।
स्थिरचित्तः स भगवत्कृपापात्रं भविष्यति ।।६।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१०४
औदुंबरपादुकास्तोत्रम्

वन्दे वाङ्मनसातीतं निर्गुणं सगुणं गुरुम्।
दत्तमात्रेयमानन्दकन्दं भक्तेष्टपूरकम् ।।१।।
नमामि सततं दत्तमौदुम्बरनिवासिनम्।

यतीन्द्ररूपं च सदा निजानन्दप्रबोधनम् ॥२॥
कृष्णा यदग्रे भुवनेशानी विद्यानिधिस्तथा।
औदुम्बराः कल्पवृक्षाः सर्वतः सुखदाः सदा ॥३॥
भक्तवृन्दान्दर्शनतः पुरुषार्थचतुष्टयम्।
ददाति भगवान् भूमा सच्चिदानन्दविग्रहः ॥४॥
जागर्ति गुप्तरूपेण गोप्ता ध्यानसमाधितः।
ब्रह्मवृन्दं ब्रह्मसुखं ददाति समदृष्टितः ॥५॥
कृष्णा तृष्णाहरा यत्र सुखदा भुवनेश्वरी।
यत्र मोक्षदराड्दत्तपादुका तां नमाम्यहम् ॥६॥
पादुकारूपियतिराण्नरसिंहसरस्वती।
राजते राजराजश्रीदत्तश्रीपादवल्लभः ॥७॥
नमामि गुरुमूर्ते तं तापत्रयहरं हरिम्।
आनंदमयमात्मानं नवभक्त्या सुखप्रदम् ॥८॥
करवीरस्थविदुषमूढपुत्रं विनिन्दितम्।
छिन्नजिह्वं बुधं चक्रे तद्वन्मयि कृपां कुरु ॥९॥

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं औदुम्बरपादुकास्तोत्रं संपूर्णम्॥

१०५

श्रीपादश्रीवल्लभस्तोत्रम्

ब्राह्मण्यै यो मंक्षु भिक्षान्नतोऽभूत्प्रीतस्तस्या यः कृपार्द्रः सुतोऽभूत्॥
विस्मृत्यास्मान् किं स गाढं निदद्रौ श्रीपादद्रौ वापदाहानिदद्रौ॥१॥
आश्वास्याम्बां प्रव्रजन्नग्रजान्यः कृत्वा स्वङ्गान् संचचारार्यमान्यः॥
विस्मृत्यास्मान् किं स गाढं निदद्रौ श्रीपादद्रौ वापदाहानिदद्रौ॥२॥
सार्भा मर्तुं योद्यता स्त्रीस्तु तस्या दुःखं हर्तुं त्वं स्वयं तत्सुतः स्याः॥
विस्मृत्यास्मान् किं स गाढं निदद्रौ श्रीपादद्रौ वापदाहानिदद्रौ॥३॥
राज्यं योऽदादाशु निर्णेजकाय प्रीतो नत्या यः स्वगुप्त्यै नृकायः॥
विस्मृत्यास्मान् किं स गाढं निदद्रौ श्रीपादद्रौ वापदाहानिदद्रौ॥४॥
प्रेतं विप्रं जीवयित्वाऽस्तजूर्ति यश्चक्रे दिक्शालिनीं स्वीयकीर्तिम्॥
विस्मृत्यास्मान् किं स गाढं निदद्रौ श्रीपादद्रौ वापदाहानिदद्रौ॥५॥

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीपादश्रीवल्लभस्तोत्रं संपूर्णम्॥

१०६.

श्रीनृसिंहसरस्वतीप्रार्थनाष्टकम्

ऋतकृत्स्वगिरोऽमरोऽभवद् द्विजपत्न्यास्तनयोऽपि योऽभवः ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।१।।
प्रणवं प्रपपाठ जन्मतो विजहाराल्पदशोऽपि सन्मतः ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।२।।
मृतविप्रसुतं व्यजीवयद्य उ वंध्यामहिषीमदोहयत् ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।३।।
स्वतनुं यतये व्यदर्शयद्-द्विजगर्वं बुरुडाद्व्यनाशयत्।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।४।।
प्रददौ हि मृतप्रियस्त्रिया अपि सौभाग्यमु यन्नमस्क्रिया ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।५।।
स्वमुदेऽभवदन्नवृद्धिकृत् सुवशायाऽपि वंशवृद्धिकृत् ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।६।।
द्रुरकार्यपि शुष्ककाष्ठतः कुसुरौ येन शुची च कुष्ठतः ।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।७।।
अमराख्यपुरे च योगिनीवरदो योऽखिलदोऽस्ति योगिनीः।
स नृसिंहसरस्वती यतिर्भगवान् मेऽस्ति परा वरा गतिः ।।८।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीनृसिंहसरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१०७

श्रीदत्तगुरुपञ्चकम्

सुनीलमणिभासुरादृतसुरातवार्ता सुरा-
सुरावितदुराशरावितनरावराशाम्बरा।।
वरादरकरा कराक्षणधरा धरापादरा-
दरारवपरा परा तनुरिमां स्मराम्यादरात् ।।१।।
सदादृतपदा पदाहृतपदा सदाचारदा
सदानिजहृदास्पदा शुभरदा मुदासंमदा।।
मदांतकपदा कदापि तव दासदारिद्रहा
वदान्यवरदास्तु मेऽन्तर उदारवीरारिहा ।।२।।
जयाजतनयाभया सदुदया दयार्द्राशया
शयात्तविजयाजया तव तनुस्तया हृत्स्थया।।

नयादरदया दयाविशदया वियोगोनया
तयाश्रय न मे हृदास्तु शुभया भया भातया।।३।।
चिदात्यय उरुं गुरुं यमृषयोपि चेरुर्गुरुः
स्वशांतिविजितागुरुः समभवत्स पृथ्वीगुरुः।।
अजं भवरुजं हरन्तमुषिजं नरा अत्रिजं
भजन्तु तमधोक्षजं सुमनसाऽनसूयात्मजम्।।४।।
नमोऽस्तु गुरवे स्वकल्पतरवेऽत्र सर्वोरवे
रवेरधिरुचे शुचे मलिनभक्तहृत्कारवे।।
अवेहि तव किङ्करं शिरसि धेहि मे शंकरं
करं तव वरं वरं न च परं वृणे शंकरम् ।।५।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तगुरुपञ्चकं संपूर्णम्।।

१०८

श्रीनृसिंहवाडी-दत्तपादुकाष्टकम्

(वृत्तगर्भम्)

कृष्णावेणीपञ्चगङ्गायुतिस्थं श्रीपादं श्रीवल्लभं भक्तहृत्स्थम्।।
दत्तात्रेयं पादुकारूपिणं तं वंदे विद्यां *शालिनीं* संगृणन्तम् ।।१।।
***उपेन्द्रवज्रा*युधपूर्वदेवैः सपूर्वदेवैर्मुनिभिश्च गीतम्।।**
नृसिंहसंज्ञं निगमागमाद्यं गमागमाद्यंतकरं प्रपद्ये ।।२।।
परिहृतनतजूर्तिः स्वीयकामप्रपूर्ति-
र्हृतनिजभजकार्तिः सच्चिदानन्दमूर्तिः।।
सदयहृदयवर्ती योगविच्चक्रवर्ती
स जयति यतिराट् *दिङ्मालिनी* यस्य कीर्तिः ।।३।।
***द्रुतविलम्बित*कर्मविचारणा फलसुसिद्धिरतोऽमरभाग्जनः।।**
अनुभवत्यकमेव तदुद्धृतौ हरिरिहाविरभूत्पदरूप्यसौ ।।४।।
***विद्युन्माला*तुल्या संपत्प्राङ्मध्यान्तेऽप्यस्या आपत्।।**
तत्ते धार्यं ज्योतिर्नित्यं ध्याने मेऽस्तु ब्रह्मन्सत्यम् ।।५।।
त्रिद्वारं तव भवनं बहुप्रदीपं विघ्नेशामरपतियोगिनीमरुज्जैः।।
जाह्नव्यावृतमभितोऽन्नपूर्णया च स्मृत्वा मे भवति मतिः *प्रहर्षिणी*यम्।।६।।
ततिं द्विजानां शिव*सोपजातिं* पुष्णाति कृष्णाऽत्र विनष्टतृष्णा।।
अवाक्प्रवाहाऽनुमताशिवाहा या साऽष्टतीर्था स्मृतिमेतु सार्था ।।७।।

कलौ मलौघान्तकरं करंजपुरे वरे जातमकामकामम्।।
चराचराद्यं भुवनावनार्थं क्षणे क्षणे सज्जनतानतांघ्रिम् ।।८।।
***भुजंगप्रया*तादगुणोत्थादिवास्माद्**
भवाद्भीत आगत्य न त्यक्तुमिच्छेत्।।
नृसिंहस्य वाट्यां प्रभो राजधान्यां स
यायात्सुधन्यां गतिं लोकमान्याम् ।।९।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं दत्तपादुकाष्टकं संपूर्णम्।।

१०९

श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

दत्तात्रेय त्वां नमामि प्रसीद त्वं सर्वात्मा सर्वकर्ता न वेद।।
कोऽप्यन्तं ते सर्वदेवाधिदेव ज्ञाताज्ञातान्मेऽपराधान्क्षमस्व ।।१।।
त्वदुद्भवात्त्वदधीनधीत्वात्त्वमेव मे वंद्य उपास्य आत्मन्।।
अथापि मौढ्यात्स्मरणं न ते मे कृतं क्षमस्व प्रियकृन्महात्मन् ।।२।।
भोगापवर्गप्रदमात्मबंधुं कारुण्यसिन्धुं परिहाय बंधुम्।।
हिताय चान्यं परिमार्गयन्ति हा मादृशो नष्टदृशो विमूढाः ।।३।।
न मत्समो यद्यपि पापकर्ता न त्वत्समोऽथापि हि पापहर्ता।।
न मत्समोऽन्यो दयनीय आर्य न त्वत्समः क्वापि दयालुवर्य ।।४।।
अनाथनाथोऽसि सुदीनबन्धुः श्रीशानुकंपामृतपूर्णसिन्धुः।।
त्वत्पादभक्तिं तव दासदास्यं त्वदीयमंत्रार्थदृढैकनिष्ठाम् ।।५।।
गुरुस्मृतिं निर्मलबुद्धिमाधिव्याधिक्षयं मे विजयं च देहि।।
इष्टार्थलब्धिं वरलोकवश्यं धनान्नवृद्धिं हयगोसमृद्धिं ।।६।।
पुत्रादिलब्धिं म उदारतां च देहीश मे चास्त्वभयं हि शांतिः।।
ब्रह्माग्निभूभ्यो नम औषधीभ्यो वाचे नमो वाक्पतये च विष्णवे ।।७।।
शांतास्तु भूर्नः शिवमन्तरिक्षं द्यौश्चाभयं मेऽस्तु दिशः शिवाश्च।।
आपश्च विद्युत्परिपान्तु देवाः शं सर्वतो नोऽभयमस्तु शांतिः ।।८।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं दत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम्।।

११०

अद्वैतमालामन्त्रः

वराभयकरं देवं सच्चिदानन्दविग्रहम्।
दत्तात्रेयं गुरुं ध्यात्वा मालामंत्रं पठेच्छुचिः ।।१।।

ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय सच्चिदानन्दविग्रहायादृश्यत्वादिगुणकाय नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावायासंगतायेक्षामात्रेण प्रकृतिप्रवर्तकायाजाया-व्यक्तात्मने भूतेश्वराय सद्धर्मत्राणार्थं योगमाययाविष्कृतशुद्धसत्त्वस्वरूपाया-च्युत भवबंधं विमोचय विमोचयापापविद्धासक्ततयाश्रमोचितकर्माणि साधय साधय श्रीमन् साधनसंपदं देहि देहि सद्गुरूत्तम गुरूपसत्त्या श्रवणाद्यभ्यासपूर्वकं भवत्पदभक्तिं वितर वितराद्य लयविक्षेपादीन्परिहर परिहर श्रीहरेऽसंभावनादिडाकिनीर्जहि जहि क्लेशकर्मविपाकाशयवर्जिता-विद्यादिक्लेशान्नाशय नाशय हृषीकेशार्थदोषदृष्ट्या प्रमाथीन्द्रियाणि वशीकुरु वशीकुरु सर्वान्तर्यामिन् वैगाग्याभ्यासवशाच्चञ्चलं मन आकर्षयाकर्षयासंग रागद्वेषौ विद्वेषय विद्वेषयाप्तकाम कामादिशत्रूनुच्चाटयोच्चाटय कल्पनातीत दुष्कल्पनाः स्तंभय स्तंभयासुर-निषूदनासुरभावं मारय मारयात्तसुदर्शन व्याधिस्त्यानादियोगोपसर्गाच्छमय शमय मृत्युंजय प्रमादमृत्युं विद्रावय विद्रावय विमुक्त हृदयग्रंथिं भिंधि भिंधि निःसंशय सर्वसंशयांश्छिंधि छिंधि निर्वासन दुर्वासना वारय वारय क्रियाकारकफलसंस्पृष्ट ज्ञानाग्निना दाह्यकर्माणि दह दह पाशविमोचन पाशांस्त्रोटय त्रोटयादित्यवर्णात्मस्वरूपप्रदर्शनेन स्वपदेन नियोजय नियोजय जय जय भगवन्ननसूयानंदवर्धनाय दत्तात्रेयाय नमस्ते नमस्ते ।।
५००।।

इति पञ्चशतार्णं यो दध्यान्मालामनुं गले।
अर्थं तस्य न मुष्णन्ति देहस्थेन्द्रियतस्कराः ।।२।।
दंभदर्पादयो घोरा ये चाविद्यानिशाचराः।
ये योगभूचरा ज्ञानभूचरा खेचरा अपि ।।३।।
अन्तरायकरा भूतग्रहाः क्रूरतरा अपि।
याश्च तृष्णादिराक्षस्यो दुर्भरा भैरवा अपि ।।४।।
ये च त्रिविधदुःखाख्या वेतालो लोभसंज्ञितः।
महामोहाभिधो ब्रह्मराक्षसो द्विविधावती ।।५।।
शाकिनी डाकिनी चापि लयाद्याश्च पिशाचकाः।

दूरादेव पलायन्ते तेऽपि मालाभृतो द्रुतम् ।।६।।
धीशुद्धिक्रमतो लभ्यः परभक्तिः प्रजापिनः।
दत्तोऽन्ते परमं दद्यात्पदं देवसुदुर्लभम् ।।७।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिताद्वैतमालामंत्रः।।

१११

अद्वैतं दत्तात्रेयवर्मस्तोत्रम्

ध्यात्वा भक्ताभयकरं समष्टिव्यष्टिचालकं।।
दत्तात्रेयं पठेद्वर्म सर्वरक्षाकरं परम् ।।१।।
स्वसत्तनुप्रणामे मे प्रणमय्य शिरोऽवतु।।
व्यर्थात्तिरः पुरःकंपाद् दुर्भराच्च द्युमूर्धकः ।।२।।
स्वपादतुलसीगंधप्रीतिदानेन पातु मे।।
नासत्यनासिको घ्राणमितरघ्राणतर्पणात् ।।३।।
नेत्रे स्वसाधुमूर्तीर्मे भास्कराक्षः प्रदर्श्य च।।
रूपलावण्यसौंदर्यवीक्षणात्परिरक्षतु ।।४।।
सुश्लोको दिक्श्रुतिः श्रोत्रे श्रावयित्वा स्वकं यशः।।
श्राव्यं च द्विविधं पातु शब्दात्कर्णकषायदात् ।।५।।
उच्चारयित्वा मधुरान्स्वगुणान्लोकशोकहान्।।
जिह्वां पावकवाक्पातु रसास्वाददुरुक्तितः ।।६।।
स्वालयक्षेत्रतीर्थेषु गमयित्वा पदौ मम।।
उरुक्रमपदः पातु व्यर्थपर्यटनादकात् ।।७।।
रजोहरः स्वसत्पादरजस्तीर्थाप्लुतानि मे।।
कृत्वांगानि हरिः पातु सुस्पर्शालेपनादितः ।।८।।
चंद्रचेताः स्वमननाल्हाददानेन मे मनः।।
दुःखदाद्यंतवत्स्पर्शसंकल्पायासतोऽवतु ।।९।।
चित्तं साक्ष्यनुसंधानं कारयित्वा पुमीश्वरः।।
मरीचिकोपमद्वैतानुसंधानात्सदावतु ।।१०।।
ग्राहयित्वातीन्द्रियकं बुद्धिं मे निश्चयात्मिकाम्।।
दुस्तर्कात्पातु जीवात्मा धीव्याप्त्यस्ततमाः स्वभूः।।११।।

हरो देहेन्द्रियप्राणमनोधीभ्यो विलक्षणः।।
सोऽहमित्यनुभाव्याहंकारात्पातु दुराग्रहात् ।।१२।।
सर्वाशाभ्यः सदा माव्याद्विष्णुः सर्वात्मकोऽपि च।।
वर्जितं कवचेनाव्याद्रक्षाहीनं च यत्स्थलम् ।।१३।।
यो नह्यादात्मनीदं सन्संनद्धः कवची भवेत्।।
साम्राज्यसंस्थः कामाद्यरीन् जित्वा द्वैतसंविदि।।१४।।
संसारदुःस्वप्नहरं नष्टात्मधनदायकं।।
त्रिदोषोत्पातशमनं दुर्दृग्बाधादिवारणम् ।।१५।।
यस्यांगे वर्म कण्ठे च माला गीतायुधं करे।।
जराप्रदर्शितपथं प्रचंडामयसैनिकम् ।।१६।।
प्राप्तं मृत्युरिपुं चाप्यविगणय्य स एव हि।।
पदाक्रम्य सुखी यायात्प्रसिद्धं ब्रह्मलोककम् ।।१७।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयवर्माख्यकवचं संपूर्णम्।।

११२
श्रीदत्तप्रार्थनातारावली

दत्तात्रेय महामाय वेदगेय हतामय।
अनसूयात्रितनय ममापायं निवारय ।।१।।
नमो नमस्ते जगदेकनाथ। नमो नमस्ते सुपवित्रगाथ।।
नमो नमस्ते जगतामधीश। नमो नमस्तेऽस्तु परावरेश ।।२।।
त्वत्तोऽखिलं जातमिदं हि विश्वं। त्वमेव सर्वं परिपासि विश्वं।।
त्वं शक्तितो धारयसीह विश्वं। त्वमेव भो संहरसीश विश्वम् ।।३।।
त्वं जीवरूपेण हि सर्व विश्वं। प्रविष्ट संचेष्टयसे न विश्वं।।
स्वतंत्रमत्राखिललोकबंधो। कारुण्यसिंधो परबोधसिंधो ।।४।।
यो ब्रह्मरूपेण सृजत्यशेषं। यो विष्णुरूपेण च पात्यशेषं।।
यो रुद्ररूपेण च हन्त्यशेषं। दुर्गादिरूपैः शमयत्यशेषम् ।।५।।
यो देवतारूपधरोऽत्ति भागं। यो वेदरूपोऽपि बिभर्ति यागं।।
योऽधीशरूपेण ददाति भोगं। यो मौनिरूपेण तनोति योगम् ।।६।।
गायन्ति यं नित्यमशेषवेदाः। यजन्ति नित्यं मुनयोऽस्तभेदाः।।
ब्रह्मादिदेवा अपि यं नमन्ति। सर्वेऽपि ते लब्धहिता भवन्ति ।।७।।

यो धर्मसेतून्सुदृढान्बिभर्ति। नैकावतारान्समये बिभर्ति।।
हत्वा खलान्योऽपि सतो बिभर्ति। यो भक्तकार्यं स्वयमातनोति।।८।।
स त्वं नूनं देवदेवर्षिगेयो। दत्तात्रेयो भावगम्योऽस्यमेयः।।
ध्येयः सर्वैर्योगिभिः सर्वमान्यः। कोऽन्यस्त्राता तारकोधीश धन्यः।।९।।

सजलजलदनीलो योऽनसूयात्रिबालो
विनिहतनिजकालो योऽमलो दिव्यलीलः।।
अमलविपुलकीर्तिः सच्चिदानंदमूर्ति-
र्हृतनिजभजकार्तिः पात्वसौ दिव्यमूर्तिः ।।१०।।

भक्तानां वरदः सतां च परदः पापात्मनां दण्डद-
स्त्रस्तानामभयप्रदः कृतधियां संन्यासिनां मोक्षदः।।
रुग्णानामगदः पराकृतमदः स्वर्गार्थिनां स्वर्गदः
स्वच्छंदश्च वदोवदः परमुदो दद्यात्स नो बंधदः ।।११।।

निजकृपाकटाक्षनिरीक्षणाद्धरति यो निजदुःखमपि क्षणात्।।
स वरदो वरदोषहरो हरो जयति यो यतियोगिगतिः परा ।।१२।।

अज्ञः प्राज्ञो भवति भवति न्यस्तधीश्चेत्क्षणेन
प्राज्ञोऽप्यज्ञो भवति भवति व्यस्तधीश्चेत्क्षणेन।।
मर्त्योऽमर्त्यो भवति भवतः सत्कृपावीक्षणेन
धन्यो मान्यस्त्रिजगति समः शंभुना त्रीक्षणेन ।।१३।।

त्वत्तो भीतो देव वातोऽत्र वाति त्वत्तो भीतो भास्करोऽत्राप्युदेति।
त्वत्तो भीतो वर्षतीन्द्रोदवाहस्त्वत्तो भीतोऽग्निस्तथा हव्यवाहः ।।१४।।

भीतस्त्वत्तो धावतीशान्तकोऽत्र
भीतस्त्वत्तोऽन्येऽपि तिष्ठन्ति कोऽत्र।।
मर्त्योऽमर्त्योऽन्येऽपि वा शासनं ते
पाताले वाऽन्यत्र वाऽतिक्रमन्ते ।।१५।।

अग्निमेकं तृणं दग्धुं न शशाक त्वयार्पितम्।।
वातोऽपि तृणमादातुं न शशाक त्वयार्पितम् ।।१६।।

विना तवाज्ञा न च वृक्षपर्णं चलत्यहो कोऽपि निमेषमेकम्।।
कर्तुं समर्थो भुवने किमर्थं करोत्यहंतां मनुजोऽवशस्ताम् ।।१७।।

पाषाणे कृष्णवर्णे कथमपि परितश्छिद्रहीने न जाने
मंडूकं जीवयस्यप्रतिहतमहिमाचिंत्यसच्छक्तिजाने।।
काष्ठाश्माद्युत्थवृक्षांस्त्र्युदरकुहरगान्जारवीतांश्च गर्भा-
न्नूनं विश्वंभरेशावसि कृतपयसा दंतहीनांस्तथार्भान् ।।१८।।

करोति सर्वस्य भवानपेक्षा कथं भवत्तोस्य भवेदुपेक्षा।।
अथापि मूढः प्रकरोति तुच्छां सेवां तवोझ्झित्य च जीवितेच्छाम्।।१९।।
द्वेष्यः प्रियो वा न च तेऽस्ति कश्चित् त्वं वर्तसे सर्वसमोऽथ दुश्चित्।
त्वामन्यथा भावयति स्वदोषान्निर्दोषतायां तव वेदघोषः ।।२०।।
गृह्णासि नो कस्यचिदीश पुण्यं गृह्णासि नो कस्यचिदप्यपुण्यम्।।
क्रियाफलं मास्य च कर्तृभावं सृजस्यविद्वेत्ति न च स्वभावम् ।।२१।।
मातुः शिशोर्दुर्गुणनाशनाय न ताडने निर्दयता न दोषः।।
तथा नियंतुर्गुणदोषयोस्ते न दुष्टहत्याऽदयता न दोषः ।।२२।।
दुर्गादिरूपैर्महिषासुराद्यान् रामादिरूपैरपि रावणाद्यान्।।
अनेकहिंसादिकपापयुक्तान् क्रूरान्सदाचारकथावियुक्तान् ।।२३।।
स्वपापनाशार्थमनेककल्पान्यास्यंत एतान्निरयानकल्पान्।।
स्वकीयमुक्तौ निजशस्त्रकृत्तान्कृत्वा भवान्या(धा)मनयत्सुपूतान्।।२४।।
याऽपाययत्स्तन्यमिषाद्विषं सा लेभे गतिं मात्रुचितां दयालुः।।
त्वत्तोपरः को निजकार्यसक्तस्त्वमेव नित्यं ह्यभिमानमुक्तः ।।२५।।
नो कार्यं करणं च ते परगते लिंगं कला नापि ते
विज्ञाता त्वदमेय नान्य इति ते तत्त्वं प्रसिद्धं श्रुतेः।।
नेशस्ते जनिताधिकः सम उतान्यः कश्चनास्ति प्रभु-
र्दत्तात्रेय गुरो निजामरतरो त्वं सत्यमेको विभुः ।।२६।।
भोगार्थं सृजसीति कोऽपि वदति क्रीडार्थमित्थं परे
ते केच्छास्ति समाप्तकाम महिमानं नो विदुर्हीतरे।।
केपीदं सदसद्वदन्त्वितरथा वामास्तु मेतत्कथा-
पंथा मे श्रुतिदर्शितस्तव पदप्राप्त्यै सुखोऽन्ये वृथा ।।२७।।
सोऽनन्यभक्तोऽस्य तु पर्युपासको नित्याभियुक्तो यमुपैत्यभेदतः।।
तत्प्रीतयेऽसौ भवतात्समर्थनातारावली तत्पदभक्तिभावना ।।२८।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता प्रार्थनातारावली संपूर्णा।।

११३
नक्षत्रमालिकास्तोत्रम्

गोदावर्या महानद्या उत्तरे सिंहपर्वते।।
सुपुण्ये माहुरपुरे सर्वतीर्थसमन्विते ।।१।।

जज्ञेऽत्रेरनसूयायां प्रदोषे बुधवासरे।।
मार्गशीर्ष्यां महायोगी दत्तात्रेयो दिगम्बरः ।।२।।
मालां कुण्डीं च डमरुं शूलं शंखं सुदर्शनम्।।
दधानः षड्भुजैस्त्र्यात्मा योगमार्गप्रवर्तकः ।।३।।
भस्मोद्धूलितसर्वांगो जटाजूटविराजितः।।
रुद्राक्षभूषिततनुः शांभवीमुद्रया युतः ।।४।।
भक्तानुग्रहकृन्नित्यं पापतापार्तिभञ्जनः।।
बालोन्मत्तपिशाचाभः स्मर्तृगामी दयानिधिः ।।५।।
यस्यास्ति माहुरे निद्रा निवासः सिंहपर्वते।।
प्रातःस्नानं च गंगायां ध्यानं गंधर्वपत्तने ।।६।।
कुरुक्षेत्रे चाचमनं धूतपापेश्वरे तथा।।
विभूतिधारणं प्रातःसंध्या च करहाटके ।।७।।
कोलापुरेऽस्य भिक्षा च पाञ्चालेऽपि च भोजनं।।
तिलको विठ्ठलपुरे तुंगापानं दिने दिने ।।८।।
पुराणश्रवणं यस्य नरनारायणाश्रमे।।
विश्रामो रैवते सायंसंध्या पश्चिमसागरे ।।९।।
कार्तवीर्यार्जुनायादाद्योगर्धिमुभयीं प्रभुः।।
स्वात्मतत्त्वं च यदवे बहुगुर्वाप्तमुत्तमम् ।।१०।।
आन्वीक्षिकीमलर्काय प्रल्हादाय च धीमते।।
आयूराजाय च वरान्साध्येभ्यो मोक्षसाधनम् ।।११।।
मंत्रांश्च विष्णुदत्ताय सोमकांताय कर्म च।।
स एवाविरभूद्भूयः पूर्वार्णवसमीपतः ।।१२।।
भाद्रे मासि सिते पक्षे चतुर्थ्यां राजविप्रतः।।
सुमत्यां प्राक्सिन्धुतीरे रम्ये पीठापुरे वरे ।।१३।।
य आचारव्यवहृतिप्रायश्चित्तोपदेशकृत्।।
निजाग्रजावंधपंगू विलोक्य प्रव्रजन्सुधीः ।।१४।।
मातापित्रोर्मुदे दृष्टिं गतिं ताभ्यामुपानयत्।।
महीं प्रदक्षिणीकृत्य गोकर्णे त्र्यब्दमावसत् ।।१५।।
ततः कृष्णातटं प्राप्य मर्तुकामां सपुत्रकां।।
निवर्त्य ब्राह्मणीं मंदप्रदोषव्रतमादिशत् ।।१६।।
तत्पुत्रं विबुधं कृत्वा तस्या जन्मान्तरे प्रभुः।।
पुत्रोऽभूद्यो नरहरिनामको देश उत्तरे ।।१७।।

करंजनगरेऽप्यम्बामाधवद्विजतो विभुः।।
मासि पौषे सिते पक्षे द्वितीयायां शनेर्दिने ।।१८।।
जातमात्रोऽपि चौंकारं प्रपाठायापि मूकवत्।।
सप्ताब्दान्लीलया स्थित्वा नानाकौतुककृत्प्रभुः।।१९।।
उपनीतोऽपठद्वेदान्सप्तमे वत्सरे स्वयम्।।
आश्वास्य जननीं पुत्रद्वयदानेन बोधदः ।।२०।।
काशीं गत्वाष्टांगयोगाभ्यासी कृष्णसरस्वतीम्।।
वृत्वा गुरुं यतिर्भूत्वा वेदार्थान्संप्रकाश्य च ।।२१।।
लुप्तसंन्यासिधर्मं च तेने तुर्याश्रमोक्तकृत्।।
मेरुं प्रदक्षिणीकृत्य शिष्यान्कृत्वापि भूरिशः ।।२२।।
पितृभ्यां दर्शनं दत्वा द्विजं शूलरुजार्दितम्।।
कृत्वानामयमाश्वास्य सायंदेवं महामतिम् ।।२३।।
अब्दं स्थित्वा वैद्यनाथक्षेत्रे कृष्णातटे ततः।।
भिल्लवाट्यां चतुर्मासान्विभुर्गत्वा ततोऽग्रतः ।।२४।।
नृसिंहवाटिकाक्षेत्रे द्वादशाब्दान्वसन्सुधीः।।
तत्र स्थित्वापि गंधर्वपुरमेत्यावसन्मठे ।।२५।।
जीवयित्वा मृतान्दुग्ध्वा वन्ध्यां च महिषीं हरिः।।
विश्वरूपं दर्शयित्वा यतये विश्वनाटकः ।।२६।।
बह्वीरमानुषीलीलाः कृत्वा गुप्तोऽपि तत्र च।।
य आस्ते भगवान्दत्तः सोऽस्मान्रक्षतु सर्वदा ।।२७।।
या सप्तविंशतिश्लोकैः कृता नक्षत्रमालिका।।
तद्भक्तेभ्योऽर्पिता भक्ताभिन्नश्रीदत्ततुष्टये ।।२८।।
द्वादश्यामाश्विने कृष्णे श्रीपादस्योत्सवो महान्।।
माघे कृष्णे प्रतिपदि नरसिंहप्रभोस्तथा ।।२९।।

श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता नक्षत्रमालिका संपूर्णा।।

११४

श्रीदत्तभावसुधारसस्तोत्रम्।।

दत्तात्रेयं परमसुखमयं वेदगेयं ह्यमेयं
योगिध्येयं हृतनिजभयं स्वीकृतानेककायम्।।
दुष्टागम्यं विततविजयं देवदैत्यर्षिवन्द्यं
वन्दे नित्यं विहितविनयं चाव्ययं भावगम्यम् ।।१।।
दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते भगवते पापक्षयं कुर्वते
दारिद्र्यं हरते भयं शमयते कारुण्यमातन्वते।।
भक्तानुद्धरते शिवं च ददते सत्कीर्तिमातन्वते
भूतान्द्रावयते वरं प्रददते श्रेयः पते सद्गते ।।२।।
एकं सौभाग्यजनकं तारकं लोकनायकम्।।
विशोकं त्रातभजकं नमस्ये कामपूरकम् ।।३।।
नित्यं स्मरामि ते पादे हतखेदे सुखप्रदे।।
प्रदेहि मे शुद्धभावं भावं यो वारयेद्द्रुतम् ।।४।।
समस्तसंपत्प्रदमार्तबंधुं समस्तकल्याणदमस्तबंधुम्।।
कारुण्यसिंधुं प्रणमामि दत्तं यः शोधयत्याशु मलीनचित्तम् ।।५।।
समस्तभूतांतरबाह्यवर्ती यश्चात्रिपुत्रो यतिचक्रवर्ती।।
सुकीर्तिसंव्याप्तदिगंतरालः स पातु मां निर्जितभक्तकालः।।६।।
व्याध्याधिदारिद्र्यभयार्तिहर्ता स्वगुप्तयेऽनेकशरीरधर्ता
स्वदासभर्ता बहुधा विहर्ता कर्ताप्यकर्ता स्ववशोऽरिहर्ता ।।७।।
स चानसूयातनयोऽभवद्यो विष्णुः स्वयं भाविकरक्षणाय।।
गुणा यदीया म हि बुद्धिमद्भिर्गण्यंत आकल्पमपीह धात्रा।।८।।

न यत्कटाक्षामृतवृष्टितोऽत्र
तिष्ठन्ति तापाः सकलाः परत्र।।
यः सद्गतिं संप्रददाति भूमा
स मेऽन्तरे तिष्ठतु दिव्यधामा ।।९।।
स त्वं प्रसीदात्रिसुतार्तिहारिन्
दिगम्बर स्वीयमनोविहारिन्।।
दुष्टा लिपिर्या लिखितात्र धात्रा
कार्या त्वया साऽतिशुभा विधात्रा ।।१०।।

सर्वमंगलसंयुक्त सर्वैश्वर्यसमन्वित।
प्रसन्ने त्वयि सर्वेशे किं केषां दुर्लभं कुह ।।११।।

हार्दांधतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशक।।
त्वदंघ्रिनखमाणिक्यद्युतिरेवालमीश नः ।।१२।।
स्वकृपार्द्रकटाक्षेण वीक्षसे चेत्सकृद्धि माम्।।
भविष्यामि कृतार्थोऽत्र पात्रं चापि स्थितेस्तव ।।१३।।
क्व च मन्दो वराकोऽहं क्व भवान्भगवान्प्रभुः।।
अथापि भवदावेश भाग्यवानस्मि ते दृशा ।।१४।।
विहितानि मया नाना पातकानि च यद्यपि।।
अथापि ते प्रसादेन पवित्रोऽहं न संशयः ।।१५।।
स्वलीलया त्वं हि जनान्पुनासि
तन्मे स्वलीला श्रवणं प्रयच्छ।।
तस्याः श्रुतेः सान्द्रविलोचनोऽहं
पुनामि चात्मानमतीव देव ।।१६।।
पुरतस्ते स्फुटं वच्मि दोषराशिरहं किल।
दोषा ममामिताः पांसुवृष्टिबिन्दुसमा विभोः ।।१७।।
पापीयसामहं मुख्यस्त्वं तु कारुणिकाग्रणीः।।
दयनीयो न हि क्वापि मदन्य इति भाति मे ।।१८।।
ईदृशं मां विलोक्यापि कृपालो ते मनो यदि।।
न द्रवेत्तर्हि किं वाच्यमदृष्टं मे तवाग्रतः ।।१९।।
त्वमेव सृष्टवान्सर्वान्दत्तात्रेय दयानिधे।।
वयं दीनतराः पुत्रास्तवाकल्पाः स्वरक्षणे ।।२०।।
जयतु जयतु दत्तो देवसङ्घाभिपूज्यो
जयतु जयतु भद्रो भद्रदो भावुकेज्यः।।
जयतु जयतु नित्यो निर्मलज्ञानवेद्यो
जयतु जयतु सत्यः सत्यसंधोऽनवद्यः ।।२१।।
यद्यहं तव पुत्रः स्यां पिता माता त्वमेव मे।।
दयास्तन्यामृतेनाशु मातस्त्वमभिषिञ्च माम् ।।२२।।
ईशाभिन्ननिमित्तोपादनात्स्रष्टुरस्य ते।।
जगद्योने सुतो नाहं दत्त मां परिपाह्यतः ।।२३।।
तव वत्सस्य मे वाक्यं सूक्तं वाऽसूक्तमप्यहो।।
क्षन्तव्यं मेऽपराधश्च त्वत्तोऽन्या न गतिर्हि मे ।।२४।।
अनन्यगतिकस्यास्य बालस्य मम ते पितः।।
न सर्वथोचितोपेक्षा दोषाणां गणनापि च ।।२५।।
अज्ञानित्वादकल्पत्वाद्दोषा मम पदे पदे।।
भवन्ति किं करोमीश करुणावरुणालय ।।२६।।

अथापि मेऽपराधैश्चेदायास्यन्तर्विषादताम्।।
पदाहतार्भकेणापि माता रुष्यति किं भुवि ।।२७।।
रङ्कमङ्कगतं दीनं ताडयन्तं पदेन च।।
माता त्यजति किं बालं प्रत्युताश्वासयत्यहो ।।२८।।
तादृशं मामकल्पं चेन्नाश्वासयसि भो प्रभो।।
अहहा बत दीनस्य त्वां विना मम का गतिः ।।२९।।
शिशुर्नायं शठः स्वार्थीत्यपि नायातु तेऽन्तरम्।।
लोके हि क्षुधिता बालाः स्मरन्ति निजमातरम् ।।३०।।
जीवनं भिन्नयोः पित्रोर्लोक एकतराच्छिशोः।।
त्वं तूभयं दत्त मम माऽस्तु निर्दयता मयि ।।३१।।
स्तवनेन न शक्तोऽस्मि त्वां प्रसादयितुं प्रभो।।
ब्रह्माद्याश्चकितास्तत्र मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ।।३२।।
दत्त त्वद्बालवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च।।
तानि स्वीकुरु सर्वज्ञ दयालो भक्तभावन ।।३३।।
ये त्वा शरणमापन्नाः कृतार्था अभवन्हि ते।।
एतद्विचार्य मनसा दत्त त्वां शरणं गतः ।।३४।।
त्वन्निष्ठास्त्वत्परा भक्तास्तव ते सुखभागिनः।।
इति शास्त्रानुरोधेन दत्त त्वां शरणं गतः ।।३५।।
स्वभक्ताननुगृह्णाति भगवान्भक्तवत्सलः।।
इति सञ्चित्य सञ्चित्य कथञ्चिद्धारयाम्यसून् ।।३६।।
त्वद्भक्तस्त्वदधीनोऽहमस्मि तुभ्यं समर्पितम्।।
तनुं मनो धनं चापि कृपां कुरु ममोपरि ।।३७।।
त्वयि भक्तिं नैव जाने न जानेऽर्चनपद्धतिम्।।
कृतं न दानधर्मादि प्रसादं कुरु केवलम् ।।३८।।
ब्रह्मचर्यादि नाचीर्णं नाधीता विधितः श्रुतिः।।
गार्हस्थ्यं विधिना दत्त न कृतं तत्प्रसीद मे ।।३९।।
न साधुसङ्गमो मेऽस्ति न कृतं वृद्धसेवनम्।।
न शास्त्रशासनं दत्त केवलं त्वं दयां कुरु ।।४०।।

ज्ञातेऽपि धर्मे नहि मे प्रवृत्ति-
र्ज्ञातेऽप्यधर्मे न ततो निवृत्तिः।।
श्रीदत्तनाथेन हृदि स्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ।।४१।।

कृतिः सेवा गतिर्यात्रा स्मृतिश्चिन्ता स्तुतिर्वचः।।
भवन्तु दत्त मे नित्यं त्वदीया एव सर्वथा ।।४२।।

प्रतिज्ञा ते न भक्ता मे नश्यन्तीति सुनिश्चितम्।।
श्रीदत्त चित्त आनीय जीवनं धारयाम्यहम् ।।४३।।
दत्तोऽहं ते मयेतीश आत्मदानेन योऽभवत्।।
अनसूयात्रिपुत्रः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।४४।।
कार्तवीर्यार्जुनायादाद्योगर्धिमुभयीं प्रभुः।।
अव्याहतगतिं चासौ श्रीदत्तः शरणं मम ।।४५।।
आन्वीक्षिकीमलर्काय विकल्पत्यागपूर्वकम्।।
योऽदादाचार्यवर्यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।४६।।
चतुर्विंशतिगुर्वाप्तं हेयोपादेयलक्षणं।।
ज्ञानं यो यदवेऽदात्स श्रीदत्तः शरणं मम ।।४७।।
मदालसागर्भरत्नालर्काय प्राहिणोच्च यः।।
योगपूर्वात्मविज्ञानं श्रीदत्तः शरणं मम ।।४८।।
आयुराजाय सत्पुत्रं सेवाधर्मपराय यः।।
प्रददौ सद्गतिं चैष श्रीदत्तः शरणं मम ।।४९।।
लोकोपकृतये विष्णुदत्तविप्राय योऽर्पयत्।।
विद्यास्तच्छ्राद्धभुग्यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।५०।।
भर्त्रा सहानुगमनविधिं यः प्राह सर्ववित्।।
राममात्रे रेणुकायै श्रीदत्तः शरणं मम ।।५१।।
समूलमाह्निकं कर्म सोमकीर्तिनृपाय यः।।
मोक्षोपयोगि सकलं श्रीदत्तः शरणं मम ।।५२।।
नामधारक भक्ताय निर्विण्णाय व्यदर्शयत्।।
तुष्टः स्तुत्या स्वरूपं स श्रीदत्तः शरणं मम ।।५३।।
यः कलिब्रह्मसंवादमिषेणाह युगस्थितीः।।
गुरुसेवां च सिद्धाऽऽस्याच्छ्रीदत्तः शरणं मम ।।५४।।
दुर्वासःशापमाश्रुत्य योऽम्बरीषार्थमव्ययः।।
नानावतारधारी स श्रीदत्तः शरणं मम ।।५५।।
अनसूयासतीदुग्धास्वादायेव त्रिरूपतः।।
अवातरदजो योऽपि श्रीदत्तः शरणं मम ।।५६।।
पीठापुरे यः सुमतिब्राह्मणीभक्तितोऽभवत्।।
श्रीपादस्तत्सुतस्त्राता श्रीदत्तः शरणं मम ।।५७।।
प्रकाशयामास सिद्धमुखात्स्थापनमादितः।।
महाबलेश्वरस्यैष श्रीदत्तः शरणं मम ।।५८।।
चण्डाल्यपि यतो मुक्ता गोकर्णे तत्र योऽवसत्।।
लिङ्गतीर्थमये त्र्यब्दं श्रीदत्तः शरणं मम ।।५९।।

कृष्णाद्वीपे कुरुपुरे कुपुत्रं जननीयुतम्।।
योहि मृत्योरपाच्छ्रीपाच्छ्रीदत्तः शरणं मम ।।६०।।
रजकायापि दास्यन्यो राज्यं कुरुपुरे प्रभुः।।
तिरोऽभूदज्ञदृष्ट्या स श्रीदत्तः शरणं मम ।।६१।।
विश्वासघातिनश्चोरान्स्वभक्तघ्नान्निहत्य यः।।
जीवयामास भक्तं स श्रीदत्तः शरणं मम ।।६२।।
करञ्जनगरेऽम्बायाः प्रदोषव्रतसिद्धये।।
योऽभूत्सुतो नृहर्याख्यः श्रीदत्तः शरणं मम ।।६३।।
मूको भूत्वा व्रतात्पश्चाद्वदन्वेदान्स्वमातरम्।।
प्रव्रजन् बोधयामास श्रीदत्तः शरणं मम ।।६४।।
काशीवासी स संन्यासी निराशीष्ट्वप्रदो वृषम्।।
वैदिकं विशदीकुर्वन् श्रीदत्तः शरणं मम ।।६५।।
भूमिं प्रदक्षिणीकृत्य सशिष्यो वीक्ष्य मातरम्।।
जहार द्विजशूलार्तिं श्रीदत्तः शरणं मम ।।६६।।
शिष्यत्वेनोररीकृत्य सायंदेवं ररक्ष यः ।।
भीते च क्रूरयवनाच्छ्रीदत्तः शरणं मम ।।६७।।
प्रेरयत्तीर्थयात्रायै तीर्थरूपोऽपि यः स्वकान्।
सम्यग्धर्ममुपादिश्य श्रीदत्तः शरणं मम ।।६८।।
सशिष्यः पर्यलीक्षेत्रे वैद्यनाथसमीपतः।
स्थित्वोद्दधार मूढो यः श्रीदत्तः शरणं मम ।।६९।।
विद्वत्सुतमविद्यं यो आगतं लोकनिन्दितम्।।
छिन्नजिह्वं बुधं चक्रे श्रीदत्तः शरणं मम ।।७०।।
नृसिंहवाटिकास्थो यः प्रददौ शाकभुङ्.निधिम्।।
दरिद्रब्राह्मणायासौ श्रीदत्तः शरणं मम। ।७१।।
भक्ताय त्रिस्थलीयात्रां दर्शयामास यः क्षणात्।।
चकार वरदं क्षेत्रं स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७२।।
प्रेतार्तिं वारयित्वा यो ब्राह्मण्यै भक्तिभावितः।।
ददौ पुत्रौ स गतिदः श्रीदत्तः शरणं मम ।।७३।।
तत्त्वं यो मृतपुत्रायै बोधयित्वाप्यजीवयत्।।
मृतं कल्पद्रुमस्थः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७४।।
दोहयामास भिक्षार्थं यो वन्ध्यां महिषीं प्रभुः।।
दारिद्र्यदावदावः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७५।।
राजप्रार्थित एत्यास्थान्मठे यो गाणगापुरे।।
ब्रह्मरक्षः समुद्धर्ता श्रीदत्तः शरणं मम ।।७६।।

विश्वरूपं निन्दकाय शिबिकास्थः स्वलङ्कृतः।।
गर्वहा दर्शयद्यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७७।।
त्रिविक्रमेण चानीतौ गर्वितौ ब्राह्मणद्विषौ।।
बोधयामास तौ यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७८।।
उक्त्वा चतुर्वेदशाखातदङ्गादिकमीश्वरः।।
विप्रगर्वहरो यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।७९।।
सप्तजन्मविदं सप्तरेखोल्लङ्घनतो ददौ।।
यो हीनाय श्रुतिस्फूर्तिः श्रीदत्तः शरणं मम ।।८०।।
त्रिविक्रमायाह कर्मगतिं दत्तविदा पुनः।।
वियुक्तं पतितं चक्रे श्रीदत्तः शरणं मम ।।८१।।
रक्षसे वामदेवेन भस्ममाहात्म्यमुद्गतिम्।।
उक्तां त्रिविक्रमायाह श्रीदत्तः शरणं मम ।।८२।।
गोपीनाथसुतो रुग्णो मृतस्तत्स्त्री शुशोच ताम्।।
बोधयामास यो योगी श्रीदत्तः शरणं मम ।।८३।।
गुर्वगस्त्यर्षिसंवादरूपं स्त्रीधर्ममाह यः।।
रूपान्तरेण स प्राज्ञः श्रीदत्तः शरणं मम ।।८४।।
विधवाधर्ममादिश्यानुगमं चाक्षभस्मदः।।
अजीवयन्मृतं विप्रं श्रीदत्तः शरणं मम ।।८५।।
वेश्यासत्यै तु रुद्राक्षमाहात्म्ययुतमीट्कृतम्।।
प्रसादं प्राह यः सत्यै श्रीदत्तः शरणं मम ।।८६।।
शतरुद्रीयमाहात्म्यं मृतराट्सुतजीवनम्।
सत्यै शशंस स गुरुः श्रीदत्तः शरणं मम ।।८७।।
कचाख्यानं स्त्रियो मंत्रानर्हतार्थसुभाग्यदम्।।
सोमव्रतं च यः प्राह श्रीदत्तः शरणं मम ।।८८।।
ब्राह्मण्या दुःस्वभावं यो निवार्याह्निकमुत्तमम्।।
शशंस ब्राह्मणायासौ श्रीदत्तः शरणं मम ।।८९।।
गार्हस्थधर्मं विप्राय प्रत्यवायजिहासया।।
क्रममुक्त्यै य ऊचे स श्रीदत्तः शरणं मम ।।९०।।
त्रिपुंपर्याप्तपाकेन भोजयामास यो नृणाम्।।
सिद्धश्चतुःसहस्त्राणि श्रीदत्तः शरणं मम ।।९१।।
अश्वत्थसेवामादिश्य पुत्रौ योऽदात्फलप्रदः।।
चित्रकृद्वृद्धवन्ध्यायै श्रीदत्तः शरणं मम ।।९२।।
कारयित्वा शुष्ककाष्ठसेवां तद्वृक्षतां नयन्।
विप्रकुष्ठं जहारासौ श्रीदत्तः शरणं मम ।।९३।।

त्रिपुंपर्याप्तपाकेन भोजयामास यो नृणाम्।।
सिद्धश्चतुःसहस्राणि श्रीदत्तः शरणं मम ।।९०।।
अश्वत्थसेवामादिश्य पुत्रौ योऽदात्फलप्रदः।।
चित्रकृद्वृद्धवन्ध्यायै श्रीदत्तः शरणं मम ।।९१।।
भजन्तं कष्टतोऽप्याह सायंदेवं परीक्ष्य यः।।
गुरुसेवाविधानं स श्रीदत्तः शरणं मम ।।९२।।
शिवतोषकरीं काशीयात्रां भक्ताय योऽवदत्।।
सविधिं विहितां त्वष्ट्रा श्रीदत्तः शरणं मम ।।९५।।
कौण्डिण्यधर्मविहितमनंतव्रतमाह यः।।
कारयामास तद्योऽपि श्रीदत्तः शरणं मम ।।९६।।
श्रीशैलं तंतुकायासौ योगगत्या व्यदर्शयत्।।
शिवरात्रिव्रताहे स श्रीदत्तः शरणं मम ।।९७।।
ज्ञापयित्वाप्यमर्त्यत्वं स्वस्य दृष्ट्या चकार यः।।
विकुष्ठं नन्दिशर्माणं श्रीदत्तः शरणं मम ।।९८।।
नरकेसरिणे स्वप्ने स्वं कल्लेश्वरलिङ्गगम्।।
दर्शयित्वानुजग्राह श्रीदत्तः शरणं मम ।।९९।।
अष्टमूर्तिधरोऽप्यष्टग्रामगो भक्तवत्सलः।।
दीपावल्युत्सवेऽभूत्स श्रीदत्तः शरणं मम ।।१००।।
अपक्वं छेदयित्वापि क्षेत्रे शतगुणं ततः।।
धान्यं शूद्राय योऽदात्स श्रीदत्तः शरणं मम ।।१०१।।
गाणगापुरके क्षेत्रे योऽष्टतीर्थान्यदर्शयत्।।
भक्तेभ्यो भीमरथ्यां स श्रीदत्तः शरणं मम ।।१०२।।
पूर्वदत्तवरायादाद्राज्यं स्फोटकरुग्घरः।।
म्लेच्छाय दृष्टिं चेष्टं स श्रीदत्तः शरणं मम ।।१०३।।
श्रीशैलयात्रामिषेण वरदः पुष्पपीठगः।।
कलौ तिरोऽभवद्यः स श्रीदत्तः शरणं मम ।।१०४।।
निद्रामातृपुरेऽस्य सह्यशिखरे पोठं मिमंक्षापुरे
काश्याख्ये करहाटकेऽर्घ्यमवरे भिक्षास्य कोलापुरे।।
पाञ्चाले भुजिरस्य विठ्ठलपुरे पत्रं विचित्रं पुरे
गांधर्वे युजिराचमः कुरुपुरे दूरे स्मृतो नान्तरे ।।१०५।।

अमलकमलवक्त्रः पद्मपत्राभनेत्रः
परविरतिकलत्रः सर्वथा यः स्वतन्त्रः।।

स च परमपवित्रः सत्कमण्डल्वमत्रः
परमरुचिरगात्रो योऽनसूयात्रिपुत्रः ।।१०६।।
नमस्ते समस्तेष्टदात्रे विधात्रे
नमस्ते समस्तेडिताघौघहर्त्रे।।
नमस्ते समस्तेङ्गितज्ञाय भर्त्रे
नमस्ते समस्तेष्टकर्त्रेऽकहर्त्रे ।।१०७।।
नमो नमस्तेऽस्तु पुरान्तकाय
नमो नमस्तेऽस्त्वसुरान्तकाय।।
नमो नमस्तेऽस्तु खलान्तकाय
दत्ताय भक्तार्तिविनाशकाय ।।१०८।।
श्रीदत्तदेवेश्वर मे प्रसीद
श्रीदत्तसर्वेश्वर मे प्रसीद।।
प्रसीद योगेश्वर देहि योगं
त्वदीयभक्तेः कुरु मा वियोगम् ।।१०९।।
श्रीदत्तो जयतीह दत्तमनिशं ध्यायामि दत्तेन मे।
हृच्छुद्धिर्विहिता ततोऽस्तु सततं दत्ताय तुभ्यं नमः।।
दत्तान्नास्ति परायणं श्रुतिमतं दत्तस्य दासोऽस्म्यहम्।।
श्रीदत्ते परभक्तिरस्तु मम भो दत्त प्रसीदेश्वर ।।११०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तभावसुधारसस्तोत्रं संपूर्णम्।।

११५
प्रार्थनास्तोत्रम्

प्रभो देवदेव प्रभो दत्तदेव। तारकोऽस्माकमकहृत्त्वमेव।।
प्रभो देव देव प्रभो दत्तदेव ।।ध्रु।।
एहि करुणाकरा पाहि परमेश्वरा।
त्राहि भवसागरादखिलदेव।।
एहि लघु सन्मते एहि लघु सत्पते।
देहि लघु सद्गते शुद्धभावम् ।।१।।
त्वमसि दुरितापहा त्वमसि भवतापहा।

त्वमसि कुमतापहा सर्वदेव।।
त्वमसि हितकारकस्त्वमसि भयवारक-।
स्त्वमसि भवतारकः साधुदेव ।।२।।
त्वमसि मम दैवतं त्वमसि मम जीवितम्।
त्वमसि मम सकलहितजातमेतत्।।
त्वमसि मम चालकस्त्वमसि मम पालक-
स्त्वमसि मम तारको दत्तदेव ।।३।।
आर्द्रमतिकोमलं सान्द्रकरुणालयम्।
सान्द्रचितिसोज्वलं सुकृतशीलम्।।
हृदयमिह विश्रुतं सदयमज ते मतम्।
सुनय सहसा द्रुतं भवतु देव ।।४।।
देव भवदावतस्तीव्रतरतापतः।
दत्त संतापितं माऽभिषिञ्च।।
सत्कटाक्षामृतैः पूजितांघ्रेऽमृतैः
संस्तुतास्तानृतैः पाहि देव ।।५।।
घोरघोरान्धकारावृते सद्गतेऽगाधसंसारकूपे दुरन्ते।
पतितमतिमन्युना घोरकालाहिना
संवृतं मोचयाश्वेव माऽव ।।६।।
घोरभवसागरे सर्वथा दुष्करेऽस्मिन्ननादावनन्तेऽनपारे।
पतितमिह दुःस्थितं कर्मवाताहतं
प्रोद्धरार्तं प्रभो मां सुभाव ।।७।।
मत्समः पापकृत्त्वत्समः पापहृत्।
नास्त्यपर ईश्वर प्रार्थये तत्।।
यत्त्वमिच्छसि विभो तत्कुरुष्व प्रभो।
वासुदेवार्थित श्रीश देव ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयप्रार्थनास्तोत्रम्।।

११६
आयुराजकृतदत्तात्रेयस्तोत्रं (चम्पूस्थम्)

दुर्दर्श ईशोऽपि मयात्रिजातः संपूजितो येन वरोऽपि दत्तः।।
दत्ताभये तत्पदि मेऽस्ति चित्तं दत्ताश्रयं तं प्रणमामि दत्तम् ।।१।।
भगवन् किमु मामुपेक्षसे मघवन्मान्य सहापि नेक्षसे।।
चरितं किमु दुष्करं मया चरितं वाऽऽग उतेश ते मया ।।२।।
प्रणमामि विभो प्रसीद मे प्रणतेऽपीश धृते महादमे।।
शरणं क्व परेश नश्चरणं तेऽभयदं गतिर्हि नः ।।३।।
पुत्रार्थं त्वाराध्य लब्ध्वापि कान्तं पुत्रार्थं ते सत्प्रसादादकान्तम्।।
नेक्षेद्यार्तो नष्टपुत्रः सुरेश वीक्षे त्वत्तोऽन्याश्रयं नो परेश ।।४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं चम्पूस्थं आयुराजकृतदत्तात्रेयस्तोत्रम्।।

११७

श्रीदत्तात्रेयप्रार्थनास्तोत्रम्

समस्तदोषशोषणं स्वभक्तचित्ततोषणं
निजाश्रितप्रपोषणं यतीश्वराग्र्यभूषणम्।।
त्रयीशिरोविभूषणं प्रदर्शितार्थदूषणं
भजेऽत्रिजं गतैषणं विभुं विभूतिभूषणम् ।।१।।
समस्तलोककारणं समस्तजीवधारणं
समस्तदुष्टमारणं कुबुद्धिशक्तिजारणम्।।
भजद्भयाद्रिदारणं भजत्कुकर्मवारणं
हरिं स्वभक्ततारणं नमामि साधुचारणम् ।।२।।
नमाम्यहं मुदास्पदं निवारिताखिलापदं
समस्तदुःखतापदं मुनीन्द्रवन्द्य ते पदम्।।
यदञ्चितान्तरामदं विहाय नित्यसंमदं
प्रयान्ति नैव ते भिदं मुहुर्भजन्ति चाविदम् ।।३।।
प्रसीद सर्वचेतने प्रसीद बुद्धिचेतने
स्वभक्तहृन्निकेतने सदाम्ब दुःखशांतने।।
त्वमेव मे प्रसूर्मता त्वमेव मे प्रभो पिता
त्वमेव मेऽखिलार्थदोऽखिलाकतोऽविता ।।४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं
श्रीदत्तात्रेयप्रार्थनास्तोत्रं संपूर्णम्।।

११८

श्रीदत्तप्रतिष्ठास्तोत्रम्

शालिवाहनशकेऽभ्रपूर्गजक्ष्मामिते तपसि मासि योऽत्रिजः।।
गौतमीतट उपागतो विभुर्दत्त एष स पुनातु नः प्रभुः ।।१।।
योऽम्बुवेगगत्यनुद्धतान्नाशयत्यपि सुधीरथोद्धतान्।।
दत्त एष पुनातु नः स्वकान् सेवकांश्च विदधा वजो व्यकान्।।२।।
गौतम्या निवसति पूर्वकूल आन्ध्रे
देशे यो निजभजकेष्टकृन्महीन्ध्रे।
सह्याख्ये महति यथा तथानणीय
यस्यास्ते जगति कथा प्रहर्षणीयम् ।।३।।

यो माघि मासि राकायां शुक्रवारे प्रतिष्ठितः।।
ब्रह्मानंदेन गौतम्यां श्रीदत्तो भक्तवत्सलः ।।४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तप्रतिष्ठास्तोत्रम्।।

११९

श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

नमस्तेऽनसूयासुतायार्तिहन्त्रे नमस्तेऽत्रिपुत्राय सर्वाधिहन्त्रे।।
नमस्तेऽवधूताय लोकैकभर्त्रे नमस्ते समस्तेडितायादिकर्त्रे ।।१।।
नमस्ते मखादिक्रियाऽपापकर्त्रे नमस्ते जगत्साक्षिणे ते विकर्त्रे।।
नमस्तेऽसुरारातये भक्तपात्रे नमस्तेऽखिलस्यास्य पित्रे च मात्रे ।।२।।
नमस्ते जगन्मानसप्रेरकाय नमस्ते जगद्यंत्रसंचालकाय।।
नमो योगिवर्य प्रभो मे प्रसीद नमो भिक्षुवंद्य प्रभो मे प्रसीद ।।३।।
***भुजङ्गप्रयाते*डितास्मासु माला भुजङ्गप्रयातोपमं ते विशाला।।**
भवं नाशयित्वा वसत्वीशमूर्तिः शिवंकर्यपीड्याधिहन्त्री च कीर्तिः।।४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१२०

श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

जन्माद्यस्य यतो यतो जगदिदं शास्त्रं च शास्त्रप्रमं
यत्तच्छास्त्रसमन्वितं मतिहितं वेद्यं विनष्टभ्रमम्।।
दत्ताख्यं तदु माययाऽस्य तु मया *शार्दूलविक्रीडितम्*
प्रारब्धं रुरुणेव मन्दमतिना स्तोत्रं तदस्त्वीडितम् ।।१।।
ईक्षापूर्वमचिन्त्यशक्तिरसृजद्विश्वं य एको विभुः।।
साध्व्याः शापमृषेश्च लोकविपदो द्राग्वारयन्त्याः प्रभुः।।
पत्न्या अत्रिमुनेस्तपस्विन इतस्त्रेधार्भतां निर्मलम्।।
दुर्वासःशशिदत्तसंज्ञित इनः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।२।।
कष्टाद्दीपकशिष्यवन्निजगुरुं श्रीवेदधर्माह्वयं।।
रुष्टं रुग्णमहो निषेव्य वरदं विश्वेशहर्याह्वयम्।।
सोऽनादृत्य सुरद्वयं स्वगुरुतो वव्रे यशोस्यामलम्।।
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।३।।

प्रह्लादः क्षुधितातिथिद्विजनुषः शप्तोऽसुरत्वं गतः।।
कृत्वाऽजेन रणं क्षणं हतमतिः सोऽनात्मवित्वाद्गतः।।
यं भक्त्या शरणं यतोऽलभदिमामान्वीक्षिकीं निश्चलम्।।
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।४।।
यं साध्याभिधदेवता उपगतास्ताभ्यो जगादामृतं
यो दुःसंगनिवृत्तिपूर्वकमरं धैर्यं तितिक्षामृतम्।।
शान्तिं चापि तपोऽन्तरङ्गकतया मायानियन्ताऽचलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।५।।
यं वर्णाश्रमलिंगहीनममलं नग्नं स्थितं सावलं
नागः पिंगल ऊच आश्रममिदं किं ते वदेत्याह तम्।।
योऽसौ पञ्चममाश्रमं समदृशः पूतस्य मे हीत्यलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।६।।
यो बुद्ध्याश्रितभूनगादिगुरुत आदेयहेयात्मकं
शान्त्यादिप्रदशिक्षणं च यदवे पृष्टो जगौ स्वार्जितम्।।
आत्मैवात्मगुरुः किलेति च यतो योऽदर्शयद्व्यर्गलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।७।।
निष्ठां वीक्ष्य पुरा पुरारिरुभयीं योगर्द्धिमुच्चैर्ददौ
बाहूनां च सहस्रमाजिमरणं यश्चार्जुनायोद्गतिम्।।
वन्दे भार्गवरामकामदमरं श्रीरेणुकाभीष्टदं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।८।।
रक्षः प्रत्युपकार्यदर्शयदहो त्रिर्विष्णुदत्ताय यं
दुर्दर्शोऽपि निमन्त्रितोऽग्निरवियुक् श्राद्धान्नभुक् सान्वयम्।।
तं रक्षोऽप्यनयन्निजं पदमदो मोदात्मकं सोज्ज्वलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।९।।
भिक्षित्वान्नमुपादिशद्वरममूनन्वागतब्रह्मणे
यैः सप्तग्रहमुक्त आस मनुभिर्ब्रह्मात्मजो ब्रह्मणे।।
तस्मै दुर्ग्रहनिग्रहाय महसे कुर्मो नमो मंगलम्
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।१०।।
आयुराजवरप्रदोऽपि नहुषो हुण्डेन मायाविना
तत्पोतं हृतमाशु हन्तुमजितो योऽरक्षदार्तिं विना।।
पित्रोर्योगमकारयच्च जयिना तेनेष्टदोऽसावलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।११।।

भ्रात्राऽजौ विजितो विचित्रचरितस्वाम्बार्पितश्लोकत-
श्चालर्कः शरणं यमाप कृपया साष्टाङ्गयोगं सवित्।।
तस्मै येन मदालसाभुव उपादिष्टो वरिष्ठोऽमलं
दत्तात्रेयगुरुर्भजत्सुरतरुः कुर्यात्स नो मंगलम् ।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१२१

पद्यम् (चाल - जमका अजब तडाका..)

भगवन् भक्तिरसं देहि स्याद्धन्यो येन तु देही ।।धृ।।
सकामधर्मं हृदापि नेच्छोऽनर्थकरेऽस्मिन् तुच्छे।
निरास्पदेऽनिलहतनावींव स्वार्थं को वाऽन्विच्छेत् ।।१।।
अखंडभगवद्भजनविघ्नकृन्नियते कर्मण्यपि मे।
सदानादरस्त्वद्भजनादरः परास्तु नाऽन्येच्छा मे ।।२।।
ननु स्वधर्मत्यागे भजतां कृतार्थता चेद्दिष्ट्या।
येन यदि वाऽतो भ्रश्येद्वाऽपक्वः किं स न साधुः ।।३।।
न भक्तिरसिकोऽनर्थं याति क्वापि समर्थः।
भक्तिवासनासद्भाग्यान्नो हीनोऽपि भजेत्स्वार्थं ।।४।।
भजतो जन्मान्तरेऽप्यभद्रं नीचगतो लभेत्किं।
स्वधर्मनिरतो चेद्भक्तो भद्रं क्वापि लभेत्किम् ।।५।।
यद्यपि धर्मादुपरि सुखं स्यात्तदर्थयत्नो व्यर्थः।
सुखानि दैवाद् दुःखानीवाऽऽयान्ति क्वापि समर्थ ।।६।।
यदधोलभ्यं चोर्ध्वमलभ्यं तदेव देव प्रेष्ठ।
त्वत्पदभजनं जनिमृतिभंजनं मे देह्यमरश्रेष्ठ ।।७।।

१२२

पद्यम् (चाल - जमका अजब तडाका..)

भगवन्निर्विकार ईश त्वमसि सदोदित विगताश ।।धृ।।
अपरोक्षस्त्वं नित्यप्राप्तः प्राप्तिस्त्वं कथमीश।।
स्वयंज्योतिस्त्वमतो विकृतिर्नहि तव भवदवनाश ।।१।।
मलिनो योऽसौ मलक्षालनाच्छुद्धो विकृतिं यातीश।।
अज्ञानमलाऽस्पृष्टोऽस्यमलाऽतस्ते विकृतिः क्वेश ।।२।।
यो हि जायते सचोत्पत्तिना विक्रियते जगदीश।।

त्वं तु सदाऽजस्तवाधोक्षज विकार उत्पत्तित ईश ।।३।।
आगमगेयस्त्वमप्रमेयः कथं घटेत त्रीश।।
ज्ञानलक्षणाऽतिशयाधानात्संस्कारस्तव धीश ।।४।।
त्वं देशाद्यैरपरिच्छिन्नो महानुभूति त्रीश।।
अस्तित्वाद्या विकृतिरविद्या कृता न तेऽस्ति परेश ।।५।।
त्वमेक एवाद्वितीय एवाखिलानुभूतिः स्वेश।।
विकारहेतोरभावतोऽतो न ते विकारोधीश ।।६।।
श्रुतिविषयस्य स्वयं प्रभावं तूक्तिविरामेधीश।।
त्वदीषिता वाङ्मुखाशचरन्ति वृत्तिव्याप्तिः सुमतेश ।।७।।

(अस्य श्लोकः भागवते)

एष स्वयंज्योतिरजोऽप्रमेयो महानुभूतिः सकलानुभूतिः।।
एकोऽद्वितीयो वचसां विरामे एनेषिता वागसवश्चरन्ति ।।१।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं पद्यं संपूर्णम्।।

१२३
श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

निर् मलं निश्चलं शान्तं निशांतं यस्य संततम्।।
व्य तीतरज उत्कृष्टमेकांतं दयितं मतम् ।।१।।
स सर्वात्मापि सर्वेशः सर्वभूतगुहाशयः ।।
नि यंता सर्वभूतानां सर्वशक्तिसमन्वितः ।।२।।
प्रि यश्चात्मवतां नित्यं दत्तात्रेयो जगद्गुरुः ।।
यो गेश्वरो योगिपूज्यो भक्तानां कल्पपादपः ।।३।।
वि श्वरूपधरो विश्वविहारी विजिताहितः ।।
ज न्ममृत्युजराव्याधिभयदोषनिवारणः ।।४।।
य तिसंन्यासिसुगतिः सर्वारिष्टनिवारणः ।।
ते जसां तेज आत्मायं सदा ध्येयो मुमुक्षिभिः ।।५।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं दत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१२४
पद्यम्
(चाल - सुंदरमुख तुंदिल०)

अत्रिपुत्र मेऽद्य पुत्र ईश कुत्र भो। चित्रमंत्र चित्रमत्र दर्शितं प्रभो।।ध्रु०।।
पूर्वजनुषि कस्य रत्नमपहृतं मया। दद्विषक्तिरिह विनष्टिरुह्यते यया।।
शर्मकराऽधर्महराऽलं परीक्षया।।
(चाल) **श्रीमन् धीमन् भूमन् जय भगवन् नुतधामन् त्राहि विभो ।।१।।**
परिहृत्याद्यानपत्यदोषमर्पितः। खलु परया ते दयया सद्गुणः सुतः।।
केन चाद्य सोऽनवद्य कुत्र परिहृतः।।
(चाल) **त्वरया परया घृणया दर्शय तं दत्त सुतं भगवंतं त्वार्चये विभो।।२।।**
अत्रिपुत्र मेऽद्य पुत्र ईश कुत्र भो। चित्रमंत्र चित्रमत्र दर्शितं प्रभो।।

१२५
पद्यम्
(चाल - साध्य नसे मुनिकन्या)

भज भज भगवत्कायं । तं विप्रं हापितमायम् ।।ध्रु०।।
समाधिसिद्ध्यै क्लेशविहत्यै कृतक्रियो यो विप्रः।।
कर्माशयहृत्तापातापकृन्मूलोत्पाटनविप्र ।।१।।
सुखमपि दुःखं पश्यत्याखंडिततुर्याऽवनिसंस्थः।।
विप्रो देवः साक्षादेव प्रभुः स किमुपरिस्थः ।।२।।
अभ्यासहताविद्या ये तानर्चत नित्यं हि यतः।।
यदि ते कुपिता अप्यतिशांता शपन्ति मानातीताः ।।३।।

१२६
नरसिंहसरस्वतीस्तोत्रम्
(वेदनिवेदनिस्तोत्रम्)

विजय तेऽज यते जयते यतेरिह तमो हतमोहतमो नमः।।
हृदिकदाय पदाय सदा यदा तदुदयो न दयोनवियोनयः ।।१।।
उदयतेऽनयतेर्न यतेर्यदा मनसि कामनिकामगतिस्तदा।।
पदुदयो हृदयौकसि ते सिते भवति योऽवति योगिवराऽवरान्।।२।।

भवति भावभवोऽवभवो यदा भवति कामनिकामहतिस्तदा।।
भवति मानवमानवदुत्तमे भवतिरोधिरतो विरतोत्तमे ।।३।।
तव सतां वसतां मनसाऽनसा प्रपदयोः पदयोरजसांजसा।।
सुसहितस्सहितस्तव तावता यदवतारवता जनताविता ।।४।।
कृतफलं तु विहाय विहायसा सममजं भजतामज तामसात्।।
मिलति तारकमत्र कमत्रसत्पदरजो भ्रमहारि महारि सत् ।।५।।
तदजरामर कोशविलक्षणं सदज धीगुणवेत्तृ कलक्षणम्।।
भुवनहेत्वघहृत्त्रिपुरादिकं तव न जातु पदं कुपुराधिकम् ।।६।।
विविधभेदपरं सम दृश्यते त्रिविधवेदपरं कमदृश्य ते।।
पदमिदं सदु चिद्घनमुद्धियासदनिदं प्रजहात्यघनुद्धिया ।।७।।
अजनमोहनमोह नमो ह नः प्रिय नियोजय तेन यतेन ते।।
य इह वेदनिवेदनि वेद वेत्त्यजपदं जपदंतपदं पदम् ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं वेदनिवेदनिस्तोत्रम्।।

१२७

श्रीदत्तात्रेयाष्टोरशतनामस्तोत्रम्

ॐ अनसूयासुतोऽनंत आद्य आत्रेय आत्मदः।।
इडापतिरिलेशार्च्य ईश ईडितसद्गुणः ।।१।।
उन्मत्त उत्तमयशा ऊकृदूर्ध्वगतिप्रियः।।
ऋणहर्ता ऋषिश्रेष्ठो ॠवंद्यो ॠजशिक्षकः ।।२।।
लृस्थवंद्यो लृगतिदो लॄवंद्यो लॄपुरःसरः।।
एष्यदिष्टज्ञ एकार्थ ऐक्यात्मप्रद ऐक्यदृक् ।।३।।
ओङ्कारवाच्य ओजोद औदासीन्यद औषधः।।
अंडस्थोंतःकरणपा अश्चास्तनिजहृन्मलः ।।४।।
कर्मातीतः कार्तवीर्येट् खलहा खगपूजितः।।
गतिगंगाजलस्नायी घोरहा घनचित्प्रभः ।।५।।
ङशिक्षको ङेतमना चतुरश्चंद्रमोऽग्रजः।।
छंदपूरश्छंदईड्यो जयदाता जगत्पतिः ।।६।।
झंझाकरो झरस्नायी ञहर्ता ञविवर्जितः।।
टीकाकृट्टिट्टिभकृट् ठवादिमतहृड्डवित् ।।७।।
डामरेड्यो डमरुधृक् ढक्काकृढ्ढुंडिराट्प्रियः।।

णवीक्षणो णगम्यश्च तत्त्ववित्तापशामकः ।।८।।
थैथैकृत्थृत्कृतानार्यो दत्तो दाता दयानिधिः।।
धनप्रदो धर्मगोप्ता नग्नो नष्टार्थलाभदः ।।९।।
परशक्तिः पापहर्ता फलदः फणिसूत्रभृत्।।
बंधछिद्बलवज्जेता भयकृद्भयहृद्भवः ।।१०।।
मत्तहा माहुरस्थानो यज्ञभोक्ता यदूद्वहः।।
रसदो रिपुसंहर्ता लाभदो लयसिद्धिदः ।।११।।
वशी वरेण्यो वरदः शांतः श्रीपुरभिक्षुकः।।
षड्बाहुः षण्मतगतिः संसारारिश्च सह्यगः ।।१२।।
हर्षप्रदो हिताशंसी ळांतार्णो ळविवर्जितः।।
क्षराक्षरातिगः क्षंता ज्ञानदो ज्ञानिसद्गतिः ।।१३।।
एवं वर्णक्रमेणेदं श्रीदत्तस्य महात्मनः।।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना प्रसीदेत्पठतां प्रभुः ।।१४।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं दत्तात्रेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्।।

१२८

दत्तभजनम्

(दत्तपुराणान्तर्गतप्रत्यध्यायतात्पर्यम्)

वेदपादनुततोषित दत्त १
श्रावितशास्त्रविरोधक दत्त २
संमतवेदशिरोमत दत्त ३
संपृष्टेश्वरसत्क्रिय दत्त ४
कर्मेट्तत्त्वज्ञापक दत्त ५
स्मृतितः सन्निधिकारक दत्त,
सह्यमहीधरवासिन्दत्त, काशींगंगास्नायिन्दत्त, कमलापत्तनभिक्षुक दत्त,
शांडिल्यानुग्राहक दत्त ६
योगाष्टांगज्ञेश्वर दत्त ७
योगफलाभिज्ञेश्वर दत्त ८
शिक्षितपातंजलप्रद दत्त ९
अर्पितसायुज्यामृत दत्त, १०
विक्षेपावृतिवर्जित दत्त, असंग अक्रिय अविकृत दत्त,
स्वाश्रयशक्त्युद्बोधक दत्त, स्वैकांशाहितविश्वक दत्त,

जीवेश्वरतास्वीकृत दत्त, व्यष्टिसमष्ट्यंतर्गत दत्त,
गुणतो रूपत्रयधरदत्त, नानाकर्मगतिप्रददत्त ११
स्वभक्तमायानाशक दत्त १२
अनसूयात्र्याल्हादक दत्त १३
मत्स्याद्यवतारात्मक दत्त १४
प्र-हादानुग्राहक दत्त, असुरसुरोरगशिक्षक दत्त१५
ज्ञानकांडसंदर्शक दत्त १६
नवविधभक्तिपरायण दत्त, स्वमंत्रजापकतारक दत्त १७
योगभ्रष्टद्विजनुत दत्त, सतीमाहात्म्यप्रमुदित दत्त,
सत्यनसूयात्र्यर्भक दत्त १८
कृतवीर्यानुग्राहक दत्त १९
जंभाख्यासुरघातक दत्त, देवेन्द्राभीष्टार्पक दत्त,
अर्जुनहृद्यवरप्रद दत्त २०
मोक्षेच्छ्वर्जुनसंस्तुत दत्त, शिल्पज्ञोद्‌गतिशंसक दत्त,
कामशास्त्रविज्ञापक दत्त, सप्तग्रहविद्रावक दत्त २१
विष्णुदत्तवरदायक दत्त २२
कर्मविपाकाख्यापक दत्त, झुटिंगपीडाहारक दत्त २३
भीतप्राज्ञाल्हादक दत्त २४
श्रवणादिविधिद्योतक दत्त २५
सयोगविज्ञानार्पक दत्त २६
विमुक्तचर्याजल्पक दत्त २७
शक्तभक्तहितयोजक दत्त २८
भार्गवरामाल्हादक दत्त २९
अर्जुनसायुज्यप्रद दत्त ३०
रेणुकाभीष्टार्थप्रद दत्त ३१
पातितभूपकदंबक दत्त ३२
ऋतध्वजानुग्राहक दत्त ३३
मदालसानुग्राहक दत्त ३४
अलर्कराज्योत्कर्षकदत्त ३५
अलर्कराज्यत्याजकदत्त ३६
योगसिद्धिसंदर्शकदत्त ३७
योगसुचर्याभाषकदत्त ३८

मृत्युलक्ष्मसंजल्पकदत्त ३९
अलर्कगीतोत्तमगुणदत्त, विहितालर्कनृपाश्रयदत्त ४०
आयूराजवरप्रददत्त ४१
नहुषाशेषारिष्टददत्त ४२
आयुःशोकद्रावकदत्त, इंदुमतीहृद्धर्षकदत्त ४३
प्रकटितनहुषसुतेजोदत्त, घातितहुंडासुरबलदत्त,
आयुर्लिप्सापूरक दत्त ४४
यदुराजानुग्राहकदत्त, बहुगुरुतत्त्वग्राहकदत्त,
श्रीयदुवंशाल्हादकदत्त ४५
मन्वंतरसत्कीर्तिगदत्त, सप्तद्वीपक्ष्माप्रियदत्त ४६
दिनकरवंशोत्कर्षकदत्त ४७
हिमकरवंशोद्धारकदत्त, पूरितभक्तमनोरथदत्त,
उपासनाकांडप्रियदत्त ४८
देहाध्रौव्योद्बोधक दत्त, शरीरदोषादर्शकदत्त,
तनुसाफल्यद्योतकदत्त, ऋचीकतपआख्यापकदत्त,
भाषितसुंदासुरमृतदत्त ४९
जल्पितवैश्योत्तमगतदत्त, अभिहितविट्सुतदुर्गतदत्त, ५०
नानाधर्मद्योतकदत्त५१
निषेधविधिसंदर्शकदत्त ५२
वैष्णवधर्मादर्शकदत्त ५३
सन्माहात्म्यद्योतकदत्त ५४
माघस्नानख्यापकदत्त ५५
भाषितराक्षसमोचनदत्त, सुकृतोत्सुकजनरोचकदत्त ५६
सोमकीर्तिनृपतारकदत्त, अधर्मसाध्वसहारकदत्त,
वर्णाश्रमवृषकारकदत्त, ब्रह्मचारिवृषबोधकदत्त ५७
गृहस्थधर्मद्योतकदत्त ५८
श्राद्धसुपद्धतिदर्शकदत्त ५९
दर्शितसत्तिथिनिर्णयदत्त ६०
कृतदुष्कर्मविनिर्णयदत्त, प्रायश्चित्तस्थापकदत्त ६१
कर्मविपाकज्ञापकदत्त ६२
सत्संसारद्योतकदत्त, वनस्थतपआदर्शकदत्त ६३
पंचप्रलयासंगतदत्त, संमतसंन्यासाश्रमदत्त ६४

१२९

श्रीदत्तस्तवस्तोत्रम्

भूतप्रेतपिशाचाद्या यस्य स्मरणमात्रतः।।
दूरादेव पलायन्ते दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।१।।
यन्नामस्मरणाद्दैन्यं पापं तापश्च नश्यति।।
भीतिग्रहार्तिदुःस्वप्नं दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।२।।
दद्गुस्फोटककुष्ठादि महामारी विषूचिका।।
नश्यन्त्यन्येऽपि रोगाश्च दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।३।।
संगजा देशकालोत्था अपि सांक्रमिका गदाः।।
शाम्यन्ति यत्स्मरणतो दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।४।।
सर्पवृश्चिकदष्टानां विषार्तानां शरीरिणाम्।।
यन्नाम शांतिदं शीघ्रं दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।५।।
त्रिविधोत्पातशमनं विविधारिष्टनाशनम्।।
यन्नाम क्रूरभीतिघ्नं दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।६।।
वैर्यादिकृतमंत्रादिप्रयोगा यस्य कीर्तनात्।।
नश्यन्ति देवबाधाश्च दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।७।।
यच्छिष्यस्मरणात्सद्यो गतनष्टादि लभ्यते।।
य ईशः सर्वतस्त्राता दत्तात्रेयं नमामि तम् ।।८।।
जयलाभयशःकामदातुर्दत्तस्य यः स्तवम्।।
भोगमोक्षप्रदस्येमं पठेद्दत्तप्रियो भवेत् ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं दत्तस्तवस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१३०

पञ्चमाष्टकस्थालर्ककृतस्तोत्रम्

वन्दे देवं हेत्वात्मानं सच्चिद्रूपं सर्वात्मानं।।
विश्वाधारं मुन्याकारं स्वेच्छाचारं वाग्हृद्दूरम् ।।१।।
विश्वोपाध्या यो ब्रह्मेशोऽविद्योपाध्यात्मानीशः।।
तत्त्वज्ञानान्मायानाशे तर्ह्येकस्त्वं नेशोऽनीशः ।।२।।
रज्ज्वज्ञानात्सर्पस्तत्र भ्रान्त्या भातीशैवं ह्यत्र।।
जीवभ्रान्तिस्त्वेषा मिथ्या सा मेऽद्यारं नष्टाऽऽप्रोक्त्या ।।३।।
धन्योऽस्म्यद्य त्वद्दृक्पूतो जातोऽस्म्यद्य ब्रह्मीभूतः।।
त्वं ब्रह्मैवासीशारूपो मायायोगान्नानारूपः ।।४।।

दत्तात्रेयः प्रज्ञामेयो वेदैर्गेयो योगिध्येयः।।
त्वं विश्वात्मा कस्त्वामीशः स्तोतुं ध्यातुं ज्ञातुं वेशः ।।५।।
वृद्धः क्वापि प्रौढः क्वापि बालः क्वापि ब्रह्मः क्वापि।।
अंगी भोगी रागी क्वापि त्यागी योगी संगी क्वापि ।।६।।
स त्वं वृद्धः सिद्धः शुद्धः श्रद्धाबद्धोप्यन्याविद्धः।।
श्रीशो मायाधीशो धीशो विज्ञानेशो निर्वाणेशः ।।७।।
धर्माधर्मातीतो गीतो वेदैर्भेदैर्हीनोनूनः।।
त्वां तं संतं भक्त्या मुक्त्या ईशं त्रीशं वन्दे वन्दे ।।८।।
इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं पञ्चमाष्टकस्थालर्ककृतस्तोत्रम्।।

१३१

चतुर्थाष्टकस्थार्जुनकृतस्तोत्रम्

मोहतमो मम नष्टं त्वद्वचनान्नहि कष्टम्।।
शिष्टमिदं मयि हृष्टं हृत्परमात्मनि तुष्टम् ।।१।।
ज्ञानरविर्हृदि भातः स्वावरणाख्यतमोऽतः।।
क्वापि गतं भवदीक्षासौ खलु काममदीक्षा ।।२।।
क्लेशरुजां हरणेन त्वच्चरणस्मरणेन।।
अस्मि कृतार्थ इहेश श्रीश परेश महेश ।।३।।
प्रेमदुघं तव पादं को न भजेदविवादम्।।
दैववशाद्धृदि पेयं दर्शितवानसि मे यम् ।।४।।
चित्रमिदं सदमेयः सोऽप्यभवद्धृदि मेयः।।
देवसुरर्षिसुगेयः सोऽद्य कथं मम हेयः ।।५।।
आश्रिततापहरं तं पातकदैन्यहरं तम्।।
नौमि शिवं भगवंतं पादमहं तव संतम् ।।६।।
यत्र जगद्भ्रम एषः कल्पित एव सशेषः।।
भ्रान्तिलयेऽद्वय एवावेदि मयाद्य स एव ।।७।।
शान्तिपदं तव पादं नौमि सुसेव्यमखेदम्।।
स्वार्थदमाद्यमनन्तं हापितकामधनं तम् ।।८।।
देवोऽभावो राद्धः सिद्धः सत्यो नित्यो बुद्धः शुद्धः।।
सर्वोऽपूर्वो हर्ताऽकर्ताऽभिन्नस्त्वं नः पाता माता।।९।।
इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं
चतुर्थाष्टकस्थार्जुनकृतस्तोत्रम्।।

१३२

.अथ वेदपादस्तुतिः.

अग्निमीळे परं देवं यज्ञस्य त्वा त्र्यधीश्वरम्।।
स्तोमोऽयमग्रियोऽर्थ्यस्ते हृदिस्पृगस्तु शंतमः ।।१।।
अयं देवाय दूराय गिरां स्वाध्याय सात्वताम्।।
स्तोमोऽस्त्वनेन विन्देयं तद्विष्णोः परमं पदम् ।।२।।
एता या लौकिकाः सन्तु हीना वाचोऽपि नः प्रियाः।।
बालस्येव पितुस्ते त्वं स नो मूळ महाँअसि ।।३।।
अयं वां नात्मनोस्तत्त्वमधिगम्यास्ति दुर्मनाः।।
हृद्रोगं मम सूर्य त्वं हरिमाणं च नाशय ।।४।।
प्रमन्महेऽस्मान्विद्धीति स्तोतारस्ते वयं नमः।।
भगवो देव ते स्तोममारे अस्मे च शृण्वते ।।५।।
इन्द्रो मदाय यातीह स्तवरं सोमिनो यथा।।
स्तोतृनेहि तथाऽस्माँस्ते माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।६।।
द्वे विरूपेऽत्र मायायास्तेऽत्र मग्नोऽस्मि पीडितः।।
माभितः संतपन्तीह सपत्नीरिव पर्शवः ।।७।।
इदं श्रेष्ठमपि प्राप्य जन्म गन्ताध एव तत्।।
कुरु प्रसादं ज्ञात्वैतत्तेनाहं भूरि चाकन ।।८।।
प्रवस्तुज्ञानाज्जहाति निष्कामश्चेन्मृतिं त्वहम्।।
न तादृशोऽतः कामादि सर्वं रक्षो निबर्हय ।।९।।
सुषुमामूर्धियः स्तोमैरागच्छैते(?) वयं विभो।।
त्वदंशास्त्वं पतिर्नोऽसि देवो देवेषु मेधिरः ।।१०।।
वसू रूपं रूपमिह प्रतिरूपोऽसि नो पृथक्।।
एतानि भूतानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः ।।११।।
तं नु त्वां किं ब्रुवेऽल्पज्ञो भगवन्तं क्षमस्व भोः।।
ओषमागहि मां त्वं चेत्सखा सन्नतिमन्यसे ।।१२।।
ता वासना घ्नन्ति यथा वृश्चिकस्यारसं विषम्।।
अतो मां पाहि भूयिष्ठां नमउक्तिं विधेम ते ।।१३।।
नि होता सीदसि विभो यस्त्वं यष्टुर्गृहे प्रिय।।
तं त्वाह्वये ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते ।।१४।।

सेमामविड्ढि प्रभृतिमीशिषे योऽव मानिशम्।।
त्वं विश्वेशां यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम् ।।१५।।
मन्दः स्वकोऽयं दीनोऽज्ञ इति विद्वान्भवान्प्रभुः।।
इन्द्र आशाभ्यः परि मां सर्वाभ्यो अभयं करत् ।।१६।।
प्र य आरुपितां भ्रान्तिं त्वत्प्रसादाज्जहाति सः।।
विमुच्यते तद्विप्रास्त्वां जागृवांसः समिन्धते ।।१७।।
इच्छन्ति देवा अपि ते प्रसादाय नृजन्म तत्।।
विद्वान्नामानि ते दत्त विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे ।।१८।।
इन्द्र त्वा भजतः सूरेर्दुर्लभं किं तरामि तत्।।
भक्त्या क्लेशादि ते नावा गम्भीराँ उदधीँरिव ।।१९।।
न ता रोद्धुं धियः शक्ता योगेनापि ततः सदा।।
त्रातारं धीमहीश त्वां धियो यो नः प्रचोदयात् ।।२०।।
वैश्वानराय दत्वाऽन्नं विधिलब्धं सदैव ते।।
भवामो भजने सक्ता अस्माकं शृणुधी हवम् ।।२१।।
एवा त्वामिन्द्र विप्रासो जागृवांसो विपन्यवः।।
स्तुवन्त्येभ्यो हि ते कोऽपि न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्।।२२।।
प्रऋभुभ्यो गृणभ्यस्ते मर्त्येभ्योऽप्यमृतत्वमित्।।
दत्तं स्मृत्वा तव मनोरथ आयातु पाजसा ।।२३।।
इदमु त्यदिषं श्रेयो यज्जग्ध्वा परितृप्यति।।
साधुस्तद्भजनं तेऽस्मे इषं स्तोतृभ्य आभर ।।२४।।
त्वामग्ने मायिनं मायां जेतारमपराजितम्।।
हित्वा कं शरणं यामः स नो बोधि श्रुधी हवम्।।२५।।
मही महेशोऽज्ञानेन भवानवतु मावृतम्।।
यथा वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।।२६।।
प्रयुञ्जति यदात्मानं मनीषा मनसा सह।।
तदैव भवतैकान्तं जानता संगमेमहि ।।२७।।
ऋतस्य गोपास्त्वं देहि मह्यं शं युञ्जते धियः।।
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये ।।२८।।
त्वं हि पाताऽसि नो दत्त परिबाधस्व दुष्कृतम्।।
कामादीन्यस्य बीजानि जहि रक्षांसि सुक्रतो ।।२९।।
पिबा सोममिति श्रुत्वा यष्टुर्हूतिं शुभं द्रवत्।।
आयासि पुरुरूप त्वमासु गोषूपपृच्यताम् ।।३०।।

इन्द्रं वोतान्यं न पृथङ् मन्ये मायाभिरिद्भवान्।।
पुरुरूप इतीक्षे त्वममित्राँ सुषहान्कृधि ।।३१।।
यज्ञा यज्ञाधीश सर्वे त्वन्मया अपि तेषु नः।।
जपयज्ञो सतस्तेन समु पूष्णा गमेमहि ।।३२।।
स्तुषे नराप्यं तुष्टः सन्नथो यस्या अयोमुखम्।।
मायां जित्वा भवान्तां मे विश्वाहा शर्म यच्छतु।।३३।।
जुषस्व सोममीशैते प्रियासः सन्तु सूरयः।।
वयं स्तोमप्रियानेन यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ।।३४।।
उग्रो जज्ञे मृत्युरयमदुग्धा इव धेनवः।।
धियो मेऽनेनेदृगीश न जातो न जनिष्यते ।।३५।।
प्रब्रह्मैहीदमाकर्ण्योर्वारुकमिव बन्धनात्।।
मृत्युंजय प्रमादाख्यान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमतात् ।।३६।।
यदद्य वर्ष्म तेनैव पश्येम शरदः शतम्।।
स्तोत्राय ते हते मृत्यौ जीवेम शरदः शतम् ।।३७।।
प्रत्युत्तमं महेश त्वां मनामह इहागहि।।
मृळा सुक्षत्र मृळय मा नो दुःशंस ईशत ।।३८।।
तिस्रो वाचस्तेऽत्र वरां क ईशानं न याचिषत्।।
भक्त्या गृणीमस्त्वां स्तोत्रैस्तेभिर्नस्तूयमागहि ।।३९।।
दूराद्विहाय सर्वं त्वामृषयो ये च तुष्टवुः ।।
मर्ता अमर्त्यस्ते तद्भूरि नाम मनामहे ।।४०।।
य इन्द्र त्वं नमसा स्वध्वरो हीति संस्तुतः।।
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरित्युप ब्रह्माणि नः शृणु ।।४१।।
वयमु त्वा वरं देवमस्म्यभ्यं शर्म सप्रथः।।
मनामहे पृणन्तं तदभित्वामिन्द्र नोनुमः ।।४२।।
प्रकृतान्यपि सूक्तानि शृण्वन्तं जातवेदसम्।।
त्वां गृणन्ति न के त्वं हि येषामिन्द्रो युवा सखा।।४३।।
त्वावतः पाहि नो मर्त्यान्यत इन्द्र भयामहे।।
आदिश्य पदभक्तिं तो ततो नो अभयं कधि ।।४४।।
आ त्वा रथं न तुरगैः स्तोत्रैस्त्वा वर्तयामसि।।
स त्वं न इन्द्र मृळय यस्य ते स्वादु सख्यमित्।।४५।।
आ प्रबोधं भवोऽबोधः स्वप्नवद्दुःखदोऽशुचिः।।
पतिताद्दुःखितान्नृन्नः पाहि त्वं शृणुधी गिरः ।।४६।।

इन्द्राय साम ते गातुं न क्षमो नाम ते गृणे।।
बण्महाँऽअसि सूर्य त्वं सत्रादेव महाँऽअसि ।।४७।।
सोमः पुनानोंतारामो मया त्वं नाधिलक्षितः।।
ईक्षे तुच्छान्बहिर्भोगान्योषा जारमिव प्रियम् ।।४८।।
प्रण इन्दोरपि स्मेरं रूपं ते दर्शयामलम्।।
नृन्स्तोतृन्पाह्यहंसो नो जहि रक्षांसि सुक्रतो ।।४९।।
हि न्वन्ति द्वैतमस्त्यम्स्माद्भयं विन्दति मामिह।।
यदन्ति दूरके यच्च पवमान वि तज्जहि ।।५०।।
धर्ता कारकशक्तीनां सर्वेषां त्वमिहैक इत्।।
यशोऽत्रेदं पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते ।।५१।।
असर्जि भवता विश्वमनित्यमवशं बृहत्।।
त्वं संस्मर ज्ञ शरण वत्सं जातं न धेनवः ।।५२।।
पुरोजितीश भो भूमन्तत्र माममृतं कधि।।
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।।५३।।
अयं स इति विद्वान्त्सन्यमाय घृतवद्धविः।।
कुतो जुहोम्यतोऽदेवा यमाय जुहुता हविः ।।५४।।
निवर्तध्वमितो देवा भद्रं नो अपि वातय।।
मनो हरे मां पाह्यार्तं पिता पुत्रमिव प्रिय ।।५५।।
प्रमा प्रमाता प्रमेयं त्रिपुटीह न विद्यते।।
रूपं तेऽविकृतं सत्वं मधुमन्मे परायणम् ।।५६।।
प्रहोतारोऽत्रैव मनोन्वाहुवामह इत्यतः।।
गमादि मनसो नास्य यो यज्ञस्य प्रसाधनः ।।५७।।
ये यज्ञेनार्चन्त्यनेन सर्वे नन्दन्ति ते त्वया।।
नान्येऽतस्त्वत्प्रिया एव विरूपासो दिवस्परि ।।५८।।
देवानां नु वशे योऽस्य सुमङ्गलीरियं वधूः।।
स्नेहेषु त्वच्च्युतो भोगी पतिर्बन्धेषु बध्यते ।।५९।।
विहितं सर्वमित्ते त्वमतो ज्यायाँश्च पूरुषः।।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।६०।।
हये जाये इति वदन्या सालावृकहृत्समा।।
तन्मयो न स वेदामुमात्मानं तव पूरुष ।।६१।।
उभा उपाधितोऽत्रैकः पाकेन मनसान्तितः।।
त्वां यदीक्षेत तं माता रेह्ळि स उ रेह्ळि मातरम्।।६२।।

तदिदात्मन्हृदि वपुः पश्यन्तस्ते मनीषया।।
मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसतेऽमलाः ।।६३।।
त्वं चिन्मयं बुधा रूपं संजानाना उपासते।।
यो अस्य पारे रजसः स नः पर्षदति द्विषः ।।६४।।
इषे त्वोर्जे चौदनेन नित्यहोमेऽपि गव्यतः।।
यजन्त्यहं त्वकामस्त्वां श्रेष्ठतमाय कर्मणे ।।६५।।
अग्न आयाहीति गातुं त्वाऽक्षमः स्तौमि केवलम्।।
निषीद मे हृदि यथा निहोता सत्सि बर्हिषि ।।६६।।
शं नो देवीः प्रसादात्ते सन्तु धीवृत्तयोऽनिशम्।।
आत्मप्रवाहाः स्वारस्याच्छंयोरभिस्रवन्तु नः ।।६७।।
ज्ञातेऽस्मिन्पाशमुक्तिः सकलविदिति तत्स्यादनिर्देश्यमेकं
सूक्ष्मं चातीन्द्रियं सत्तदयमिति गिरा शाब्दनिर्देशमेव।।
वाक्यैस्तत्त्वंविरोधेऽपि सति सुमतिभिः सोऽयमित्यादिवत्तद्
भागत्यागेन लक्ष्यं वरगुरुकृपया लभ्यमैक्यं हि तज्ज्ञैः।।६८।।?
?????श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता श्रीदत्तपुराणान्तर्गतवेदपादस्तुतिः संपूर्णा।।

१३३

मंत्रात्मकश्लोकाः

अनसूयात्रिसंभूतो दत्तात्रेयो दिगम्बरः।।
स्मर्तृगामी स्वभक्तानामुद्धर्ता भव संकटात् ।।१।।
दरिद्रविप्रगेहे यः शाकं भुक्त्वोत्तमश्रियम्।।
ददौ श्रीदत्तदेवः स दारिद्र्याच्छ्रीप्रदोऽवतु ।।२।।
दूरीकृत्य पिशाचार्तिं जीवयित्वा मृतं सुतम्।।
योऽभूदभीष्टदः पातु स नः संतानवृद्धिकृत् ।।३।।
जीवयामास भर्तारं मृतं सत्या हि मृत्युहा।।
मृत्युञ्जयः स योगीन्द्रः सौभाग्यं मे प्रयच्छतु ।।४।।
अत्रेरात्मप्रदानेन यो मुक्तो भगवानृणात्।।
दत्तात्रेयं तमीशानं नमामि ऋणमुक्तये ।।५।।
जपेच्छ्लोकमिमं देवपित्रर्षिपुंनृणापहं।।
सोऽनृणो दत्तकृपया परंब्रह्माधिगच्छति ।।६।।

अत्रिपुत्रो महातेजा दत्तात्रेयो महामुनिः ।।
तस्य स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।७।।
नमस्ते भगवन्देव दत्तात्रेय जगत्प्रभो ।।
सर्वबाधाप्रशमनं कुरु शांतिं प्रयच्छ मे ।।८।।
अनसूयासुत श्रीश जनपातकनाशन ।।
दिगंबरं नमो नित्यं तुभ्यं मे वरदो भव ।।९।।
श्रीविष्णोरवतारोऽयं दत्तात्रेयो दिगंबरः ।।
मालाकमंडलूच्छूलडमरूशङ्खचक्रधृक् ।।१०।।
नमस्ते शारदे देवि सरस्वति मतिप्रदे ।।
वस त्वं मम जिह्वाग्रे सर्वविद्याप्रदा भव ।।११।।
दत्तात्रेयं प्रपद्ये शरणमनुदिनं दीनबंधुं मुकुंदम् ।।
नैर्गुण्यं संनिविष्टं पथि परमपदं बोधयंतं मुनीनाम् ।।
भस्माभ्यंगं जटाभिः सुललितमुकुटं दिक्पटं दिव्यरूपं
सह्याद्रौ नित्यवासं प्रमुदितममलं सद्गुरुं चारुशीलम् ।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिताः मंत्रश्लोकाः ।।

१३४

श्रीनृसिंहसरस्वतीस्तोत्रम्

कोट्यर्कभं कोटिसुचन्द्रशान्तं विश्वाश्रयं देवगणार्चिताङ्घ्रिम् ।
भक्तप्रियं त्वात्रिसुतं वरेण्यं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।१।।
मायातमोऽर्कं विगुणं गुणाढ्यं श्रीवल्लभं स्वीकृतभिक्षुवेषं ।
सद्भक्तसेव्यं वरदं वरिष्ठं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।। २ ।।
कामादिषण्मत्तगजाङ्कुशं त्वामानन्दकन्दं परतत्त्वरूपं ।
सद्धर्मगुप्त्यै विधृतावतारं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।३।।
सूर्येन्दुगुं सज्जनकामधेनुं मृषोद्यपञ्चात्मकविश्वमस्मात् ।
उदेति यस्मिन्नमतेऽस्तमेति वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।४।।
रक्ताब्जपत्रायतकान्तनेत्रं सद्दण्डकुण्डीपरिहापिताघम् ।
श्रितस्मितज्योत्स्नमुखेन्दुशोभं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।५।।
नित्यं त्रयीमृग्यपदाब्जधूलिं निनादसद्बिन्दुकलास्वरूपं ।
त्रितापतप्ताश्रितकल्पवृक्षं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।६।।

दैन्याधिभीकष्टदवाग्निमीड्यं योगाष्टकज्ञानसमर्पणोत्कम् ।
कृष्णानदीपञ्चसरिद्युतिस्थं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।७।।
अनादिमध्यान्तमनन्तशक्तिमतर्क्यभावं परमात्मसंज्ञं ।
व्यतीतवाग्हृत्पथमद्वितीयं वन्दे नृसिंहेश्वर पाहि मां त्वम् ।।८।।
स्तोत्रे क्व ते मेऽस्त्युरुगाय शक्तिश् चतुर्मुखो वै विमुखोऽत्र जातः ।
स्तुवन्द्विजिह्वोऽभवदीश्वर त्वां सहस्त्रवक्त्रश्चकितोऽपि वेदः ।।९।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं नृसिंहसरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१३५
श्रीनृसिंहसरस्वतीस्तोत्रम्

प्राग्ब्रह्म त्वमजोऽक्रियोऽपि बहुलं स्यामित्यभूद्धीस्तया।
सृष्ट्वैवाण्डभुवं ततो जगदिदं सृष्टं सधर्मं गुणैः ।।
स्वैः स्वं भो रमयन्विहंसि सदरीनत्रावतीर्यानिशं ।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।१।।
कल्याकृष्टहृदुज्झितक्रतुनर-त्रस्ताध्वराशीर्मुदे।
प्रातः सूर्य इवोदितोऽस्यज महामोहान्धकारं ग्रसन् ।।
सद्धर्माश्रमसेतुमत्र शिथिलप्रायं सुदार्ढ्यं नयन्।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।२।।
सर्वानन्दनिधानरूपममलं स त्वं सुखं मूर्तिमत् ।
प्रादुष्कृत्य जनत्रयान्तरमृग-क्रीडावनं पावनम्।।
संसारावटमग्नमुद्धरसि भो स्वीकृत्य तुर्याश्रमम्।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।३।।
मूके गां दृशमन्धके सुतनयं वन्ध्यासु चासून्मृते।
सौभाग्यं विधवासु पल्लवमहो दत्तं सुशुष्केन्धने।।
एवंभूत इयान्तवैष महिमा त्रैलोक्यसंस्थाक्षमो।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।४।।
मुक्तावास मुमुक्षुकल्पविटपिन् भो कामिनां कामधुग् ।
दारिद्रानलमेघ दुष्कृतदवाग्ने तापिताराम ते ।।
श्रुत्यन्विष्टरजःपदं श्रुतविवादातीततत्त्वं महत्।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।५।।

भो योगीश्वरभावितं तव पदं तीर्थाश्रयं सज्जना-।
जीवं कामिसुदैवतं च कमलालीलास्थलं निर्मलम् ।।
विद्वद्वादकरण्डकं सुकृतसंस्थानं महत्पावनं।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।६।।
वेदागोचर ते चरित्रममलं शक्तोऽत्र कः कृत्स्नशो।
वक्तुं वह्न्यबिनेन्दुभूखपवनात्मेतीह मूर्त्यष्टकम्।।
एतद्विश्वमयं न चान्यदिह वा ॐकाररूपेशितर् -।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।७।।
कुण्डीदण्डकरं प्रशान्तममलं संन्यासिरूपं तव।
श्रीभीमामरजायुतिस्थितमज ध्येयं शरण्यं मयि ।।
ज्ञानं तारकमीश सत्यमनिशं ब्रह्मन्स्थिरीकुर्वदो।
वन्दे श्रीनृहरे सरस्वति वरं ते श्रीपदाब्जद्वयम् ।।८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीनृसिंहसरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१३६

मानसपूजा

परानन्दमयो विष्णुर्हृत्स्थोऽवेद्योऽप्यतीन्द्रियः।
सदा सम्पूज्यते भक्तैर्भगवान् भक्तिभावनः ।।१।।
अचिन्त्यस्य कुतो ध्यानं कूटस्थावाहनं कुतः।
क्वासनं विश्वसंस्थस्य पाद्यं पूतात्मनः कुतः ।।२।।
क्वानर्घोरुक्रमस्यार्घ्यं विष्णोराचमनं कुतः।
निर्मलस्य कुतः स्नानं क्व निरावरणेऽम्बरम् ।।३।।
स्वसूत्रस्य कुतः सूत्रं निर्मलस्य च लेपनम्।
निस्तृषः सुमनोभिः किं किमक्लेद्यस्य धूपतः ।।४।।
स्वप्रकाशस्य दीपैः किं किं भक्ष्याद्यैर्जगद्भृतः।
किं देयं परितृप्तस्य विराजः क्व प्रदक्षिणाः ।।५।।
किमनन्तस्य नतिभिः स्तौति को वागगोचरम्।
अन्तर्बहिःप्रपूर्णस्य कथमुद्वासनं भवेत् ।।६।।
सर्वतोऽपीत्यसंभाव्यो भाव्यते भक्तिभावनः।
सेव्यसेवकभावेन भक्तैर्लीलानृविग्रहः ।।७।।

तवेशातीन्द्रियस्यापि पारम्पर्याश्रुतां तनुम्।
प्रकल्प्याश्मादावर्चन्ति प्रार्चयेऽर्चां मनोमयीम् ॥८॥
कलसुश्लोकगीतेन भगवन्दत्त जागृहि।
भक्तवत्सल सामीप्यं कुरु मे मानसार्चने ॥९॥
श्रीदत्तं खेचरीमुद्रा-मुद्रितं योगिसद्गुरुम्।
सिद्धासनस्थं ध्यायेऽभी-वरप्रदकरं हरिम् ॥१०॥
दत्तात्रेयाह्वयाम्यत्र परिवारैः सहार्चने।
श्रद्धाभक्त्येश्वरागच्छ ध्यातधाम्नाञ्जसा विभो ॥११॥
सौवर्णं रत्नजडितं कल्पितं देवतामयम्।
रम्यं सिंहासनं दत्त तत्रोपविश यंत्रिते ॥१२॥
पाद्यं चंदनकर्पूर-सुरभि स्वादु वारि ते ।
गृहाण कल्पितं तेन दत्ताङ्घ्री क्षालयामि ते॥१३॥
गन्धाब्जतुलसीबिल्व-शमीपत्राक्षतान्वितम् ।
साम्ब्वर्घ्यं स्वर्णपात्रेण कल्पितं दत्त गृह्यताम् ॥१४॥
सुस्वाद्वाचमनीयाम्बु हैमपात्रेण कल्पितम् ।
तुभ्यमाचम्यतां दत्त मधुपर्कं गृहाण च ॥१५॥
पुष्पवासितसत्तैलमंगेष्वालिप्य दत्त भोः ।
पंचामृतैश्च गांगाद्भिः स्नानं ते कल्पयाम्यहम्॥१६॥
भक्त्या दिगंबराचान्तजलेदं दत्त कल्पितम्।
काषायपरिधानं तद् गृहाणैणेयचर्म च ॥१७॥
नानासूत्रधरैते ते ब्रह्मसूत्रे प्रकल्पिते।
गृहाण देवतमये श्रीदत्त नवतन्तुके ॥१८॥
भूतिमृत्स्नासुकस्तूरी-केशरान्वितचंदनम् ।
रत्नाक्षताः कल्पितास्त्वामलङ्कुर्वेऽथ दत्त तैः ॥१९॥
सच्छमीबिल्वतुलसी-पत्रैः सौगंधिकैः सुमैः ।
मनसा कल्पितैर्नानाविधैर्दत्तार्चयाम्यहम् ॥२०॥
लाक्षासिताभ्रश्रीवास-श्रीखण्डागरुगुग्गुलैः।
युक्तोऽग्नियोजितो धूपो हृदा स्वीकुरु दत्त तम्॥२१॥
स्वर्णपात्रे गोघृताक्त-वर्तिप्रज्वालितं हृदा ।
दीपं दत्त सकर्पूरं गृहाण स्वप्रकाशक ॥२२॥

सषड्रसं षड्विधान्नं नैवेद्यं गव्यसंयुतम्।
कल्पितं हैमपात्रे ते भुंक्ष्व दत्तांब्वदः पिब।।२३।।
प्रक्षाल्यास्यं करौ चाद्भिर्दत्ताचम्य प्रगृह्यताम्।
तांबूलं दक्षिणां हैमीं कल्पितानि फलानि च।।२४।।
नीराज्य रत्नदीपैस्त्वां प्रणम्य मनसा च ते।
परितस्त्वत्कथोद्घातैः कुर्वे दत्त प्रदक्षिणाः।।२५।।
मन्त्रवन्निहितो मूर्ध्नि दत्त ते कुसुमाञ्जलिः।
कल्प्यन्ते मनसा गीत-वाद्यनृत्योपचारकाः ।।२६।।
प्रेर्यमाणप्रेरकेण त्वया दत्तेरितेन ते।
कृतेयं मनसा पूजा श्रीमंस्तुष्टो भवानया ।।२७।।
दत्त मानसतल्पे मे सुखनिद्रां रहः कुरु।
रम्ये व्यायतभक्त्यामतूलिकाढ्ये सुवीजिते ।।२८।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता मानसपूजा संपूर्णा।।

१३७

।। श्रीदत्तात्रेयापराधक्षमापनस्तोत्रम् ।।

रसज्ञावशा तारकं स्वादु लभ्यं । गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।१।।
वियोन्यंतरे दैवदाढर्याद्विभो प्राक् ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।२।।
मया मातृगर्भस्थितिप्राप्तकष्टात् ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।३।।
मया जातमात्रेण संमोहितेन ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।४।।
मया क्रीडनासक्तचित्तेन बाल्ये ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।५।।
मया यौवनेऽज्ञानतो भोगतोषात् ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।६।।
मया स्थाविरेऽनिघ्नसर्वेंद्रियेण ।गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।७।।

हृषीकेश मे वाङ्मनःकायजातं । हरे ज्ञानतोऽज्ञानतो विश्वसाक्षिन्।।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।८।।
स्मृतो ध्यात आवाहितोऽस्यर्चितो वा। न गीतः स्तुतो वंदितो वा न जप्तः।
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं। क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ।।९।।
दयाब्धिर्भवादृङ्न सागाश्च मादृक् । भवत्याप्तमन्तोर्भवान्मे शरण्यः ।।
यथाऽऽलंबनं भूर्हि भूनिस्सृतांघ्रे-।रितिप्रार्थितं दत्तशिष्येण सारम् ।।१०।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयापराधक्षमापनस्तोत्रम्।।

१३८
दकारादिदत्तात्रेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

दत्तं वन्दे दशातीतं दयाब्धिं दहनं दमम् ।
दक्षं दरघ्नं दस्युघ्नं दर्शं दर्पहरं दवम् ।।१।।
दातारं दारुणं दांतं दास्यादं दानतोषणम्।
दानं दावप्रियं दावं दासत्रं दारवर्जितम् ।।२।।
दिक्पं दिवसपं दिक्स्थं दिव्ययोगं दिगम्बरम्।
दिव्यं दिष्टं दिनं दिश्यं दिव्याङ्गं दितिजार्चितम् ।।३।।
दीनपं दीधितिं दीप्तं दीर्घं दीपं च दीप्तगुम् ।
दीनसेव्यं दीनबन्धुं दीक्षादं दीक्षितोत्तमम् ।।४।।
दुर्ज्ञेयं दुर्ग्रहं दुर्गं दुर्गेशं दुःखभंजनम् ।
दुष्टघ्नं दुग्धपं दुःखं दुर्वासोऽग्र्यं दुरासदम् ।।५।।
दूतं दूतप्रियं दूष्यं दूष्यत्रं दूरदर्शिपम् ।
दूरं दूरतमं दूर्वाभं दूराङ्गं च दूरगम् ।।६।।
देवार्च्यं देवपं देवं देयज्ञं देवतोत्तमम् ।
देहज्ञं देहिनं देशं देशिकं देहिजीवनम् ।।७।।
दैन्यं दैन्यहरं दैवं दैन्यदं दैविकांतकम् ।
दैत्यघ्नं दैवतं दैर्घ्यं दैवज्ञं दैहिकार्तिदम् ।।८।।
दोषघ्नं दोषदं दोषं दोषित्रं दोर्द्वयान्वितम्।
दोषज्ञं दोहपं दोषेड्बन्धुं दोर्ज्ञं च दोहदम् ।।९।।

दौरात्म्यघ्नं दौर्मनस्य-हरं दौर्भाग्यमोचनम्।
दौष्ट्यत्रं दौष्कुल्यदोष-हरं दौर्हृद्यभञ्जनम् ।।१०।।
दण्डज्ञं दण्डिनं दण्डं दम्भघ्नं दम्भिशासनम्।
दन्त्यास्यं दन्तुरं दंशिघ्नं दण्ड्यज्ञं च दण्डदं ।।११।।
अनन्तानन्तनामानि सन्ति तेऽनन्तविक्रम।
वेदोऽपि चकितो यत्र नुर्वाग्हृद्दूर का कथा ।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं
दकारादिदत्तात्रेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम्।।

१३९

श्रीगुरुचरित्राध्यायसारांशश्लोकाः

अध्याये प्रथम इहेष्टवंदनाख्यं
प्रोक्तं मंगलमथ नामधारकाख्यम्।
प्राप्येष्टं स्तुत इह धाम हर्षणीयं
दत्तोऽदर्शयदु तनुः *प्रहर्षिणी*यम् ।।१।।
सिद्धः सृष्टियुगस्थितीरिह जगौ सर्गे द्वितीये विधेः।
संवादं कलिना च दीपकगुरूपाख्यानकं सद्विधेः।।
यच्चाकारि हि दीपकेन गुरुसत्सेवाख्यविक्रीडितम्।
कुर्यात्कोऽत्र तथा करोत्यपि शशः *शार्दूलविक्रीडितम्* ।।२।।
तृतीयेऽध्यायेऽम्भोनशनमिति मौनैः प्रथमतोऽ-
म्बरीषोपाद्विष्णुव्रतहतिभिया वैष्णवमतः।
व्रजानेका योनीरिति शपति दुर्वाससि हरि-
स्तमादाच्छापं यन्निजसहनताभू*च्छिखरिणी* ।।३।।
तुर्ये त्रीशाः सत्वहृत्यै यथान्नं
स्मेहंतेऽदाच्चानसूया तथान्नं।।
बाला भूत्वा दुग्धमस्याः पपुस्ते
यत्कीर्तिदि*क्शालिनी* सर्वदाऽऽस्ते ।।४।।
दत्ताय ददौ द्विजाङ्गनान्नं श्राद्धात्पुरतः स पञ्चमेऽभूत्।
श्रीपादाभिधः सुतोऽन्धपङ्गूद्धृद्भद्रविराडभूत्परिव्राट् ।।५।।

शिवो दशास्याय ददौ स्वलिङ्गं
प्रगृह्य तस्माद्गणपतस्ततस्तत्।।
*उपेन्द्रवज्रा*स्त्रमुखेरितः कौ
महाबलेशं निदधौ स षष्ठे ।।६।।
भूपेन्द्र*वंश*ोन्नतयेऽत्र सप्तमे
गोकर्णमाहात्म्यमुवाच गौतमः।।
तद्ब्रह्महत्त्यालयकृद्गतिं वदन्
चण्डालिकायाः प्रशशंस भूभते ।।७।।
सकुसुतविधवा सा मर्तुकामा प्रदोष-
व्रतकथनत ईशस्तान्निवर्त्याष्टमेऽन्तात्।।
स विबुधमकरोत्तज्जं च जन्मान्तरेऽस्याः
सुत इह भविता *दिङ्मालिनी* यस्य कीर्तिः ।।८।।
आख्यानकीर्तिश्रुतितोऽस्य मुक्तिर्भवान्तरेऽसौ रजकाय राज्यम्।।
दास्यन्तिरोभून्नवमेऽत्र कृष्णातटेऽपि संपूरयति स्वतृष्णाम् ।।९।।
पथि तस्करघातितभक्तं सार्थमजीवयदेत्य चिरस्य।।
विनिहत्य च तान्दशमे श्रीपादातिवेगवती गतिरस्य ।।१०।।
एकादशे नृहरिसंज्ञक आस सोऽम्बा-
पुत्रः प्रदोषफलदः प्रणवं पठिष्यन्।।
भूत्वाप्यवाक्श्रुतिगणानुपनीत ऊच
उद्धर्षणीं स्वजननीं बहुधा परिष्यन् ।।११।।
माणवक्राक्रीडितकृद्द्वादश आश्वास्य विभुः।।
मातरमेत्य च काशीं न्यास्यभवत्स निराशीः ।।१२।।
प्रसूमुखैर्जनिभुवि सङ्गतः स्वकै-
स्त्रयोदशेऽनुगयुगुपेत्य गौतमीम्।।
मृतोत्सुकं जठररुगार्तमुद्धर-
न्व्यदर्शयद् भुवि *रुचिरां* प्रभुर्गतिम् ।।१३।।
सायंदेवं शक्रमिताध्याय उवाच
त्रीशो म्लेच्छं याहि न भीस्ते स तथेति।।
गत्वा भीतम्लेच्छनृपेणार्चित एत्य नृत्यन्
रेजे *मत्तमयूरो* हि यथा सः ।।१४।।

*चित्रपदो*क्तित ईशस्तीर्थगमाय स शिष्यान्।।
पञ्चदशे कथयित्वा तद्विधिमीरयदेव ।।१५।।
षोडशे गुरु*रथोद्धता*त्मने धौम्यशिष्यचरितोपदेशतः।।
ब्राह्मणाय विदमर्पयद् गुरुद्रोहिणेऽलमनुतप्तचेतसे ।।१६।।
*आर्या*वमानितोऽदादार्यायै मूढविप्र इह जिह्वां।।
सप्तदशे तत्प्रेरित ईशमवाप्यालभत्ततो जिह्वाम् ।।१७।।
भिक्षार्थं गत्वा *कुसुमितलता*वेल्लितद्वारदेशं
गेहं विप्रस्य प्रभुरतिदरिद्रस्य भुक्त्वापि शाकम्।।
छित्वा वल्लीं स्ववसतिमगात्तल्लतामूलदेशे
लेभेऽर्थौघं द्विजवर इहाष्टादशे चाशिषोऽपि ।।१८।।
अमरापूर ऊनविंशकेऽनुगगङ्गानुजपा उदुम्बरे।।
वरदे स निधाय पादुके गुरुराश्वास्य च *योगिनी*रगात् ।।१९।।
प्रेतार्तिहृताऽर्भौ दत्तौ मृत एकः।
वर्ण्यापतदंबां विंशे *तनुमध्याम्* ।।२०।।
*विद्युन्माला*वत्संबंधं पुत्रादेः सन् चोक्त्वा बोधम्।।
सत्यै चक्रे जीवोपेतं सैके विंशेऽसौ तत्पोतम् ।।२१।।
गन्धर्वं प्राप्य भीमामरदुहितृयुतिं भिक्षार्थमथ गुरु-
र्गत्वा दीनद्विजौको गतरदमहिषीं वंध्यां भरवहाम्।।
दृष्ट्वा दुग्धं ययाचे तदनु *सुवदना* स्त्रीः क्षीरमदुह-
द्द्वाविंशेऽदात्पयोऽस्मै तदु वरदगुरुः पीत्वागमदसौ ।।२२।।
राट् त्रयोविंश आकर्ण्य सत्तद्यशः
स्रग्विणीं स्वां पुरीमानयत्तद्वशः।।
श्रीगुरू रक्षसेऽदाद्गतिं राजव-
द्राजदत्ते मठे विश्ववासोऽवसत् ।।२३।।
निन्दाकर्तृयतित्रिविक्रमं प्राप्य श्रीगुरुराश्वदर्शयत्।।
सैन्यं न्यासिवपुः क्षणं चतुर्विंशे यानगराजवद्विराट् ।।२४।।
मत्तावाप्तौ श्रुतिनयविज्ञौ म्लेच्छाज्ञप्तौ द्विजविजिगीषू।।
भिक्षुर्निन्ये श्रितशिबिकौ तौ गुर्वग्र्यं पञ्चसहितविंशे ।।२५।।
चित्रपदोक्तिभिरीशः षड्युतविंश उवाच।।
वेदतदङ्गविशाखा यं प्रणमन्ति हि लेखाः ।।२६।।

अपि क इह यदीक्षणाद*पराजिताः*
स बुरुडवदनाच्छ्रुतीः समवाचयत्।।
अनयदुभमिते द्विजौ च पिशाचतां
सुगतिमथ गतौ च तौ द्विषडद्बतः ।।२७।।
अकथयदसाविष्टाविंशे स्वकर्मविपाकतो
विविधकुगतिं हीनत्वाप्तिं सचिह्नपुनर्भवम्।।
तदघहृतये प्रायश्चित्तं च कृच्छ्रजपादिकं
पतितमकरोद् भूयोऽज्ञं सा मनो*हरिणी* कथा ।।२८।।
नवद्वययुते नतेन मुनिना स पृष्टोऽवदत्
विभूतिमहिमानमानतपदास्त्रपायावदत्।।
कुमारहरवादमप्यथ स वामदेवो ददौ
गतिं भसितधारणेन विधिवच्च *पृथ्वी*धरः ।।२९।।
गोपीनाथसुतोऽत्रिसुतभजनात्पुत्रमापोद्वहोर्ध्वं
तत्स्त्री रुग्णं तमनयदथो पत्तनं गाणगाख्यम्।।।
*मन्दाक्रान्ता*ध्वनि स तु पुरस्योपकण्ठं ममार
त्रिंशे तत्स्त्रीनिकटमथ गतो भूतिरुद्राक्षधृक्सन् ।।३०।।
स्त्रीधर्ममुवाच कुपूर्मितेऽध्याये धिषणोक्तमुपस्थिताम्।।
विन्ध्याद्रिचरित्रसमन्विताऽगस्त्यर्षिसतीचरितं च सन् ।।३१।।
रुक्मवतीमूचे प्रणतां तामष्टसुता सौभाग्यवती स्याः।।
प्रेतमपि द्वात्रिंश इहास्या वल्लभमाशूत्थापयदीशः ।।३२।।
भुजगशिशुभृता नीता कुलयुगिह पुराग्न्याढ्ये।।
स्वपुरमपि सती वेश्या तत इह विकपी भूपौ ।।३३।।
कृतकरपुटराजप्रार्थितर्षिः सुतमृतिहतये रुद्राभिषेकम्।।
श्रुतिपुरमितसर्गेकारयद्राट्तनयमुत मृतितोऽजीवयद्द्राक्।।३४।।
सुरहितदकचकथा वृत्ता शरपुरमित इह सोमाख्यम्।।
व्रतमपि यत इह सीमंतिन्यलभदपि च दयितं नष्टम् ।।३५।।
तर्कपूर्युजि हलमुखी स्त्री सुशिक्षणमिषत ईट्।।
आह्निकाचरणमवदच्छाक्त्यसंमतमु सुधिये ।।३६।।
*प्रमिताक्षरो*क्तिगुरुराह सुचिरसुरपूजनादिसकलाह्निकवित्।।
अशनादिधर्मशयनादिविधिः स्वरपूर्मितेऽत्र हतभक्तविधिः।।३७।।

त्रिलोकपर्याप्तकृतोदनेन संभोजिता विप्रमुखा अनेन।।
अष्टत्रियुक्ते *ह्युपजात*योऽपि भक्ताय दत्तो गुरुणा वरोऽपि।।३८।।
नवत्रिमितसर्गे व्यधात्स्थविरवंध्यां।।
कुमारललितां पिप्पलार्चनत ईशः ।।३९।।
खयुगमितेऽत्र कुष्ठविनिवृत्त्यै नरहरयेऽवदत्समिदर्चा।।
तदु विटपी द्विजश्च शुचिरासीदियमजकीर्तिरिन्नव*मालिनी* ।४०।
अवददिह परीक्ष्य सायंदेवं कुयुगमिते भगवान्गुरूक्तलब्ध्यै।।
विधिजमुपगतः सु*पुष्पिताग्र*गमवन आर्य उवाच काशीयात्राम् ।४१।
वातोर्मीतिर्द्वियुगाढ्ये स सर्गे शिष्टां यात्रां कथयन्दर्शयित्वा।।
काशीं दारादिनुतश्चानयित्वा सायंदेवं गुरुराह व्रतं सत्।।४२।।
सायंदेवाय त्रियुगपरिमितेऽध्याये
प्राहेशोऽनंतव्रतमिह च परत्रेष्टम्।।
यस्याचीर्णेन व्यपगतदुरितो याया-
त्कौण्डिण्यः पार्थश्च सुगतिमितो*संबाधाम्* ।।४३।।
क्षणतः श्रुतिवेदसंमितेऽस्मिन्ननयद्यतिराज *एकरूपः*।।
श्र्यगमात्मरतं स तंतुकं चानयदाशु निवेद्य राट्चरित्रम्।।४४।।
यद्धीरासीद्*भ्रमरविलसिता* नंद्यंबोक्त्या कुरुगुपशमधीः।।
प्राप्येशं द्राक्स शुचिकविरभूद् गुर्वीक्षातोऽक्षयुगमित इह।।४५।।
स्वप्न उपेत्य स आदद ईशो रसकृतयुक्त इहार्चनमग्र्यम्।।
केसरिदत्तमभूद्द्रुतमध्यात्मकपददस्य कविः स च शिष्यः।।४६।।
दीपावल्यां संप्रार्थितः सप्तशिष्यैः
सप्तग्रामान्तत्क्षेत्रसंस्थोऽप्यगात्सः।।
अष्टात्मा भूत्वा सप्तवेदाढ्यसर्गे
लोके यन्मूर्तिर्विश्रुता वैश्वदेवी ।।४७।।
क्षेत्रं गुरूक्तवदशेषमपक्वधान्यं
चिच्छेद शूद्र उपगां विनिवारयन्तीम्।।
*सिंहोन्नता*क्ष इव चात्मवधूं निवार्य
लेभेऽमितर्धिमिभवेदयुजीशभक्त्या ।।४८।।
सर्गेऽङ्कवाक्संमित *इन्द्रवज्रा*लेपोपमाघक्षतिकृद्भगिन्याः।।
तत्क्षेत्रमाहात्म्यमुवाच सोऽष्टतीर्थानि चादर्शयदत्र सद्भ्यः।।४९।।
खशरयुते पुरोक्तरजकोऽभवद्यवनराज आस वृषकृत्
पृथुपिटकस्तदङ्क उदितस्तदीयशमकृद्द्विजो नृपकथाम्।।

अवददथो ययौ स गुरुं स्मृतिं प्रथमजन्मनोऽलभदथो
गतरुगसौ सुयानगमजं गजाश्वललितं पुरं स्वमनयत् ।।५०।।
राजपुरादेत्य स च नीजपीठं कीर्तिरभून्मम सुशुचिरतन्वी
स्थेयमिहातः परमिह न साक्षादित्यवनीषुयुजि स च विचार्य।।
स्वानपि चाश्वास्य बहुवरदानैः पुष्पकृतासनगत इदमाह
मद्भजनाद्वः सुगतिरिह तिष्ठे सत्यमितीडरमभवददृश्यः।।५१।।
श्रवणेच्छाश्रुतानां च तदन्येषां स्मृतिर्यतः।।
सैकपञ्चाशदध्यायसारभूतार्थमालिका।।५२।।
तीर्णा आशु तरन्त्यस्मात्तरिष्यन्त्यघतो नराः।।
तीर्थं गुरुचरित्राख्यमवगाह्यमिदं बुधैः ।।५३।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता
श्रीगुरुसंहिता(समश्लोकीगुरुचरिता)ध्यायसारावतरणिका संपूर्णा।।

१४०
बालाशिषः

स्वांशेनेदं ततं येन स त्वमीशात्रिनंदन।।
मुञ्च मुञ्च विपद्भ्योऽमुं रक्ष रक्ष हरे शिशुम् ।।१।।

प्रातर्मध्यंदिने सायं निशि चाप्यव सर्वथा।।
दुर्दृग्गोधूलिभूतार्तिगृहमातृग्रहादिकान् ।।२।।

छिन्धि छिन्ध्यखिलारिष्टं कमण्डल्वरिशूलधृक्।।
त्राहि त्राहि विभो नित्यं त्वद्रक्षालंकृतं शिशुम् ।।३।।

सुप्तं स्थितं चोपविष्टं गच्छन्तं क्वापि सर्वतः।।
भो देवावश्विनावेष कुमारे वामनामयः ।।४।।
दीर्घायुरस्तु सततं सहओजोबलान्वितः

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितः श्रीदत्तपुराणान्तर्गत
बालाशिषः।।

१४१

श्रीदत्तात्रेयहृदयम्

प्र-हाद एकदारण्यं पर्यटन्मृगयामिषात्।।
भाग्याद्ददर्श सह्याद्रौ कावेर्यां निद्रिता भुवि ।।१।।
कर्माद्यैर्वर्णलिङ्गाद्यैरप्रतर्क्यं रजस्वलम्।।
नत्वा प्राहावधूतं तं निगूढामलतेजसम् ।।२।।
कथं भोगीव धत्तेऽस्वः पीनां तनुमनुद्यमः।।
उद्योगात्स्वं ततो भोगो भोगात्पीना तनुर्भवेत् ।।३।।
शयानोऽनुद्यमोऽनीहो भवानिह तथाप्यसौ।।
पीना तनुं कथं सिद्धो भवान्वदतु चेत्क्षमम् ।।४।।
विद्वान्दक्षोऽपि चतुरश्चित्रप्रियकथो भवान्।।
दृष्ट्वापीह जनांश्चित्रकर्मणो वर्तते समः ।।५।।
इत्थं श्रीभगवांस्तेन प्रह्रादेनात्रिनंदनः।।
संपृष्टः प्राह संतुष्टः कृपालुः प्रहसन्निव ।।६।।
श्रीनृसिंहोऽवतीर्णोऽत्र यदर्थं स त्वमेव हि।।
दैत्यजोऽपि मुनिच्छात्र शृणु भागवतोत्तम ।।७।।
मन्दः स्वज्ञो भ्रमंस्तृष्णानद्येमं लोकमागतः।।
कर्मयोगेन मुक्तिस्वर्मोहद्वारं यदृच्छया ।।८।।
निवृत्तोऽस्म्यत्र यततां व्यत्ययं वीक्ष्य शर्मणे।।
आत्मनोऽस्य सुखं रूपं क्लिष्टे नष्टे स्वयं प्रभम् ।।९।।
ज्ञात्वा संस्पर्शजान्भोगान्दुःखात्स्वप्स्यामि दैवभुक्।।
विस्मृत्यामुं जनः स्वार्थं सन्तं यात्युग्रसंसृतिम् ।।१०।।
स्वार्थं मायावृतं त्यक्त्वा तदर्थ्यन्यत्र धावति।।
शैवालछन्नकं त्यक्त्वा यथाम्ब्वर्थी मरीचिकाम् ।।११।।
अभाग्यस्य क्रिया मोघाः सुखप्राप्त्यै प्रयोजिताः।।
तत्साफल्येऽप्यसद्भिः किं कार्यं मर्त्यस्य कृच्छ्रजैः ।।१२।।
कामार्तेच्छोर्मोहशोकरागद्वेषश्रमादयः।।
यतोऽजितात्मनो नैति निद्रापि भयशङ्कया ।।१३।।
प्राणार्थेच्छा हि मधुकृच्छिक्षितेन मयोझ्झिता।।
राजार्थिहिंस्त्रचोरद्विट्कालेभ्यो न बिभेम्यतः ।।१४।।

निरिच्छः परितुष्टात्मा यदृच्छालाभतोऽस्मि सन्।।
बहुकालं शये नो चेद्विद्वान् धैर्यान्महाहिवत् ।।१५।।
भूर्यल्पं स्वादु वाऽस्वादु कदन्नं मानवर्जितम्।।
समानं क्वापि भुञ्जेऽह्नि निशि भुक्त्वापि वा न वा ।।१६।।
हरत्यन्यः पतिं हत्वा कृच्छ्राप्तं मधुवद्धनम्।।
शिक्षितं मधुकृत्तोऽतो विरक्तोऽस्म्यपरिग्रहः ।।१७।।
दैवाप्तं चर्म वल्कं वा वस्त्रं क्षौमं वसे न वा।।
क्वचिच्छयेऽश्मभस्मादौ कशिपौ वा जने वने ।।१८।।
क्वचित्स्नातोऽलंकृतोऽहं स्रग्वी सुवसनो न वा।।
रथेभाश्वैश्चरे क्वापि मुनिवत्क्वापि मुग्धवत् ।।१९।।
नाहं निन्दे न च स्तौमि स्वभावविषमं नरम्।।
एतेषां श्रेय आशास उतैकात्म्यमथात्मनि ।।२०।।
ब्रह्मासक्तो ब्रह्मनिष्ठो ब्रह्मात्मा ब्रह्मधीरहम्।।
संस्कृते ब्राह्मणेऽन्त्ये वा समदृग्गवि शुन्यपि ।।२१।।
समासमाभ्यां विषमसमे पूजात ओदनम्।।
नाद्यादित्यज्ञगृहिणो दोषो न समदृग्यतेः ।।२२।।
स्वरूपेऽवासनस्तिष्ठाम्यान्वीक्षिक्याऽनया दिवि।।
योऽमुमिच्छेत्तु तस्यायमुपायो विदुषः सुखः ।।२३।।
हुनेद्विकल्पं चित्तौ तां मनस्यर्थभ्रमे तु तत्।।
वैकारिके तं मायायां तां स्वस्मिन्विरमेत्ततः ।।२४।।
शुद्धः सोऽहं परात्मैक इति दार्ढ्ये विमुच्यते।।
हृदयं मे सुगुप्तं ते प्रोक्तं तत्त्वं विचारय ।।२५।।
इतीशेनोपदिष्टः स ज्ञात्वात्मानं प्रपूज्य च।।
तदाज्ञप्तो ययौ राज्यं कुर्वन्नपि स दैवभुक् ।।२६।।
राज्यश्रीपुत्रदाराढ्योऽलिप्तः स्वात्मदृक्सदा।।
भुक्त्वारब्धं चिरं राज्यं दत्वा पुत्रे विरोचने ।।२७।।
मुक्तसंगश्चचार क्ष्मां समदृक्स गुरूक्तवत्।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तपुराणान्तर्गतं श्रीदत्तात्रेयहृदयम् संपूर्णम्।।

१४२
श्रीदत्तात्रेयकवचम्

श्रीपादः पातु मे पादावूरू सिद्धासनस्थितः।।
पायाद्दिगंबरो गुह्यं नृहरिः पातु मे कटिम् ।।१।।
नाभिं पातु जगत्स्रष्टोदरं पातु दलोदरः।।
कृपालुः पातु हृदयं षड्भुजः पातु मे भुजौ ।।२।।
स्रक्कुंडीशूलडमरुशंखचक्रधरः करान्।।
पातु कंठं कंबुकंठः सुमुखः पातु मे मुखम् ।।३।।
जिह्वां मे वेदवाक्पातु नेत्रे मे पातु दिव्यदृक्।।
नासिकां पातु गंधात्मा पातु पुण्यश्रवाः श्रती ।।४।।
ललाटं पातु हंसात्मा शिरः पातु जटाधरः।।
कर्मेन्द्रियाणि पात्वीशः पातु ज्ञानेन्द्रियाण्यजः ।।५।।
सर्वान्तरोऽन्तःकरणं प्राणान्मे पातु योगिराट्।।
उपरिष्टादधस्ताच्च पृष्ठतः पार्श्वतोऽग्रजः ।।६।।
अंतर्बहिश्च मां नित्यं नानारूपधरोऽवतु।।
वर्जितं कवचेनाव्यात्स्थानं मे दिव्यदर्शनः ।।७।।
राजतः शत्रुतो हिंस्राद् दुष्प्रयोगादितोऽघतः।।
आधिव्याधिभयार्तिभ्यो दत्तात्रेयः सदावतु ।।८।।
धनधान्यगृहक्षेत्रस्त्रीपुत्रपशुकिंकरान्।।
ज्ञातींश्च पातु नित्यं मेऽनसूयानंदवर्धनः ।।९।।
बालोन्मत्तपिशाचाभो द्युनिट्संधिषु पातु मां।।
भूतभौतिकमृत्युभ्यो हरिः पातु दिगंबरः ।।१०।।
य एतद्दत्तकवचं संनह्याद्भक्तिभावितः।।
सर्वानर्थविनिर्मुक्तो ग्रहपीडाविवर्जितः ।।११।।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैर्देवैरप्यपराजितः।।
भुक्त्वात्र दिव्यभोगान्स देहान्ते तत्पदं व्रजेत् ।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयकवचं संपूर्णम्।।

१४३
भजनम्

१४४
दकारादिश्रीदत्तसहस्रनामस्तोत्रम्

यावद्द्वैतभ्रमस्तावन्न शान्तिर्न परं सुखम्।।
अतस्तदर्थं वक्ष्येऽदः सर्वात्मत्वावबोधकम्।।

ॐ दत्तात्रेयो दयापूर्णो दत्तो दत्तकधर्मकृत्।।
दत्ताभयो दत्तधैर्यो दत्तारामो दरार्दनः ।।१।।
दवो दवघ्नो दकदो दकपो दकदाधिपः।।
दकवासी दकधरो दकशायी दकप्रियः ।।२।।
दत्तात्मा दत्तसर्वस्वो दत्तभद्रो दयाघनः।।
दर्पको दर्पकरुचिर्दर्पकातिशयाकृतिः ।।३।।
दर्पकी दर्पककलाभिज्ञो दर्पकपूजितः।
दर्पकोनो दर्पकोक्षवेगहृद्दर्पकार्दनः ।।४।।
दर्पकाक्षीड् दर्पकाक्षीपूजितो दर्पकाधिभूः।
दर्पकोपरमो दर्पमाली दर्पकदर्पकः ।।५।।
दर्पहा दर्पदो दर्पत्यागी दर्पातिगो दमी।।
दर्भधृग्दर्भकृद्दर्भी दर्भस्थो दर्भपीठगः ।।६।।
दनुप्रियो दनुस्तुत्यो दनुजात्मजमोहहृत्।
दनुजघ्नो दनुजजिद्दनुजश्रीविभञ्जनः ।।७।।
दमो दमीड् दमकरो दमिवन्द्यो दमिप्रियः।
दमादियोगविद्दम्यो दम्यलीलो दमात्मकः ।।८।।
दमार्थी दमसंपन्नलभ्यो दमनपूजितः।
दमदो दमसंभाव्यो दममूलो दमीष्टदः ।।९।।
दमितो दमिताक्षश्च दमितेन्द्रियवल्लभः।
दमूना दमुनाभश्च दमदेवो दमालयः ।।१०।।
दयाकरो दयामूलो दयावश्यो दयाव्रतः।
दयावान् दयनीयेशो दयितो दयितप्रियः ।।११।।
दयनीयानसूयाभूर्दयनीयात्रिनंदनः।
दयनीयप्रियकरो दयात्मा च दयानिधिः ।।१२।।

दयार्द्रो दयिताश्वत्थो दयाश्लिष्टो दयाघनः।
दयाविष्यो दयाभीष्टो दयाप्तो दयनीयदृक् ॥१३॥
दयावृतो दयापूर्णो दयायुक्तान्तरस्थितः।
दयालुर्दयनीयेक्षो दयासिन्धुर्दयोदयः ॥१४॥
दरद्रावितवातश्च दरद्रावितभास्करः।
दरद्रावितवह्निश्च दरद्रावितवासवः ॥१५॥
दरद्रावितमृत्युश्च दरद्रावितचंद्रमाः।
दरद्रावितभूतौघो दरद्रावितदैवतः ॥१६॥
दरास्त्रधृग्दरदरो दराक्षो दरहेतुकः।
दरदूरो दरातीतो दरमूलो दरप्रियः ॥१७॥
दरवाद्यो दरदवो दरधृग्दरवल्लभः।
दक्षिणावर्तदरपो दरोदस्नानतत्परः ॥१८॥
दरप्रियो दस्त्रवन्द्यो दस्त्रेष्टो दस्त्रदैवतः।
दरकण्ठो दराभश्च दरहन्ता दरानुगः ॥१९॥
दररावद्रावितारिर्दररावार्दितासुरः।
दररावमहामंत्रो दरारार्पितभीर्दरीट् ॥२०॥
दरधृग्दरवासी च दरशायी दरासनः।
दरकृद्दरहृच्चापि दरगर्भो दरातिगः ॥२१॥
दरिद्रपो दरिद्री च दरिद्रजनशेवधिः।
दरीचरो दरीसंस्थो दरीक्रीडो दरीप्रियः ॥२२॥
दरीलभ्यो दरीदेवो दरीकेतनहृत्स्थितिः।
दरार्तिहृद्दलनकृद्दलप्रीतिर्दलोदरः ॥२३॥
दलादनर्ष्यनुग्राही दलादनसुपूजितः।
दलादगीतमहिमा दलादलहरीप्रियः ॥२४॥
दलाशनो दलचतुष्टयचक्रगतो दली।
द्वित्र्यस्त्रपद्मगतिविद्दशास्त्राब्जविभेदकः ॥२५॥
द्विषड्दलाब्जभेत्ता च द्व्यष्टास्त्राब्जविभेदकः।
द्विदलस्थो दशशतपत्रपद्मगतिप्रदः ॥२६॥
द्व्यक्षरावृत्तिकृद्द्व्यक्षो दशास्यवरदर्पहा।
दवप्रियो दवचरो दवशायी दवालयः ॥२७॥
दवीयान्दवक्त्रश्च दविष्ठायनपारकृत्।
दवमाली दवदवो दवदोषनिशातनः ॥२८॥

दवसाक्षी दवत्राणो दवारामो दवस्थगः।
दशहेतुर्दशातीतो दशाधारो दशाकृतिः ।।२९।।
दशषड्बंधसंविद्दो दशषड्बंधभेदनः।
दशाप्रदो दशाभिज्ञो दशासाक्षी दशाहरः ।।३०।।
दशायुधो दशमहाविद्याच्यो दशपञ्चदृक्।
दशलक्षणलक्ष्यात्मा दशषड्वाक्यलक्षितः ।।३१।।
दर्दुरव्रातविहितध्वनिज्ञापितवृष्टिकः।
दशपालो दशबलो दशेन्द्रियविहारकृत् ।।३२।।
दशेन्द्रियगणाध्यक्षो दशेन्द्रियदृगूर्ध्वगः।
दशैकगुणगम्यश्च दशेन्द्रियमलापहा ।।३३।।
दशेन्द्रियप्रेरकश्च दशेन्द्रियनिबोधनः।
दशैकमानमेयश्च दशैकगुणचालकः ।।३४।।
दशभूर्दर्शनाभिज्ञो दर्शनादर्शितात्मकः।
दशाश्वमेधतीर्थेष्टो दशास्यरथचालकः ।।३५।।
दशास्यगर्वहर्ता च दशास्यपुरभञ्जनः।
दशास्यकुलविध्वंसी दशास्यानुजपूजितः ।।३६।।
दर्शनप्रीतिदो दर्शयजनो दर्शनादुरः।
दर्शनीयो दशबलपक्षभिच्च दशार्तिहा ।।३७।।
दशार्तिगो दशाशापो दशग्रन्थविशारदः।
दशप्राणविहारी च दशप्राणगतिर्दृशिः ।।३८।।
दशाङ्गुलाधिकात्मा च दाशार्हो दशषट्सुभुक्।
दशप्रागाद्यङ्गुलीककरनम्रद्विडन्तकः ।।३९।।
दशब्राह्मणभेदज्ञो दशब्राह्मणभेदकृत्।
दशब्राह्मणसंपूज्यो दशनार्तिनिवारणः ।।४०।।
दोषज्ञो दोषदो दोषाधिपबंधुर्द्विषद्वरः।
दोषैकदृक्पक्षघाती दष्टसर्पार्तिशामकः ।।४१।।
दधिक्राश्च दधिक्रावगामी दध्यङ्मुनीष्टदः।
दधिप्रियो दधिस्नातो दधिपो दधिसिन्धुगः ।।४२।।
दधिभो दधिलिप्ताङ्गो दध्यक्षतविभूषणः।
दधिद्रप्सप्रियो दभ्रवेद्यविज्ञातविग्रहः ।।४३।।
दहनो दहनाधारो दहरो दहरालयः।
दहृदृग्दहराकाशो दहराछादनान्तकः ।।४४।।

दग्धभ्रमो दग्धकामो दग्धार्तिर्दग्धमत्सरः।
दग्धभेदो दग्धमदो दग्धाधिर्दग्धवासनः ।।४५।।
दग्धारिष्टो दग्धकष्टो दग्धार्तिर्दग्धदुष्क्रियः।
दग्धासुरपुरो दग्धभुवनो दग्धसत्क्रियः ।।४६।।
दक्षो दक्षाध्वरध्वंसी दक्षपो दक्षपूजितः।
दाक्षिणात्यार्चितपदो दाक्षिणात्यसुभावगः ।।४७।।
दक्षिणाशो दक्षिणेशो दक्षिणासादिताध्वरः।
दक्षिणार्पितसल्लोको दक्षवामादिवर्जितः ।।४८।।
दक्षिणोत्तरमार्गज्ञो दक्षिण्यो दक्षिणार्हकः।
द्रुमाश्रयो द्रुमावासो द्रुमशायी द्रुमप्रियः ।।४९।।
द्रुमजन्मप्रदो द्रुस्थो द्रुरूपभवशातनः।
द्रुमत्वगम्बरो द्रोणो द्रोणीस्थो द्रोणपूजितः ।।५०।।
द्रुघणी द्रुघ्रणास्त्रश्च द्रुशिष्यो द्रुधर्मधृक्।
द्रविणार्थो द्रविणदो द्रावणो द्राविडप्रियः ।।५१।।
द्रावितप्रणताघो द्राक्फलो द्राक्केन्द्रमार्गवित्।
द्राघीयआयुर्दधानो द्राघीयान्द्राक्प्रसादकृत् ।।५२।।
द्रुततोषो द्रुतगतिव्यतीतो द्रुतभोजनः।
द्रुफलाशी द्रुदलभुग्दृषद्वत्याप्लवादरः ।।५३।।
द्रुपदेड्यो द्रुतमतिर्द्रुतीकरणकोविदः।
द्रुतप्रमोदो द्रुतिधृग्द्रुतिक्रीडाविचक्षणः ।।५४।।
दृढो दृढाकृतिर्दार्ढ्यो दृढसत्त्वो दृढव्रतः।
दृढच्युतो दृढबलो दृढार्थासक्तिवारणः ।।५५।।
दृढधीर्दृढभक्तिदृग्दृढभक्तिवरप्रदः।
दृढदृग्दृढभक्तिज्ञो दृढभक्तो दृढाश्रयः ।।५६।।
दृढदण्डो दृढयमो दृढप्रदो दृढाङ्गकृत्।
दृढकायो दृढध्यानो दृढाभ्यासो दृढासनः ।।५७।।
दृग्दो दृग्दोषहरणो दृष्टिद्वंद्वविराजितः।
दृक्पूर्वो दृङ्मनोतीतो दृक्पूतगमनो दृगीट् ।।५८।।
दृगिष्टो दृष्ट्यविषमो दृष्टिहेतुर्दृष्टत्तनुः।
दृग्लभ्यो दृक्त्रययुतो दृग्बाहुल्यविराजितः ।।५९।।
द्युपतिर्द्युपदृग्द्युस्थो द्युमणिर्द्युप्रवर्तकः।
द्युदेहो द्युगमो द्युस्थो द्युभूर्द्युर्द्युलयो द्युमान् ।।६०।।

द्युनिङ्गतिद्युतिद्यूनस्थानदोषहरो द्युभुक्।
द्यूतकृद्द्यूतहृद्द्यूतदोषहृद्द्यूतदूरगः ॥६१॥
दृप्तो दृप्तार्दनो द्योस्थो द्योपालो द्योनिवासकृत्।
द्रावितारिर्द्रावितात्पमृत्युर्द्रावितकैतवः ॥६२॥
द्यावाभूमिसंधिदर्शी द्यावाभूमिधरो द्युदृक्।
द्योकृद्द्योतहृद्द्योती द्योताक्षो द्योतदीपनः ॥६३॥
द्योतमूलो द्योतितात्मा द्योतोद्यौर्द्योतिताखिलः।
द्वयवादिमतद्वेषी द्वयवादिमतान्तकः ॥६४॥
द्वयवादिविजयी दीक्षाद्वयवादिनिकृन्तनः।
द्व्यष्टवर्षवया द्व्यष्टनृपवंद्यो द्विषट्.क्रियः ॥६५॥
द्विषत्कलानिधिर्द्वीपिचर्मधृग्द्व्यष्टजातिकृत्।
द्व्यष्टोपचारदयितो द्व्यष्टस्वरतनुर्द्विभित् ॥६६॥
द्व्यक्षराख्यो द्व्यष्टकोटिस्वजपीष्टार्थपूरकः।
द्विपाद् द्व्यात्मा द्विगुर्द्वीशो द्व्यतीतो द्विप्रकाशकः॥६७॥
द्वैतीभूतात्मको द्वैधीभूतचिद्द्वैधशामकः।
द्विसप्तभुवनाधारो द्विसप्तभुवनेश्वरः ॥६८॥
द्विसप्तभुवनान्तस्थो द्विसप्तभुवनात्मकः।
द्विसप्तलोककर्ता द्विसप्तलोकाधिपो द्विपः ॥६९॥
द्विसप्तविद्याभिज्ञो द्विसप्तविद्याप्रकाशकः।
द्विसप्तविद्याविभवो द्विसप्तेन्द्रपदप्रदः ॥७०॥
द्विसप्तमनुमान्यश्च द्विसप्तमनुपूजितः।
द्विसप्तमनुदेवो द्विसप्तमन्वन्तरर्धिकृत् ॥७१॥
द्विचत्वारिंशदुद्धर्ता द्विचत्वारिकलास्तुतः।
द्विस्तनीगोरसास्पृग्द्विहायनीपालको द्विभुक् ॥७२॥
द्विसृष्टिर्द्विविधो द्वीड्यो द्विपथो द्विजधर्मकृत्।
द्विजो द्विजातिमान्यश्च द्विजदेवो द्विजातिकृत् ॥७३॥
द्विजप्रेष्ठो द्विजश्रेष्ठो द्विजराजसुभूषणः।
द्विजराजाग्रजो द्विड्द्वीड् द्विजाननसुभोजनः ॥७४॥
द्विजास्यो द्विजभक्तो द्विजातिभृद्द्विजसत्कृतः।
द्विविधो द्व्यावृतिर्द्वंद्ववारणो द्विमुखादनः ॥७५॥
द्विजपालो द्विजगुरुर्द्विजराजासनो द्विपात्।
द्विजिह्वसूत्रो द्विजिह्वफणछत्रो द्विजिह्वभत् ॥७६॥

द्वादशात्मा द्वापरदृग्द्वादशादित्यरूपकः।
द्वादशीशो द्वादशारचक्रधृग्द्वादशाक्षरः ॥७७॥
द्वादशीपारणो द्वादश्यर्च्यो द्वादशषड्बलः।
द्वासप्ततिसहस्राङ्गनाडीगतिविचक्षणः ॥७८॥
द्वंद्वदो द्वंद्वदो द्वंद्वबीभत्सो द्वंद्वतापनः।
द्वंद्वार्तिहृद्द्वंद्वसहो द्वया द्वंद्वातिगो द्विगः ॥७९॥
द्वारदो द्वारविद्द्वास्थो द्वारधृग्द्वारिकाप्रियः।
द्वारकृद्द्वारगो द्वारनिर्गमक्रममुक्तिगः ॥८०॥
द्वारभृद्द्वारनवकगतिसंसृतिदर्शकः।
द्वैमातुरो द्वैतहीनो द्वैतारण्यविनोदनः ॥८१॥
द्वैतास्पृग्द्वैतगो द्वैताद्वैतमार्गविशारदः।
दाता दातृप्रियो दावो दारुणो दारदाशनः ॥८२॥
दानदो दारुवसतिर्दास्यज्ञो दाससेवितः।
दानप्रियो दानतोषो दानज्ञो दानविग्रहः ॥८३॥
दास्यप्रियो दासपालो दास्यदो दासतोषणः।
दावोष्णहृद्दान्तसेव्योदान्तज्ञो दान्तवल्लभः ॥८४॥
दातदोषो दातकेशो दावचारी च दावपः।
दायकृद्दायभुग्दारस्वीकारविधिदर्शकः ॥८५॥
दारमान्यो दारहीनो दारमेधिसुपूजितः।
दानवान्दानवारातिर्दानवाभिजनान्तकः ॥८६॥
दामोदरो दामकरो दारस्नेहोतचेतनः।
दार्वीलेपो दारमोहो दारिकाकौतुकान्वितः ॥८७॥
दारिकादोद्धारकश्च दातदारुकसारथिः।
दाहकृद्दाहशान्तिज्ञो दाक्षायण्यधिदैवतः ॥८८॥
द्रांबीजो द्रांमनुर्दान्तशान्तोपरतवीक्षितः।
दिव्यकृद्दिव्यविद्दिव्यो दिविस्पृग्दिविजार्थदः ॥८९॥
दिक्पो दिक्पतिपो दिग्विद्दिगन्तरलुठद्यशः।
दिग्दर्शनकरो दिष्टो दिष्टात्मा दिष्टभावनः ॥९०॥
दृष्टो दृष्टान्तदो दृष्टातिगो दृष्टान्तवर्जितः।
दिष्टं दिष्टपरिच्छेदहीनो दिष्टनियामकः ॥९१॥
दिष्टास्पृष्टगतिर्दिष्टेड्दिष्टकृद्दिष्टचालकः।
दिष्टदाता दिष्टहन्ता दुर्दिष्टफलशामकः ॥९२॥

दिष्टव्याप्तजगद्दिष्टशंसको दिष्टयत्नवान्।
दितिप्रियो दितिस्तुत्यो दितिपूज्यो दितीष्टदः ।।९३।।
दितिपाखण्डदावो दिग्दिनचर्यापरायणः।
दिगम्बरो दिव्यकांतिर्दिव्यगंधोऽपि दिव्यभुक् ।।९४।।
दिव्यभावो दीदिविकृद्दोषहृद्दीप्तलोचनः।
दीर्घजीवी दीर्घदृष्टिर्दीर्घाङ्गो दीर्घबाहुकः ।।९५।।
दीर्घश्रवा दीर्घगतिर्दीर्घवक्षाश्च दीर्घपात्।
दीनसेव्यो दीनबन्धुर्दीनपो दीपितान्तरः ।।९६।।
दीनोद्धर्ता दीप्तकान्तिर्दीप्रक्षुरसमायनः।
दीव्यन् दीक्षितसंपूज्यो दीक्षादो दीक्षितोत्तमः ।।९७।।
दीक्षणीयेष्टिकृद्दीक्षादीक्षाद्वयविचक्षणः।
दीक्षाशी दीक्षितान्नाशी दीक्षाकृद्दीक्षितादरः ।।९८।।
दीक्षितार्थ्यो दीक्षिताशो दीक्षिताभीष्टपूरकः।
दीक्षापटुर्दीक्षितात्मा दीद्यद्दीक्षितगर्वहृत् ।।९९।।
दुष्कर्महा दुष्कृतज्ञो दुष्कृद्दुष्कृतिपावनः।
दुष्कृत्साक्षी दुष्कृतहृत् दुष्कृद्धा दुष्कृदार्तिदः ।।१००।।
दुष्क्रियान्तो दुष्करकृद्दुष्क्रियाघनिवारकः।
दुष्कुलत्याजको दुष्कृत्पावनो दुष्कुलान्तकः ।।१०१।।
दुष्कुलाघहरो दुष्कृद्गतिदो दुष्करक्रियः।
दुष्कलङ्कविनाशी दुष्कोपो दुष्कण्टकार्दनः ।।१०२।।
दुष्कारी दुष्करतपा दुःखदो दुःखहेतुकः।
दुःखत्रयहरो दुःखत्रयदो दुःखदुःखदः ।।१०३।।
दुःखत्रयार्तिविद् दुःखिपूजितो दुःखशामकः।
दुःखहीनो दुःखहीनभक्तो दुःखविशोधनः ।।१०४।।
दुःखकृद्दुःखदमनो दुःखितारिश्च दुःखनुत्।
दुःखातिगो दुःखलहा दुःखेटार्तिनिवारणः ।।१०५।।
दुःखेटदृष्टिदोषघ्नो दुःखगारिष्टनाशकः।
दुःखेचरदशार्तिघ्नो दुष्टखेटानुकूल्यकृत् ।।१०६।।
दुःखोदर्काच्छादको दुःखोदर्कगतिसूचकः।
दुःखोदर्कार्थसन्त्यागी दुःखोदर्कार्थदोषदृक् ।।१०७।।
दुर्गा दुर्गार्तिहृद् दुर्गी दुर्गेशो दुर्गसंस्थितः।
दुर्गमो दुर्गमगतिर्दुर्गारामश्च दुर्गभूः ।।१०८।।

दुर्गानवकसंपूज्यो दुर्गानवकसंस्तुतः।
दुर्गभिद् दुर्गतिर्दुर्गमार्गगो दुर्गमार्थदः ।।१०९।।
दुर्गतिघ्नो दुर्गतिदो दुर्ग्रहो दुर्ग्रहार्तिहृत्।
दुर्ग्रहावेशहृद् दुष्टग्रहनिग्रहकारकः ।।११०।।
दुर्ग्रहोच्चाटको दुष्टग्रहजिद् दुर्गमादरः।
दुर्दृष्टिबाधाशमनो दुर्दृष्टिभयहापकः ।।१११।।
दुर्गुणो दुर्गुणातीतो दुर्गुणातीतवल्लभः।
दुर्गन्धनाशो दुर्घातो दुर्घटो दुर्घटक्रियः ।।११२।।
दुश्चर्यो दुश्चरित्रारिर्दुश्चिकित्स्यगदान्तकः।
दुश्चित्ताल्हादको दुश्चिच्छास्ता दुश्चेष्टशिक्षकः।।११३।।
दुश्चिन्ताशमनो दुश्चिद्दुश्छन्दविनिवर्तकः।
दुर्जयो दुर्जरो दुर्जिज्जयी दुर्जेयचित्तजित् ।।११४।।
दुर्जाप्यहर्ता दुर्वार्ताशान्तिर्दुर्जातिदोषहृत्।
दुर्जनारिर्दुश्चवनो दुर्जनप्रान्तहापकः ।।११५।।
दुर्जनार्तो दुर्जनार्तिहरो दुर्जलदोषहृत्।
दुर्जीवहा दुष्टहन्ता दुष्टार्तपरिपालकः ।।११६।।
दुष्टविद्रावणो दुष्टमार्गभिद् दुष्टसंगहृत्।
दुर्जीवहत्यासंतोषो दुर्जनाननकीलनः ।।११७।।
दुर्जीववैरहृद् दुष्टोच्चाटको दुस्तरोद्धरः।
दुष्टदण्डो दुष्टखण्डो दुष्टध्रुग्दुष्टमुंडनः ।।११८।।
दुष्टभावोपशमनो दुष्टविद् दुष्टशोधनः।
दुस्तर्कहृद्दुस्तर्कारिर्दुस्तापपरिशान्तिकृत् ।।११९।।
दुर्दैवहृद्दुन्दुभिघ्नो दुन्दुभ्याघातहर्षकृत्।
दुर्धीहरो दुर्नयहृद्दुःपक्षिध्वनिदोषहृत् ।।१२०।।
दुष्प्रयोगोपशमनो दुष्प्रतिग्रहदोषहृत्।
दुर्बलाप्तो दुर्बोधात्मा दुर्बन्धच्छिद्दुरत्ययः ।।१२१।।
दुर्बाधाहृद्दुर्भयहृद्दुर्भ्रमोपशमात्मकः।
दुर्भिक्षहृद्दुर्यशोहृद् दुरुत्पातोपशामकः ।।१२२।।
दुर्मन्त्रयन्त्रतन्त्रच्छिद् दुर्मित्रपरितापनः।
दुर्योगहृद्दुराधर्षो दुराराध्यो दुरासदः ।।१२३।।
दुरत्ययस्वमायाब्धितारको दुरवग्रहः।
दुर्लभो दुर्लभतमो दुरालापाघशामकः ।।१२४।।

दुर्नामहृद् दुराचारपावनो दुरपोहनः।
दुराश्रमाघहृद्दुर्गपथलभ्यचिदात्मकः ।।१२५।।
दुरध्वपारदो दुर्भुक्पावनो दुरितार्तिहा।
दुराश्लेषाघहर्ता दुर्मैथुनैनोनिबर्हणः ।।१२६।।
दुरामयान्तो दुर्वैरहर्ता दुर्व्यसनान्तकृत्।
दुःसहो दुःशकुनहृद्दुःशीलपरिवर्तनः ।।१२७।।
दुःशोकहृद्दुःशङ्काहृद्दुःसंगभयवारणः।
दुःसहाभो दुःसहदृग्दुःस्वप्नभयनाशनः ।।१२८।।
दुःसंगदोषसञ्जातदुर्मनीषाविशोधनः।
दुःसङ्गिपापदहनो दुःक्षणाघनिवर्तनः ।।१२९।।
दुःक्षेत्रपावनो दुःक्षुद्भयहृद्दुःक्षयार्तिहृत्।
दुःक्षत्रहृच्च दुर्ज्ञेयो दुर्ज्ञानपरिशोधनः ।।१३०।।
दूतो दूतेरको दूतप्रियो दूरश्च दूरदृक्।
दूनचित्ताल्हादकश्च दूर्वाभो दूष्यपावनः ।।१३१।।
देदीप्यमाननयनो देवो देदीप्यमानभः।
देदीप्यमानरदनो देश्यो देदीप्यमानधीः ।।१३२।।
देवेष्टो देवगो देवी देवता देवतार्चितः।
देवमातृप्रियो देवपालको देववर्धकः ।।१३३।।
देवमान्यो देववन्द्यो देवलोकप्रियंवदः।
देवारिष्टहरो देवाभीष्टदो देवतात्मकः ।।१३४।।
देवभक्तप्रियो देवहोता देवकुलादृतः।
देवतन्तुर्देवसंपद्देवद्रोहिसुशिक्षकः ।।१३५।।
देवात्मको देवमयो देवपूर्वश्च देवभूः।
देवमार्गप्रदो देवशिक्षको देवगर्वहृत् ।।१३६।।
देवमार्गान्तरायघ्नो देवयज्ञादिधर्मधृक्।
देवपक्षी देवसाक्षी देवदेवेशभास्करः ।।१३७।।
देवारातिहरो देवदूतो दैवतदैवतः।
देवभीतिहरो देवगेयो देवहविर्भुजः ।।१३८।।
देवश्राव्यो देवदृश्यो देवर्णी देवभोग्यभुक्।
देवीशो देव्यभीष्टार्थो देवीड्यो देव्यभीष्टकृत् ।।१३९।।
देवीप्रियो देवकीजो देशिको देशिकार्चितः।
देशिकेड्यो देशिकात्मा देवमातृकदेशपः ।।१४०।।

देहकृद्देहधृग्देही देहगो देहभावनः।
देहपो देहदो देहचतुष्टयविहारकृत् ॥१४१॥
देहीतिप्रार्थनीयश्च देहबीजनिकृन्तनः।
देवनास्पृग्देवनकृद्देहास्पृग्देहभावनः ॥१४२॥
देवदत्तो देवदेवो देहातीतोऽपि देहभृत्।
देहदेवालयो देहासङ्गो देहरथेष्टगः ॥१४३॥
देहधर्मा देहकर्मा देहसंबन्धपालकः।
देयात्मा देयविद्देशापरिच्छिन्नश्च देशकृत् ॥१४४॥
देशपो देशवान् देशी देशज्ञो देशिकागमः।
देशभाषापरिज्ञानी देशभूर्देशपावनः ॥१४५॥
देश्यपूज्यो देवकृतोपसर्गनिवर्तकः।
दिविषद्विहितावर्षातिवृष्ट्यादीतिशामकः ॥१४६॥
दैवीगायत्रिकाजापी दैवसंपत्तिपालकः।
दैवीसंपत्तिसंपन्नमुक्तिकृद्दैवभावगः ॥१४७॥
दैवसंपत्त्यसंपन्नछायास्पृग्दैत्यभावहृत्।
दैवदो दैवफलदो दैवादित्रिक्रियेश्वरः ॥१४८॥
दैवानुमोदनो दैन्यहरो दैवज्ञदेवतः।
दैवज्ञो दैववित्पूज्यो दैविको दैन्यकारणः ॥१४९॥
दैन्याञ्जनहृतस्तंभो दोषत्रयशमप्रदः।
दोषहर्ता दैवभिषग्दोषदो दोर्द्वयान्वितः ॥१५०॥
दोषज्ञो दोहदाशंसी दोग्धा दोष्यन्तितोषितः।
दौरात्म्यदूरो दौरात्म्यहृद्दौरात्म्यार्तिशान्तिकृत् ॥१५१॥
दौरात्म्यदोषसंहर्ता दौरात्म्यपरिशोधनः।
दौर्मनस्यहरो दौत्यकृद्दौत्योपास्तशक्तिकः ॥१५२॥
दौर्भाग्यदोऽपि दौर्भाग्यहृद्दौर्भाग्यार्तिशान्तिकृत्।
दौष्ट्यत्रो दौष्कुल्यदोषहृद्दौष्कुल्याधिशामकः ॥१५३॥
दंदशूकपरिष्कारो दंदशूककृतायुधः।
दन्तिचर्मपरिधानो दन्तुरो दन्तुरारिहृत् ॥१५४॥
दन्तुरघ्नो दण्डधारी दण्डनीतिप्रकाशकः।
दांपत्यार्थप्रदो दंपत्यर्च्यो दंपत्यभीष्टदः ॥१५५॥
दंपतिद्वेषशमनो दंपतिप्रीतिवर्धनः।
दन्तोलूखलको दंष्ट्री दन्त्यास्यो दन्तिपूर्वगः ॥१५६॥

दंभोलिभृद्दंभहर्ता दंङ्व्यविद्दंशवारणः।
दन्द्रम्यमाणशरणो दन्त्यश्वरथपत्तिदः ॥१५७॥
दन्द्रम्यमाणलोकार्तिकरो दण्डत्रयाश्रितः।
दण्डपाण्यर्चपद्दण्डिवासुदेवस्तुतोऽवतु ॥१५८॥
इति श्रीमद्दकारादिदत्तनामसहस्रकं।
पठतां शृण्वतां वापि परानन्दपदप्रदम् ॥१५९॥

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचित दकारादिदत्तसहस्रनामस्तोत्रम्॥